

काशी मुक्ति निर्णय
और
काशी का इतिहास



श्री काशी विश्वनाथ जी
जय विश्वेशविश्वात्मन् काशीनाथ जगद्गुरो

लेखक :

अनन्त श्री विभूषित धर्मसम्राट् ब्रह्मनिष्ठ दण्डी स्वामी
हरिहरानन्द सरस्वती (श्री करपात्री) जी महाराज के
कृपापात्र शिष्य ब्रह्मनिष्ठ काशीस्थ सन्त दण्डी स्वामी
शिवानन्द सरस्वती

करपात्री मठ, धर्मसंघ
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी - काशी

काशी मुक्ति निर्णय

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज की रचनाएँ
(काशी के तीर्थ मठ और मन्दिरों के अध्यक्ष)

१. काशी की महिमा
२. काशी लघु माहात्म्य
३. काशी मोक्ष निर्णय .
४. काश्यां मरणान्मुक्ति
५. काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा
६. पञ्चक्रोशी यात्रा माहात्म्य
७. वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा
८. काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा का नक्शा
९. काशी माहात्म्य
१०. काशी गौरव, काशी की प्रचलित संपूर्ण यात्रा
११. काशी की वार्षिक यात्रा, प्रत्येक तिथि के दिन और प्रतिदिन की मन्दिर में दर्शन यात्रा
१२. काशी में रविवार से सोमवार तक के वार दर्शन यात्रा
१३. काशी दर्शन
१४. काशी के सिद्ध सन्तों का चमत्कार
१५. काशी का इतिहास
१६. काशी मुक्ति निर्णय

पुस्तक प्राप्ति का स्थान—

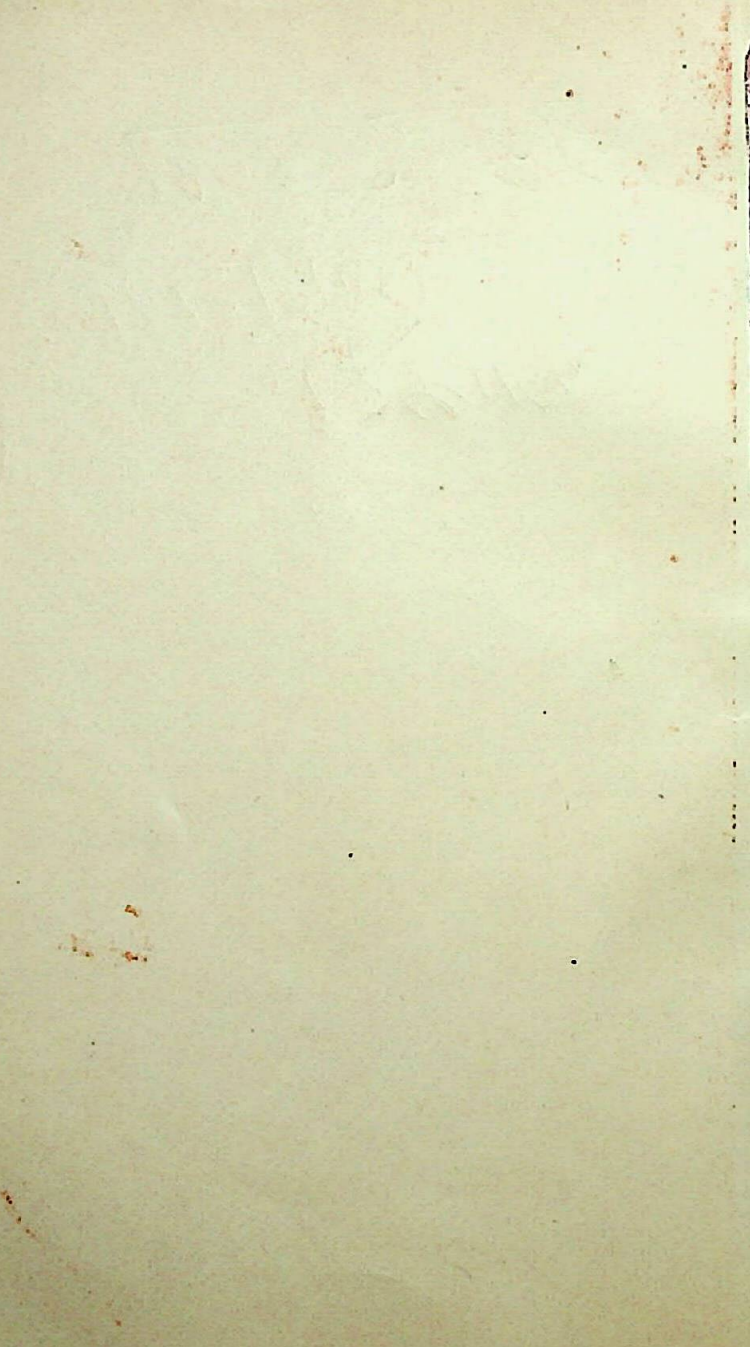
धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड, काशी

और

करपात्री धाम, केदारघाट, काशी

सभी पुस्तकों को अलग-अलग विषय पर लिखा गया है । काशी की पूर्ण जानकारी सभी पुस्तकों के पढ़ने के बाद ही हो सकेगा ।

मुमुक्षु भवन
 के फल का हाथ में
 आमा करें।



॥ ॐ ॥

काशी-मुक्ति-निर्णय

और

काशी का इतिहास



सङ्कलनकर्ता एवं लेखक

अनन्तश्रीविभूषित - धर्मसम्राट् - ब्रह्मलीन - स्वामी

हरिहरानन्द सरस्वती (करपात्री) जी

महाराज के कृपापात्र शिष्य ब्रह्मनिष्ठ

काशीस्थ सन्त स्वामी

शिवानन्द सरस्वती

प्रकाशक :

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

करपात्री मठ, धर्मसंघ, दुर्गाकुण्ड

वाराणसी (काशी)

द्वितीय संस्करण, दो हजार प्रति

सर्वाधिकार सुरक्षित लेखकाधीन

गुरुपूर्णिमा, २०५५ विक्रमानन्द ९ जुलाई, १९९८ ई०

मुद्रक :

हिमालय प्रेस

एस० ८/१९५ सुधाकर रोड, खजुरी,

वाराणसी

मूल्य—श्रद्धा, भक्ति और विश्वास से युक्त होकर वर्णाश्रम एवं स्वधर्म का पालन करते हुए, शिवपूजा, पाठ, निष्काम सेवा तथा यथाशक्ति दान करते हुए काशी की दर्शन-यात्रा और जन्म-मृत्यु रूप आवागमन बन्धन से छूटने का प्रयत्न करना ।

सभी मनुष्यों को पाप कर्म से बचकर सत्कर्म करते हुए अपनी जाति, धर्म और सम्प्रदाय के अनुसार पूजा-पाठ करते हुए, परिवार में अनासक्त होकर, अपना कर्त्तव्य समझकर, सबकी निष्काम सेवा करते हुए; भगवान् का निरन्तर स्मरण करना चाहिए। भगवान् का निरन्तर स्मरण करने से इहलोक और परलोक में सुख-सम्पत्ति एवं शान्ति प्राप्त होती है। अन्त में, पृथ्वी पर जहाँ कहीं भी मृत्यु हो, वहीं मुक्ति मिलेगी।

स्वधर्म का पालन करते हुए, वर्णाश्रम धर्म को मानते हुए, अपने-अपने इष्टदेव का निरन्तर स्मरण करते हुए, यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, औषधि, दूध एवं फल का प्रतिदिन दान करते हुए, वृद्ध, रोगी एवं दीन-दुःखियों पर दया करते हुए, माता, पिता एवं गुरुजी की निष्काम सेवा करें।

साधु, महात्मा, संन्यासी एवं ब्राह्मण के प्रति श्रद्धा का भाव रखते हुए अतिथियों की सेवा एवं सत्कार करे, भगवान् किस वेष में मेरे घर पधार रहे हैं ऐसी भावना करके निष्काम सेवा करें। अपने-अपने जाति, कुल और धर्म को मानते हुए चलेंगे तो एक दिन भगवान् अवश्य कल्याण करेंगे, सच्ची भावना हृदय में धारण कर सब कार्य करें। लाभ, हानि, सुख, दुःख और मान, अपमान में समभाव रखते हुए अहर्निश प्रसन्न रहें।

हे प्यारे आत्मा, सभी मनुष्य मुठी बाँधकर जन्म लेते हैं और हाँथ फैलाकर इस नश्वर संसार से चले जाते हैं। चल, अचल धन-सम्पत्ति भाई-बन्धु, इष्ट-मित्र, पुत्र और परिवार सब यहीं मिले हैं और यहीं

झोड़कर जाता है। तुम क्यों स्त्री, पुत्र और परिवार में आसक्त होकर दूसरों के धन, सामान, मकान, जमीन, घूस, फीस येन केन प्रकार से ले रहे हो। तुम्हारे स्त्री, पुत्र उन पापों को भोगने के लिए तैयार हैं। यह मृत्युलोक है और कर्म भूमि है। जो जैसा कर्म करता है, उसको उसके कर्म के अनुसार भगवान् फल देते हैं।

नोट—जैसे किसान अच्छा खेत बनाकर गेहूँ बोता है और उस गेहूँ के एक-एक दाने से हजारों दाना होकर पैदा होता है। उसी प्रकार से यह नाशवान क्षणभंगुर शरीर पाकर अच्छा कर्म करो। इस मृत्युलोक में धन, सुख शांति एवं संपत्ति प्राप्त हो और इस जगत् में सम्मान प्रतिष्ठा तथा सर्वत्र स्वागत हो। मृत्युलोक में आकर ऐसा कर्म करो कि जिससे जगत् प्रलय काल तक तुम्हारी याद में रोता रहे।



सूचना

भगवान् के भक्तों को सूचित किया जाता है कि स्वामी जी द्वारा लिखित एवं प्रकाशित पुस्तकें काशी दर्शन, काशी गौरव काशी माहात्म्य, काशी की महिमा; काशी मोक्ष निर्णय आदि पुस्तकें, जिन्हें वे प्रतिदिन दान करते हैं और देश-विदेश के पुस्तकालयों में भी भेजते हैं, प्रायः समाप्त हो गयीं हैं। काशी मुक्ति निर्णय और काशी का इतिहास नामक इस पुस्तक की २१०० सौ प्रतियाँ छप रही है। जिसमें से ११०० प्रतियों की जिल्द बाँधी गयी है।

प्रस्तावना

धर्मार्थकाममोक्षाख्यं

पुरुषार्थचतुष्टयम् ।

अखण्डं हि यथा काश्यां तथान्यत्र तु दुर्लभम् ॥

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष—ये मानव जीवन के लिए हिततम हैं । इसीलिए इन्हें पुरुषार्थ कहा जाता है । इस पुरुषार्थ रूप वृक्ष का बीज है धर्म और फल है मोक्ष । अर्थ और काम उस वृक्ष का भौतिक विस्तार है । वस्तुतः मोक्ष रूप साध्य फल के ये शेष तीनों साधन हैं । मोक्ष परमप्राप्य है, इसीलिए उसे 'परम पुरुषार्थ' भी कहते हैं ।

दुःख से सभी उद्विग्न होते हैं और सुख सबको काम्य होता है किन्तु संसारी जीव अम वश बन्धनहेतुओं को ही सुख समझता हुआ, मोह वश संसार चक्र में भ्रमण करता रहता है । सच्चे सुख-मोक्ष के प्रति उदासीन रहता है अथवा मोक्ष के उपायों को दुष्कर मानकर घबड़ाता है । हमारी आर्षमनीषा ने संसार के समस्त सुखों की छान-बीन करके एकमत से कहा है कि सबसे सुखमय और अभीष्ट अखण्ड आनन्दमय पुरुषार्थ 'मोक्ष' ही है । इसी तत्त्वार्थ का अनुवाद विष्णु पुराण में इस प्रकार किया गया है—

‘इति संसार-दुःखार्क-ताप-तापितचेतसाम् ।

विमुक्तिपादपच्छायामृते कुत्र सुखं नृणाम् ॥’

(वि० पु० ६-५-५७)

अर्थात्, सांसारिक दुःखरूपी प्रचण्ड सूर्य के ताप से जिनका अन्तःकरण सन्तप्त हो रहा है, उन पुरुषों को मोक्षरूपी कल्पवृक्ष की शीतल छाया को छोड़कर अन्यत्र कहाँ सुख मिल सकता है ? अतएव, मोक्षरूप यह परमपुरुषार्थ सुखों का सम्राट् है ।

मोक्ष का अर्थ है—दुःखत्रय की ऐकान्तिक और आत्यन्तिक निवृत्ति—‘मुच्यते सर्वेदुःखबन्धनैर्यत्र स मोक्षः ।’ जीव का संसरण—इस संसार में आना और यहाँ से जाना—यह सबसे बड़ा दुःख है । संसार में आवागमनरूप दुःसह बन्धन से छुटकारा पाना ही मोक्ष है । इसीलिए मोक्ष की मुक्ति भी कहते हैं । देह और इन्द्रियों के बन्धन से मुक्त होकर परमपद की प्राप्ति ही मुक्ति है ।

मनुष्य संसार में जिन्हें सुख समझ कर उनका सेवन करता है, वस्तुतः वे प्रच्छन्न दुःखबीज हैं और परिणामतः वे मनुष्य को नाना प्रकार के कष्ट देते हैं—

‘यद्-यत्प्रीतिकरं पुंसां वस्तु मैत्रेय जायते ।

तदेव दुःखवृक्षस्य बीजत्वमुपगच्छति ॥’

यही कारण है कि इस वास्तविकता को जानने वाले तत्त्वविवेकी पुरुष अन्ततः मोक्ष की ही कामना करते हैं, क्योंकि दुःखनिवृत्तिरूप मोक्ष सुख ही नित्यसुख है । इसलिए उसी को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए—

‘तस्मात् तत्प्राप्तये यत्नः कर्तव्यः पण्डितैर्नरैः ।’

श्रीमद्भागवत में भी यही उपदिष्ट है—

‘तस्यैव हेतोः प्रयतेत कोविदः ।’

(१३५-१८)

इस परम अभीष्ट सुखरूप मोक्ष अथवा मुक्ति की प्राप्ति का उपाय क्या है ? मुमुक्षुजनों की यह जिज्ञासा स्वाभाविक ही है । आचार्यों ने इस परमपद की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने का उपदेश करने के साथ ही इसके उपाय भी बताये हैं । तत्तत् शास्त्रसम्प्रदाय अपने-अपने सिद्धान्त के अनुसार मोक्ष के विभिन्न उपायों का निरूपण करते हैं । जैसे इस भौतिक जगत् में किसी स्थान तक पहुँचने के लिए अनेक कार्य होते हैं और उस स्थान को जाने की इच्छा वाला प्राणी अपनी रुचि और सामर्थ्य के अनुसार मार्ग का चयन करता है; वैसे ही मोक्ष प्राप्ति के भी अनेक उपाय बताये गए हैं । मुमुक्षुजन अपनी रुचि और विवेक के अनुसार स्वोचित मार्ग (उपाय) का आश्रयण करते हैं ।

साधान रूप पुरुषार्थत्रय की साधना करने से अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है । श्रुति कहती है—‘ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः’ अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं । गीता में इसी तत्त्वार्थ का अनुवाद किया गया है—‘ज्ञानाग्निः सर्वकर्मणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन ।’ ज्ञान का स्वरूप क्या हो ?—इस विषय में आचार्यों में मतभेद है । ज्ञान के अतिरिक्त शास्त्रविहित कर्म को भी मोक्ष का साधन माना गया है—‘तत्प्राप्तिहेतुर्ज्ञानं च कर्म चोक्तं महामुने’ (वि० पु० ६-५-६०) । कर्म के भी विविधरूप हैं । कर्म के अन्तर्गत

भगवद्भक्ति के अतिरिक्त तीर्थादि सेवन को भी मुक्ति का प्रत्यक्ष मार्ग कहा गया है ।

काशी तीर्थों में पुण्यतम तीर्थ मानी गयी है । गङ्गा, विश्वनाथ और अन्नपूर्णा के नित्य संयोग से काशी की महिमा सर्वाधिक है । तीर्थ तो अनन्त हैं और सबके अपने-अपने वैशिष्ट्य हैं किन्तु काशी तो मुक्ति का पर्याय ही है—

‘अन्यानिमुक्तिक्षेत्राणि काशीप्रोतिकराणि च ।

काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः ॥’

यह सिद्धवाक्य विश्रुत है—‘काश्यां मरणान्मुक्तिः’ अर्थात् काशी में देहत्याग करने मात्र से ही जीव मुक्त हो जाता है । काशी शब्द की व्युत्पत्ति भी इस अर्थ का समर्थन करती है—‘काशन्ते तनुत्याग-मात्रेणानन्दरूपतया राजन्ते प्राणिनो यस्यां सा काशी ।’ जैसे स्वाती नक्षत्र में बादलों से गिरी हुई बूँदें सीपी के अन्दर जाकर ‘मुक्ता’ बन जाती हैं, वैसे ही काशी में पहुँच कर शरीर त्याग करने वाला जीव मुक्त हो जाता है—

यथा शुक्तौ पयोवाहात्पतिता जलबिन्दवः ।

मुक्ताः स्युस्तथा काश्यां स्थिताः सर्वेऽपि जन्तवः ॥’

जैसे स्वर्ण अग्नि में पड़ने मात्र से अपने समस्त मलों से मुक्त हो विशुद्धस्वरूप से प्रकाशित होता है वैसे ही काशी में स्थिति मात्र से जीव समस्त पापमयदुःखों के मल से निर्मुक्त हो विशुद्ध सच्चिदानन्द रूप से प्रकाशित होता है । अतः समस्त मुमुक्षु-जनों को निर्मलान्तःकरण से काशी सेवन कर मुक्ति-साधना करनी चाहिए ।

तपोनिष्ठ ब्रह्मावादी परमसन्त स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी ने दुःखसन्तप्त जीवों के प्रति करुणार्द्रचित्त हो, उनके परम कल्याण के लिए काशीमाहात्म्यख्यापन का व्रत लिया है। काशी के मोक्ष-स्वरूप तत्त्वार्थ का निरूपण करने के लिए उन्होंने इस मोक्षदायिनी पुरी के सम्बन्ध में जिन अनेक ग्रन्थों की रचना की है, उनमें से एक यह प्रस्तुत ग्रन्थ 'काशीमुक्तिनिर्णय' भी है। यह ग्रन्थ भी स्वामी जी द्वारा विरचित अन्य ग्रन्थों की भाँति काशी के प्रति आस्था प्रतिष्ठित करने में अतीव उपयोगी है। इस ग्रन्थ में काशी सेवन से मुक्ति, काशी का माहात्म्य वर्णन करने साथ ही काशी का पारम्परिक इतिहास भी निबद्ध किया गया है। अतः इस ग्रन्थ की उपयोगिता स्वतःसिद्ध है। शास्त्रीय-पौराणिक प्रमाणों के साथ सरलभाषा में लिखा गया है यह ग्रन्थरत्न निश्चय ही अमूल्य और सङ्ग्रह के योग्य है। श्रद्धापूर्वक इसके अध्ययन मनन से मनुष्य मात्र का परमकल्याण होगा—इसमें संशय नहीं।

अपनी महत्त्वपूर्ण कृतियों से काशी के प्रति अनन्य निष्ठा रखने वाले स्वामी शिवानन्द सरस्वती के श्रीचरणों में श्रद्धावनत—

—प्रभुनाथ द्विवेदी

रथयात्रा,

उपाचार्य, संस्कृत-विभाग

दि० २६ जून, १९९८ ई०। म० गा० काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

अथ

मङ्गलाचरणम्

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।

तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

नारायणं पद्मभवं वशिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्र-पराशरं च ।

व्यासं शुकं गौडपादं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ।

श्रीशंकराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम् ।

तं त्रोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरुन्सन्ततमानतोऽस्मि ॥

श्रुति-स्मृति-पुराणानामालयं करुणालयम् ।

नमामि भगवत्पादं शङ्करं लोक-शङ्करम् ॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम् ।

सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥

कैलाशादधिका काशी सर्वदेवप्रकाशिका ।

कैलाशे शङ्करोऽप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शङ्कराः ॥

विनाऽतिपुण्यसम्भारैः कः काशीम्प्राप्तुमर्हति ।

काशीप्राप्तिरयं योगः काशीप्राप्तिरिदं तपः ।

काशीप्राप्तिरिदं दानं काशीप्राप्तिः शिवैकता ॥

विना काशीं न मे स्थानं विना काशीं न मे रतिः ।

विना काशीं न निर्वाणं सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥

काशीक्षेत्रे निवासश्च जाह्नवीचरणोदकम् ।

गुरुविश्वेश्वरः साक्षात् तारकं ब्रह्म निश्चयः ॥

श्रीशंकराचार्यनवावतारं, विद्वद्वरेण्यं च यतीन्द्रमुख्यम् ।

कलौ युगे धर्मयुगप्रवर्तकं, वन्दे सदा श्रीकरपात्रिणं गुरुम् ॥

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीशिवानन्दपञ्चकम्

उपाध्यायस्यासौ कुल इह च श्रीशंकरगृहे,
ह्ययोध्यायां जातः स्मृतिश्रुतिमताचार निरतः ।
सुशिष्यः ज्ञानाब्धेर्हरिहरगुरोर्लोकसुखदः
शिवानन्दस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ १ ॥
परित्यक्त्वा प्राप्यं विपुलकुलदायं तु तुणवत्,
तपस्तेपे तीव्रं निजजनकगेहेऽत्यवयसि ।
यदा काश्यां प्राप्तः गुरुमतुलनीयं ह्यलभत,
शिवानन्दस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ २ ॥
तपःकाले जातेर्गुरुतरचमत्कारनिवहैः,
प्रियोऽभूद्वो लोके ह्यरहयटमिलानि च जगुः ।
विनष्टा द्वेष्टारोऽचिरमिह तु यस्याथ स यती,
शिवानन्दस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ३ ॥
शिवः काशी काशी शिव इति च मत्वा गुरुरहो,
ददौ यस्मै दीक्षाममृतसदृशीं क्षेत्रपरमाम् ।
ततो यः स्वप्नेऽपि त्यजति न हि काशीं सदयती,
शिवानन्दस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ४ ॥
प्रकाशो यः काश्याः, शिवनिभ नियोग्येन निशितः,
सुशान्तो वेदान्तः शुभदशिवसंगं ह्यनुभवत् ।
सुकाशीसाहित्यं विशदमनिशं काशयति यः,
शिवानन्दस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ५ ॥

दामोदरदत्त मिश्रः 'प्रसून'

समर्पण

हे काशी विश्वनाथ जी ! आप तीनों लोकों के स्वामी हैं, मैं आपको कुछ समर्पित करना चाहता हूँ। किन्तु क्या समर्पित करूँ ! आप तो तीनों लोकों के प्राणियों को मुक्ति देते हैं। जब तक प्राणी इस संसार में जीवित रहता है, तब तक इस संसार के सभी भोग्य पदार्थों को देकर सुख और शान्ति प्रदान करते हैं और अन्त में मुक्ति की भिक्षा भी देते हैं।

हे काशी विश्वनाथ जी ! मैं संन्यासी हूँ। मेरे पास केवल मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार है। इसे मैं आपके श्रीपादपद्मों में समर्पित करता हूँ।

हे काशी विश्वनाथ जी ! आप अनाथों के नाथ हैं। मैं भारतीय, सनातन-वैदिक धर्म और काशी की प्राचीन संस्कृति के प्रचार-प्रसारार्थ, संसार के प्राणियों के कल्याणार्थ और काशी-वासियों को सुख, संपत्ति, शान्ति तथा भुक्ति-मुक्ति सबको दिलाने के लिए यह 'काशी-मुक्ति-निर्णय' नामक पुस्तक आप के श्रीचरणों में समर्पित करता हूँ।

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

विषयानुक्रमणिका

विषय

पृष्ठ.

१. प्रस्तावना	
२. मंगलाचरण	
३. श्रीशिवानन्द पंचकम्	
४. समर्पण	
५. काशी-मुक्ति-निर्णय	१
६. गंगा में अस्थि विसर्जन माहात्म्य	१२
७. काशी से बाहर जाने का विधान	१२
८. जीर्णोद्धार माहात्म्य	१५
९. काशीवास करने वाले भक्तों की महिमा	२५
१०. काशी की सीमा	२५
११. भागीरथी गंगा का माहात्म्य	२८
१२. टूटी हुई मूर्तियों का निर्माण	३६
१३. सामाजिक सम्मेलन	३६
१४. काशी की महिमा	३७
१५. शिव पूजा का फल	३८
१६. दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती महाराज जी का संक्षिप्त जीवन परिचय	३९
१७. जीवन परिचय, गुरुकृपा और शक्तिपात	५४
१८. वाराणसी प्रदक्षिण यात्रा	५५
१९. काशी में दस महाविद्याओं की दर्शन यात्रा	५६
२०. काशी में १२ ज्योतिर्लिङ्ग दर्शन यात्रा	५६
२१. काशी में नवगौरी, नव दुर्गा यात्रा	५७
२२. काशी में अविमुक्ति प्रदक्षिणा यात्रा	५८
२३. दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी की निष्काम सेवा	५९
२४. सूर्य दर्शन पूजत्तु यात्रा	५९
२५. अष्ट भैरव यात्रा	६०

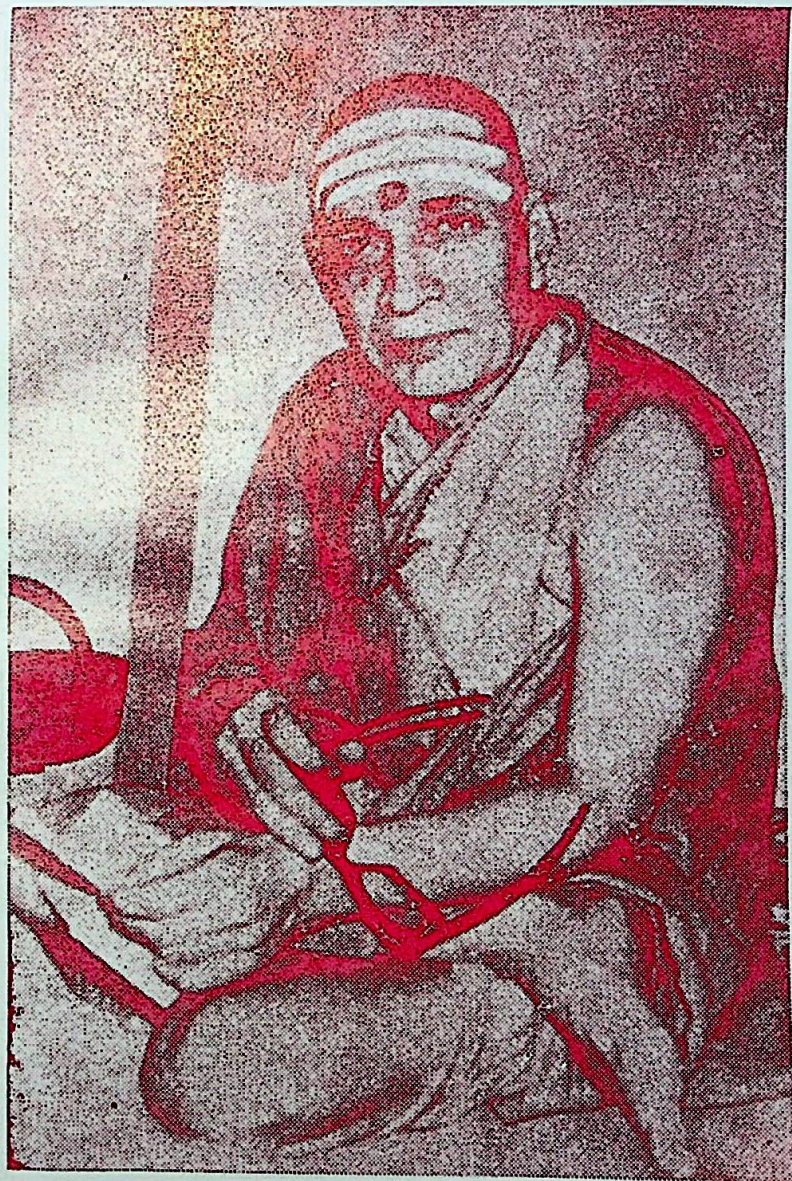
२६. काशी में ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा	६५
२७. काशीविश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा	६५
२८. काशी में प्रतिवर्ष होनेवाली प्राचीन रामलीला का इतिहास	६६
२९. काशी में भरत मिलाप का प्राचीन इतिहास	६६
३०. दुर्गा जी का प्राचीन इतिहास	७०
३१. दुर्गा जी और हनुमान जी का प्राचीन इतिहास	७०
३२. काशी के केदारेश्वर जी का प्राचीन इतिहास	७०
३३. काशी के केदारेश्वर जी का दूसरा इतिहास	७०
३४. गंगाजल का माहात्म्य	७०
३५. भागीरथी जी की महिमा का वर्णन वेदव्यास जी स्वयं स्कन्द पुराण में करते हैं	७०
३६. काशी में गंगा जी का इतिहास	७०
३७. काशी में वाहन	७०
३८. काशी में प्रसिद्ध लोलार्क कुण्ड का इतिहास	९०
३९. काशी में द्वादश सूर्य-दर्शन यात्रा	९०
४०. काशी में गर्ग संहिता के विमोचन का प्रमाण और प्राचीन इतिहास	९०
४१. महाशिवरात्रि पर्व	११०
४२. शिव-नैवेद्य-महिमा	१११
४३. सनातन धर्म	१११
४४. काशी का इतिहास	१११
४५. काशी के तीर्थों में स्नान करने का प्रत्यक्ष फल	१२१
४६. काशी में प्रथम स्नान, दर्शन, यात्रा प्रथम दिन मणिकार्णिका घाट में स्नान	१२१
४७. काशी की ऐतिहासिक और धार्मिक यात्राओं का वर्णन	१३०
४८. काशी की यात्रा के अनुभव और प्रत्यक्ष फल	१३१
४९. काशी की धार्मिक यात्राओं का वर्णन	१३१

काशी-मुक्ति-निर्णय
और
काशी का इतिहास

आधुनिक-विज्ञान-सिद्धांत

प्रति

आधुनिक-विज्ञान-सिद्धांत



अनन्त विभूषित धर्म सम्राट
स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती (करपात्री जो महाराज)



॥ श्रीः ॥

काशी-मुक्ति-निर्णय

सम्प्राप्य तारकं ज्ञानं न स भूयोऽभिजायते ॥११७॥

यो मामिह समभ्यर्च्य म्रियतेऽन्यत्र कुत्रचित् ।

जन्मान्तरेऽपि मां प्राप्य स विमुक्तो भविष्यति ॥११८॥

(का० खं० अ० ६४)

अर्थ--श्री विश्वनाथ जी बोले--काशी में जो जीव तारक मन्त्र का उपदेश पा गया है, वह पुनः जन्म नहीं लेता है । जो भक्त इस काशी में मेरी सविधि पूजा करता रहा हो, यदि मृत्युकाल में वह कहीं अन्यत्र जाकर शरीर त्याग कर दे तो ऐसा भी मनुष्य दूसरे जन्म में मुझे पुनः प्राप्त कर मुक्त हो जाता है ।

भवन्तोऽपि महाप्राज्ञाः काशीमाहात्म्यवेदिनः ।

अयन्तु काशीन्नियतां सर्वपापापनुत्तये ॥

(का० रहस्य अ० १२)

अर्थ--आप सब काशी का माहात्म्य जानते हैं, अतः निश्चित रूप से काशीवास करें; क्योंकि काशी में सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं ।

महापापौघशमनीं

पुण्योपचयकारिणीम् ।

भुक्ति-मुक्ति-प्रदात्रीं च को न काशीं सुधीः श्रयेत् ॥

अर्थ--महापापों का नाश करने वाली, पुण्य की वृद्धि करने वाली, भुक्ति-मुक्ति को देने वाली काशी का कोन विवेकबुद्धि प्राणी आश्रय नहीं लेगा ?

(मंत्र) अत्र हि जन्तोः प्राणेषूत्क्रममाणेषु रुद्रस्तारकं ब्रह्म
व्याचष्टे येनासावमृती भूत्वा मोक्षी भवति ।

तस्मादविमुक्तमेव निषेवेत अविमुक्तं न विमुञ्चेत् ॥

(जावालोपनिषद् मन्त्र ॥७॥)

अर्थ--काशी में प्राणी के प्राण जाने के समय दुःख को नाश करने
वाले रुद्र (विश्वनाथ जी) तारक मन्त्र का उपदेश देते हैं । उस उपदेश
से प्राणी मरणरहित मुक्त हो जाता है, उस हेतु से अविमुक्त काशी
क्षेत्र का सेवन करें । काशी जी का त्याग कभी न करें ।

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति ।

पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं वाराणस्यां विनश्यति ॥

(का० रहस्यम्)

अर्थ--पृथ्वी के अन्य क्षेत्रों में किये गये पाप पुण्य क्षेत्र तीर्थों में
नष्ट हो जाते हैं, और पुण्य क्षेत्र और तीर्थों में किये गये पाप काशी
(वाराणसी) में नष्ट होते हैं ।

संवत्सरं वसंस्तत्र जितक्रोधो जितेन्द्रियः ।

अपरस्वविपुष्टाङ्गः परान्नपरिवर्जकः ॥६२॥

परापवादरहितः किञ्चिद्दानपरायणः ।

समाः सहस्रमन्यत्र तेन तप्तं महत्तपः ॥६३॥

(काशी खण्ड अ० २५ श्लोक ६२, ६३)

काशीमुद्दिश्य यातानां सर्वः स्यात्समयः शुभः ।

मंगलं सकलं वस्तु न च किञ्चित् विचारयेत् ॥

—काशी रहस्य श्लोक अ० २५

तथा सदा कृतयुगं चास्तु सदा चास्तूत्तरायणम् ।

सदा महोदयश्चास्ति काश्यां निवसतां सताम् ॥

काशी खण्ड अ० २६ श्लोक ८२

अर्थ—जो काशीवासी क्रोध और अपनी इन्द्रियों को जीतकर अपने धन से अपना पालन-पोषण करता हुआ पराये निन्दा आदि को त्यागकर काशी की यात्रा करता हुआ, किंचित् प्रतिदिन दान करता हुआ, एक वर्ष पर्यन्त काशीवास करता है उसको अन्त्यत्र सहस्र वर्ष तक तप करने का फल प्राप्त होता है ।

अर्थ—काशी में सभी रहने वालों को सभी समय शुभ है और सभी वस्तु मंगल है । उत्तरायण और दक्षिणायन, ग्रहों का उदय-अस्त और तिथि, वार, नक्षत्र आदि का भी काशी में किञ्चित् विचार नहीं करना चाहिए तथा काशी में सदा सत्ययुग है और उत्तरायण है, ग्रहों के उदय और अस्त का भी दोष विश्वेश्वर के (आलय) घर में काशी गुरी में नहीं है जब इच्छा हो तब काशी का दर्शन, पूजन, यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए ।

यत्नतोऽयत्नतो वापि काश्यां व्यक्त्वा कलेवरम् ।

तारकस्योपदेशेन मुक्तो भवति तत्क्षणात् ॥

(काशी रहस्य श्लोक ७)

अर्थ—काशी रहस्य में लिखा है कि काशी में रहकर पुष्पार्थ करे न करे काशी में शरीर का त्यागकर देने पर तारक मन्त्र को शंकर जी से सुनकर तुरन्त मुक्त हो जाता है । उस जीव का पुनर्जन्म नहीं होता ।

वाराणसी तु भुवनत्रयसारभूता,

रम्या पुरी मम सदा गिरिराजपुत्रि ।

अत्रागता विविधदुष्कृतकारिणोऽपि,

पापक्षयाद्विरजसः प्रतिभान्ति मर्त्याः ॥

एतत्स्मृतां प्रियतमं मम देवि नित्यं,

पुण्यपवित्रतरुगुल्मनिकाञ्चजुष्टम् ।

यस्मिन् भूतास्तनुभूतः पदमाप्नुवन्ति,

दुःखागमेन रहिता न हि संशयोऽत्र ॥

(सनत्कुमार संहिता अ० ४२ श्लोक ७३ एवं ७७)

अर्थ—शंकर भगवान् पार्वती जी से कहते हैं,—‘जो वाराणसी पुरी की तीर्थयात्रा करने जाते हैं वे धन्य है, क्योंकि काशी सुख का साररूप है, अत्यन्त सुन्दर है । हे पार्वती, विश्व में जो नाना प्रकार के पापादि कर्म करके काशी में आता है, वह मनुष्य काशी से बाहर किए हुए पापों से मुक्त हो जाता है एवं वह जीव पापों से रहित हो मेरु रूप हो जाता है ।

सर्वेषामेव जन्तूनां हेतुमोक्षस्य सर्वदा ।

काशीस्थेः पतितौस्तुल्या न वयं स्वर्गिणः क्वचित् ।

काश्यां पाताद्भयं नास्ति स्वर्गे पाताद्भयं महत् ॥

(शिव रहस्य)

अर्थ—समस्त प्राणियों को मोक्ष देने वाला कोई नहीं है । काशी के पतितों के तुल्य भी, हम स्वर्गवासी भी नहीं हैं । काशी में पतन का भय नहीं है । स्वर्ग से तो पतन का महान् भय होता है ।

कृतसन्ध्यादिनियमः परितपितपितामहः ।

वृतमौनव्रतो धीमान्यावल्लिङ्गविलोकनम् ॥१५५॥

(काशी ख० अ० ६९)

अर्थ--सन्ध्यादि नित्य कर्म एवं पिता-मातादि का तर्पण सम्पन्न कर मौन व्रत धारण करता हुआ, जो बुद्धिमान् शिवलिंग का दर्शन करता है उसे मनोवाञ्छित फल प्राप्त होता है ।

सम्प्राप्य तारकं ज्ञानं न स भूयोऽभिजायते ॥११७॥

यो मामिह समभ्यर्च्य स्त्रियतेऽन्यत्र कुत्रचित् ।

जन्मान्तरेऽपि माम्प्राप्य स विमुक्तो भविष्यति ॥११८॥

(काशी खण्ड अ० ६४)

अर्थ--विश्वनाथ जी ने कहा--काशी में जो जीव तारक मन्त्र का उपदेश पा गया है । वह पुनः जन्म नहीं लेता । जो भक्त इस काशी में मेरी सविधि पूजा करता रहा हो किन्तु मरण समय में वह कहीं अन्यत्र जाकर शरीर त्याग कर दे तो ऐसा भी मनुष्य दूसरे जन्म में पुनः मुझे प्राप्त कर विमुक्त हो जाएगा ।

अर्थात्, जिन्होंने एक बार भी काशी का दर्शन कर लिया है, वे व्यक्ति काशी से बाहर जाकर मर गये तो वे दूसरे जन्म में काशी में आकर ज्ञान प्राप्त करके मुक्त हो जाते हैं ।

स्वस्वजात्यनुसारेण यो धर्मो यस्य कीर्तितः ।

तत्तद्धर्मपरैरेव सेव्या वाराणसी पुरी ॥

(पद्मपुराणे वाराणसी माहात्म्ये)

अर्थ--अपनी-अपनी जाति के अनुसार शास्त्र में जो धर्म जिसके लिए कहे गये हैं, उस धर्म में जो जाति तत्पर रहती है, उन्हीं मनुष्यों

का वाराणसी पुरी में (काशी) वास सफल होता है और वह व्यक्ति अपना जीवन सफल करता है ।

काशीक्षेत्रे निवासश्च जाह्नवीचरणोदकम् ।

गुरुविश्वेश्वरः साक्षात् तारकं ब्रह्म निश्चयः ॥

(मत्स्य पुराण)

अर्थ--काशी (मोक्ष) क्षेत्र में वास करना गङ्गा जल (चरणोदक) पीना और साक्षात् विश्वनाथ भगवान् का दर्शन करना ही कल्याणकारी है । विश्वनाथ गुरु जी अन्त समय में तारक मन्त्र का उपदेश निश्चित ही देते हैं । जिनको उपदेश मिलता है, उन प्राणियों का पुनर्जन्म नहीं होता ।

श्रद्धापूर्वमिमा यात्राः कर्तव्याः क्षेत्रवासिभिः ।

पर्वस्वपि विशेषेण कार्या यात्राश्च सर्वतः ॥१००॥

(काशी खण्ड, अ० १००)

अर्थ--काशी-वासियों को श्रद्धापूर्वक काशी की यात्रा करना चाहिए । वार्षिक यात्रा के दिन (पर्वों में) प्रयत्न करके काशी की परिक्रमा करनी चाहिए ।

इमां यात्रां नरः कृत्वा क्षेत्रेऽस्मिन्मुक्तिजन्मनि ॥

न दुःखैरभिभूयेत इहामुत्रापि कुत्रचित् ।

(काशी खण्ड, अ० १००)

अर्थ--मुक्ति-जन्म-स्थली काशीक्षेत्र में काशी की यात्रा करने से मनुष्य इह लोक तथा परलोक में दुःखों से पीड़ित नहीं होता । काशी की प्रदक्षिणा करने वालों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता । वह त्रिविध तापों से मुक्त हो जाता है ।

काशी में मन, वाणी और शरीर से जो पाप हुए हैं, उन पापों के निवृत्ति हेतु श्रद्धा-भक्ति से युक्त होकर यात्रा करनी चाहिए। काशी में मल-मूत्र त्याग करने का जो दोष है, उस दोष की निवृत्ति के लिए यात्रा करना अनिवार्य है। अपने माता-पिता एवं प्रपितामह आदि के नाम से यात्रा करनी और करानी चाहिए। नरक में अथवा पशु योनि में गये हुए पितरों को सुख-शान्ति और मुक्ति दिलाने के लिए प्रयत्नपूर्वक उनके नाम से काशी की यात्रा करने के लिए लोगों को भेजना चाहिए और स्वयं जाना चाहिए।

नीरोग उपद्रिष्टो वा रुग्णो वा विलुण्ठन् भुवि ।

मूर्च्छितो वा त्यजेत् प्राणान् मुक्तो भ्रान्तिर्न सर्वथा ॥

(ब्रह्मपुराणे अ० ७)

अर्थ—नीरोग हो, बैठे हो, रोगी हो, भूमि पर करवट बदलता हो, मूर्च्छित हो, फिर भी यदि (काशी में) प्राण त्याग करता है तो वह मुक्त हो जाता है, इसमें संशय नहीं है।

शिव-मन्दिर-परिक्रमा

यत्फलं समवाप्नोति तन्मे निगदतः शृणु ।

राजन्प्रदक्षिणैकेन मुच्येन्निगदतः शृणु ।

द्वितीयेनाधिकारित्वं तृतीयेनेन्द्रसम्पदम् ॥

(सनत्कुमार संहिता)

अर्थ—शिव जी की पूजा करने के पश्चात् शिव जी की परिक्रमा करने से जो फल प्राप्त होता है उसे मैं कहता हूँ, श्रवण करो। हे राजन् ! शिव की एक परिक्रमा करने वाले नर-नारियों की ब्रह्म हत्या

से निवृत्ति होती है। दूसरी परिक्रमा करने से मनुष्य अधिकारी पद पाता है और तीसरी से ऐश्वर्य को पा लेता है।

शिव-नैवेद्य-माहात्म्य

चान्द्रायणसमं प्रोक्तं शम्भोर्नैवेद्यभक्षणम् ।

ब्रह्महत्याच्छुचिर्भूत्वा निर्माल्यं यस्तु धारयेत् ।

भक्षयित्वाच्छुद्रुतां तस्य सर्वपापं प्रणश्यति ॥

(शिव पुराण)

अर्थ—शिव लिङ्ग और शिव मन्दिरों में चढ़ा हुआ नैवेद्य खाने वाले व्यक्ति को चान्द्रायण व्रत करने का फल कहा गया है। चाहे जो कोई मनुष्य ब्रह्म हत्यारा ही क्यों न हो यदि वह व्यक्ति पवित्र होकर शिव निर्माल्य को शरीर में धारण करता और शिव नैवेद्य खाता है, तो तुरन्त उन नर-नारियों के सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

काशी और काशी का माहात्म्य, भागीरथी उत्तरवाहिनी गंगा जी के तट पर बसी हुई है। अतः विश्व से न्यारी है।

प्रातः ३ बजे भगवान् विश्वनाथ तथा भवानी अन्नपूर्णा जी काशी की गलियों में चलते हैं और भक्तों को दर्शन देकर उनके अज्ञान, अविद्या और पापों को नष्ट कर देते हैं; भुक्ति-मुक्ति-दोनों देते हैं। जो नर-नारी बाहर से काशीवास करने के लिए काशी आये हैं, श्रद्धा भक्ति से युक्त होकर काशीवास करते हैं; गंगास्नान करके काशी की गलियों में स्थित तीर्थ मन्दिरों का दर्शन-पूजन करते हैं। काशी की यात्रा करते-कराते हैं, अपने माननीय एवं बड़ों को प्रणाम और उनकी सेवा करते हैं, प्रतिदिन यथा शक्ति अन्न, सीधा, वस्त्र, जल,

दवा आदि अपनी शक्ति के अनुसार दान करते हैं तथा काशी में क्षेत्रसंन्यास लेकर काशीवास करते हैं, वे नर-नारी जीवन्मुक्त माने जाते हैं। काशीवासियों को काशी में विरक्त, तपस्वी, महात्मा तथा संन्यासी शिवनिष्ठ हो या ब्रह्मनिष्ठ विद्वान् ब्राह्मण से शिव दीक्षा पञ्चाक्षरी महामन्त्र और बीज मन्त्र 'शिवनाम' दीक्षा लेकर काशीवास करने से काशीवास में विघ्न नहीं आता है।

काशी के देवता, भैरव और भूत पिशाच भी काशीवास में सह-योग करते हैं। प्रातः स्नान, संध्या करने के पश्चात् पञ्चाक्षरी महामन्त्र का ११ माला से यथाशक्ति प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक जप करना चाहिए और शिवभक्ति नाम महामन्त्र के निरन्तर जप करने का अभ्यास करना चाहिए। पञ्चाक्षरी महामन्त्र और शिव-शिव नाम निरन्तर जपने वाले व्यक्ति ही कालान्तर में सिद्ध सन्त हो जाते हैं।

शिवदीक्षा लेकर काशीवास करते हुए काशी की यात्रा करें, करावें। यदि संन्यासी हो तो भिक्षा मधुकरी माँगकर एक समय भोजन करें। किसी भी जीव में ममता, आसक्ति को छोड़ अनासक्त, विरक्त होकर काशीवास करें। काशीमाहात्म्य तथा काशी की महिमा, काशी दर्शन, काशी खण्ड, काशी-रहस्य, शिव पुराण, शिव रहस्य आदि सद्ग्रन्थों का और वेदान्त की प्रस्थानत्रयी; जहाँ कथा-सत्संग हो रहा हो, वहाँ जाकर श्रवण मनन, निदिध्यासन करते हुए, जीव-ब्रह्म की एकता के विषय में तथा ब्रह्मात्मसाक्षात्कार का अभ्यास करते हुए काशीवास करें। 'मैं आज से काशी से बाहर नहीं जाऊँगा और कन्या दान, गोदान काशी से बाहर नहीं दूँगा, शिवपूजा एवं

काशी की यात्रा करते हुए पापकर्म से बचूँगा, काशी की यात्रा नियम से करूँगा ।” ऐसी प्रतिज्ञा जो व्यक्ति करते हैं, उनके शरीर की, अंग की रक्षा शिव के गण करते हैं । वेद, उपनिषद्, पुराणों में काशी में क्षेत्र-संन्यास लेकर काशीवास करने वाले नर-नारियों को जीवन मुक्त कहा है ।

अब मैं काशीवास करने वाले मनुष्यों के नियम का वर्णन करता हूँ । जाति, वर्ण आश्रम के अनुसार रहें, अखाद्य पदार्थ न खायें—यही त्याज्य वस्तुएँ हैं । जो मनुष्य जाति, वर्ण, आश्रम को नहीं मानता शिव, शक्ति, विष्णु की पूजा नहीं करता, काशी की यात्रा नहीं करता और शिवनिन्दक, काशी की यात्रा का खण्डन करने वाले तथा स्वयं स्वधर्म का पालन न करने वाले पाप कर्म करने वाले, गंगा में स्नान और गंगा-जल का पान मना करने वाले मनुष्य अपराध के भागी बनेंगे । गंगा जल बाँटने वाले लोग भी पवित्र हो जाते हैं ।

भक्षिते शिवनैवेद्ये शिवसायुज्यमाप्नुयात् ।

यद्गृहे शिवनैवेद्यप्रचारोऽपि प्रजायते ॥

तद्गृहं - पावनं सर्वमन्त्रपावनकारणम् ॥

अर्थ—शिवपूजा करने के पश्चात् शिवनैवेद्य खानेवाले नर नारियों को शिवसायुज्य (मुक्ति) की प्राप्ति हो जाती है । जिस घर में शिव जी का चढ़ा हुआ (शिवार्पित) नैवेद्य पहुँच जाता है वह घर परम पवित्र हो जाता है और उसके सम्पर्क से अन्य भी पवित्र हो जाते हैं ।

दृष्ट्वापि शिवनैवेद्यं यान्ति पापानि दूरतः ।

भुक्ते तु शिवनैवेद्ये पुण्यान्यायान्ति कोटिशः ॥

(ब्रह्माण्ड पुराण)

अर्थ—शिवनैवेद्य को देखते ही सारे पाप दूर भाग जाते हैं और शिवनैवेद्य को खाने से करोड़ों प्रकार के पुण्य उसके पास दौड़े आते हैं ।

दत्त्वान्नदानं विधानेन न स भूयोऽभिजायते ।

दानान्यपि स्वस्ववित्तानुसारेण कृतानि वै ।

दूर्वापत्रं पुष्पजातं शिवेऽर्पितममोघकृत् ॥

(काशी मूल रहस्य)

अर्थ—मनुष्य अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार प्रतिदिन अन्न, द्रव्य, वस्त्र और मिष्टान्न, ऋतुफल दान करे । दूर्वापत्र, फूल आदि वस्तु भी शिवार्पित करने से अमोघ अनन्त फल होकर प्राप्त होता है और अन्न, वस्त्र, दूध, धन आदि भी उसी प्रकार से अनन्त गुना होकर प्राप्त होते हैं ।

दशाहामान्तरे यस्य गङ्गायामस्थि मज्जति ।

तावत्स्वर्गे वसेत् प्रेतो यावदत्रास्थि तिष्ठति ॥

(ग० पु०)

अर्थ—यदि मृत व्यक्ति की अस्थि (हड्डी) जिस दिन मृत्यु हुई, उस तिथि से दस दिन के भीतर ले जाकर काशी में (या कहीं भी) गंगा जी में डाल दी जाय तो जब तक गंगा जी में उसकी हड्डी रहेगी तब तक वह जीवात्मा स्वर्ग में रहता है ।

स्कन्द पुराण में लिखा है, बाहर से सब मृतक काशी में लाकर काशी में दाह संस्कार करते हैं । जिस व्यक्ति का काशी में दाह संस्कार हुआ उसका पुनर्जन्म नहीं होता है । काशी में कहीं भी मृतक (शव) दिखाई पड़ते ही “विश्वनाथाय नमः” कहकर सभी को नमस्कार

करना चाहिए। वह व्यक्ति तो काशी में उसके मरते ही जीवात्मा विश्वनाथ जी में लीन हो गया अर्थात् वह विश्वनाथ स्वरूप हो गया।

गंगा में अस्थि विसर्जन माहात्म्य

चूँकि वह मृतक मुक्त हो गया, इसी हर्ष या प्रसन्नता से सब मृतक को सजाकर काशी में बाजा बजाते हुए बड़े उत्सव के साथ जुलूस निकालते हैं। शव के ऊपर सुगंधित फूल, लावा और पैसा बरसाते हुए “हरहर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे” का कीर्तन करते हुए तथा “राम नाम सत्य है, राम नाम सत्य है” कहते हुए सब मिलकर चलते हैं। जगह-जगह रुककर पिण्ड दान करते हैं, धीरे-धीरे हरिश्चन्द्र घाट अथवा मणिकर्णिका घाट में ले जाते हैं। दाह संस्कार करके अपने को सब धन्य समझते हैं। काशीवासी शव का दर्शन होते ही नमस्कार करते हैं और मंगल मानते हैं।

काशी से बाहर जाने का विधान

काशीवासियों को जहाँ तक हो सके काशी से बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि बहुत जरूरी हो तो निम्नांकित साधनों द्वारा जाकर तत्काल कार्य करके काशी आ जाना चाहिए। काशी से बाहर जाने के एक दिन पहले काशी की आज्ञा यात्रा करके आज्ञा लेकर बाहर जाने से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

प्रातः गंगा स्नान कर संध्या-तर्पण करने के पश्चात् अविमुक्तेश्वर के दर्शन, पूजन कर आज्ञा लें, दण्डपाणि जी के दर्शन कर उनसे भी

आज्ञा लेने के पश्चात् नीचे लिखी हुई सामग्री (चढ़ा हुआ प्रसाद) लेकर जाना चाहिए ।

१. दुण्डिराज जी को चढ़ी हुई दुर्वा ।
२. अन्नपूर्णा जी को चढ़ा हुआ सिन्दूर ।
३. विश्वनाथ जी को चढ़ा हुआ बिल्वपत्र ।
४. कालभैरव को चढ़ा हुआ गंगा जल ।

५. जो अन्नपूर्णा जी में महाविष्णु जी हैं, उनको चढ़ा हुआ तुलसी दल साथ में लेकर जायें और कार्य करके शीघ्र काशी आ जाना चाहिए । काशीवास करने वाले से देवता और पितर सब प्रसन्न होते हैं । पुत्र-पौत्र एवं भक्तों को मोक्षदायिनी काशी में लाकर काशीवास करें करायें । काशी यात्रा करें । कहते हैं कि काशी कल्पवृक्ष है । इस लोक में धन, सम्पत्ति, सुख तथा शान्ति देती है । परलोक में कैवल्य मोक्ष प्राप्त कराती है । काशी तीनों लोकों से न्यारी है । काशी में तैंतीस कोटि देवता निवास करते हैं ।

काशी से अन्य जगह यज्ञ करने में जो फल मिलता है, उसमें करोड़ों गुना अधिक काशी में यज्ञ करने से फल मिलता है । पितर प्रतिज्ञा करते हैं कि “मेरा पुत्र कब काशी में जाकर पिण्डदान करेगा, मैं तृप्त तथा मुक्त होऊँगा ।” काशी एवं गया में जाकर पिण्डदान करने से सब पितर मुक्त हो जाते हैं । काशी और गया जाना अनिवार्य है । बदरीनारायण जाना अनिवार्य नहीं है ।

मन्दिर में पूजाविधि और भङ्ग प्रतिमाओं का जीर्णोद्धार

मन्दिरों के दर्शन करनेवाले दर्शनार्थियों से निवेदन किया जाता है कि यदि शरीर और वस्त्र अपवित्र हों तो मन्दिर के बाहर से शिखर का दर्शन, प्रणाम करें। मन्दिर के अन्दर गर्भगृह में आकर दर्शन न करें। श्रुति, स्मृति और पुराणों के अनुसार मन्दिर के शिखर के दर्शन करनेवाले व्यक्तियों को महारुद्र यज्ञ सम्पन्न करने का फल मिलता है। काशी की परम्परा यह है कि कोई भी पद प्राप्त होने के पश्चात् शंकराचार्य, महामण्डलेश्वर, महन्त और राजा आदि काशी में आकर गंगा स्नान करके विश्वनाथ आदि के दर्शन-पूजन कर अन्तर्गृही पंचकोशी की यात्रा शास्त्र विधि से करते हैं। विद्वान्, सरकारी अधिकारी आदि सब काशी आते हैं और काशी की यात्रा करते हैं।

काशी वास करने का नियम निम्नांकित है। गंगास्नान करने में असमर्थ हो तो मार्जन करके घर में स्नान करके शिव पूजा, किंचित् परोपकार, दान और सब पर दया करते हुए अपने बराबर साथियों को दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं। बड़े माननीय जनों को हाथ जोड़कर प्रणाम करें। घर में आये हुए अतिथि और अन्य जनों को 'आइये-आइये'—कहकर आसन पर बैठाएँ। प्रसन्नतापूर्वक मीठी चाणी बोलिये सबको जल पिलाइए, भगवान् का स्वरूप समझकर, खाली हाथ मेरे घर से कोई जाने न पाये—ऐसा भाव रखें। अतिथियों का ऐसा सत्कार करने से घर में स्थिर लक्ष्मी आकर निवास करती है और मान, प्रतिष्ठा एवं धन सम्पत्ति स्वतः घर में आती है।

जीर्णोद्धार-माहात्म्य

मन्दिर, धर्मशाला, तालाब, कुआँ आदि का जीर्णोद्धार करने एवं उनकी सुरक्षा से उत्पन्न पुण्य से नष्ट हुए पाप वाले मनुष्य की कृति, स्मृति में होगी तो भी वे व्यक्ति दुर्लभ गति को न प्राप्त कर मुक्त हो जाते हैं ।

जातपुण्याश्वापिविदूत-पापाः समुद्धारकाः सुरमन्दिराणाम् ।

गतिं लभन्ते मनुजा दुरायां कृति स्मृति नाम नवैयमुक्तिः ॥

स्वयंभुवोऽस्य लिंगस्य मम विश्वेशितुः सुराः ।

राजसूयसहस्रस्य फलं स्यात्स्पर्शनात्रतः ॥२५॥

(काशी खण्ड अ० १९)

हे सुर समूह ! मेरे इस स्वयंभू विश्वेश्वर लिंग के केवल स्पर्श करने से ही सहस्रों राजसूय यज्ञ करने का फल उपलब्ध होता है ।

पुष्पमात्रप्रदानाच्च चुलुकोदकपूर्वकम् ।

शत सौवर्णिकं पुण्यं लभते भक्तियोगतः ॥२६॥

अर्थ—भक्ति भाव से शिवलिंग पर एक चुल्लू जल चढ़ाकर एक ही पुष्प अर्पण किया जाय तो भी सैकड़ों सुवर्ण पुष्पों के प्रदान करने का पुण्य हो जाता है ।

श्री काशी नगरी भगवान् विश्वनाथ, सदाशिव भूतभावन, परम पावन शंकर के त्रिशूल पर स्थित है । काशी पुरी 'ॐ' स्वरूपा है । काशी ब्रह्मस्वरूपा है । समस्त विश्व उसी का विवर्त है । अविवर्त ब्रह्म ही काशी है; प्रमाण भी मिलता है—

कैलाशादधिका काशी सर्वदैव प्रकाशिका ।

कैलाशे शङ्करोऽप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शङ्कराः ॥

अर्थ—कैलाश से भी काशी सर्वश्रेष्ठ है जो सदा प्रकाश करती है। कैलाश में एक शंकर और काशी में कंकर-कंकर में शंकर हैं—वासी
ऐसी काशी का महत्त्व स्वतः सिद्ध है।

विना काशीं न मे स्थानं विना काशीं न मे रतिः ।

विना काशीं न निर्वाणं सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥१३२॥

श्री भगवान् बोले—हे देवी पार्वति ! अत्यन्त छिपी हुई बात कहता हूँ कि मेरा घर काशी है। जो सर्व प्राणियों को संसार रूप समुद्र से पार करता है। यहाँ मेरे भक्त नियमपूर्वक मेरा व्रत करते हुए काशीवास करते हैं। जो सर्व तीर्थों में उत्तम है और सर्व ज्ञान में उत्तम ज्ञान तथा काशी में सर्वश्रेष्ठ भक्ति के स्थान है। या भूलोक से अलग अन्तरिक्ष में टिका है। जो मुक्त नहीं हैं, उनको मुक्त करने के लिए महाश्मशान स्थूल, कारण, सूक्ष्म तीनों शरीरों को जलाने वाला है। हे सुन्दरी, काल के वश इस संसार का जब मैं संहार करता हूँ, जो मेरे भक्त हैं उस समय मेरे में प्रविष्ट होते हैं और काशी में किया हुआ दान जप, होम, व्रत, ध्यान, अध्ययनादि सब अक्षय होता है।

सूच्यग्रपात्रमपि नास्ति ममास्पदेऽस्मिन्,

स्थानं सुरेश्वरि मृतस्य न यत्र मोक्षः ।

भूमौ जले वियति वा शुचिमेध्यते वा,

सर्पाग्निदस्युपविभिर्निहतस्य जन्तोः ॥

अर्थ—महादेव जी पार्वती जी से कह रहे हैं कि देवी ! मेरी काशीपुरी में ऐसी कोई सुई भर भी जगह नहीं है; जिसमें मरने पर

जीव को मुक्ति न मिले। चाहे भूमि पर मरे, चाहे जल में मरे और चाहे आकाश में मरे, पवित्र स्थान में मरे, चाहे अपवित्र स्थान में मरे, उस जीव को मुक्ति अवश्य ही मिल जाती है। जो लोग सर्प के काटने से, अग्नि में जल जाने से, वज्र के गिरने से अथवा चोरों के द्वारा असमय में मारे जाते हैं, उनकी अकालमृत्यु कही जाती है और उन्हें सद्गति नहीं होती, परन्तु काशी में किसी प्रकार भी मरे को मुक्ति अवश्य ही मिलती है।

अर्थहीना यथा वाणी धर्महीना यथा तनुः।

पतिहीना यथा नारी शिवहीना तथा क्रिया ॥६०॥

(स्क० पु० का० खं० अ० ८७)

अर्थ—अर्थविहीन वाणी, धर्मरहित शरीर, पतिविहीन नारी जैसे व्यर्थ होती है, उसी प्रकार शिवरहित समस्त क्रियायें, व्यर्थ होती हैं।

सूर्यस्यापि भवेत् सूर्यः अग्नेरग्निः प्रभोः प्रभुः।

श्रियः श्रीश्चभवेदश्रया कीर्तिः कीर्त्याः क्षमाक्षमा ॥

अर्थ—काशी सूर्य का भी सूर्य है, अग्नि का भी अग्नि है। प्रभु का भी प्रभु है, लक्ष्मी की भी लक्ष्मी है, कीर्ति की भी कीर्ति है और क्षमा की भी क्षमा है।

ऐसी काशी के प्रति भगवान् सदाशिव विश्वनाथ का अनुरक्त होना स्वाभाविक है।

विनाऽतिपुण्यसम्भारैः कः काशीम्प्राप्तुमर्हति।

काशीप्राप्तिरयं योगः काशी प्राप्तिरिदं तपः।

काशी प्राप्तिरिदं दानं काशीप्राप्तिः शिवैकता ॥५४॥

(काशी खण्ड अ० ४२)

अर्थ—स्कन्द जी अगस्त्यमुनि से कहते हैं कि अत्यधिक पुण्य समूह के बिना कौन काशी को प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है? काशी की प्राप्ति ही योग है, काशी की प्राप्ति ही तप है, काशी की प्राप्ति ही दान है और काशी की प्राप्ति ही शिवजी की एकता तथा विश्वनाथजी की प्राप्ति है।

कोटिजन्मकृतपुण्यभारभूत-

काशिकां समनुविश्य निर्मलः ।

जायते

विगतभारजीवनः

शान्तिमाप्य परशान्तिभाजनम् ॥६६॥

(काशी रहस्य अ० ६२)

अर्थ—करोड़ों जन्मों के किए हुए पुण्य भार को धारण करने वाला काशी में प्रवेश करके निर्मल हो जाता है और उसके भार से मुक्त जीवन बन जाता है तथा शान्ति मिलती है, तब परम शान्ति प्राप्त करता है।

अजपा नाम गायत्री योगिनां मोक्षदायिनी ।

अस्याः संकल्पमात्रेण नरः पापैः प्रमुच्यते ॥१५८॥

(काशी खं० अ० ४१)

अर्थ—ये अजपा नाम की गायत्री योगियों को मोक्ष देने वाली है। इसके संकल्पमात्र से ही मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है।

हंसहंसेत्यतो मन्त्रं जीवोजपति सर्वदा ।

षट्शतानि दिवारात्रौ सहस्राण्येक विंशतिः ॥

एतत्सङ्ख्यान्वितं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा ॥१५७॥

(का० ख० अ० ४१)

अर्थ--हंस-हंस इस मन्त्र को सर्वदा दिन-रात जीव इक्कीस हजार
सौ बार जपता है ।

विद्यानां सदनं काशी काशी लक्ष्म्याः परालयः ।

मुक्तिक्षेत्रमिदं काशी काशी सर्वा त्रयीमयी ॥

सर्वलिङ्गमयी काशी सर्वतीर्थैकजन्यभूः ॥

(काशीखण्डे, अ० १६ श्लो० १२१)

अर्थ--समस्त विद्याओं एवं लक्ष्मी का स्थान मुक्तिप्रद क्षेत्र यह
शी है । अधिक क्या कहा जाय यह काशी वेदत्रयी मयी है ।

काशी समस्त लिङ्गमयी है तथा सभी तीर्थों की जन्मभूमि काशी
। काशी सभी तीर्थों की जननी है ।

काशी काशीति काशीति रसना यदि संस्कृता ।

यस्य कस्यापि भूयान्चेत्स मुक्तो नाऽत्रसंशयः ॥

(काशी माहात्म्य)

अर्थ--काशी-काशी इस प्रकार कहने वाली किसी की भी रसना
जह्वा) यदि सुसंस्कृत है तो वह उसको मुक्ति प्रदान करने वाली है ।
में संशय नहीं है ।

श्रवणेन परा सिद्धिः श्रवणेन परं सुखम् ।

श्रवणेन परं ज्ञानं धर्मादिः श्रवणेन च ॥

अर्थ--काशी में वेद पुराणादि की कथा सुनने से सिद्धि सर्वश्रेष्ठ
प्र, सर्व श्रेष्ठ ज्ञान तथा धर्म आदि की प्राप्ति होती है ।

शृणुयादेकमपि य आख्यानं काशिखण्डकम् ।

श्रूतानि तेन सर्वाणि धर्मशास्त्राण्यसंशयम् ॥

(काशी खण्ड ज० १००)

अर्थ--जिसने काशी-माहात्म्य का एक भी आख्यान श्रवण किया हो, उसने समस्त धर्मशास्त्रों का श्रवण कर लिया--इसमें कोई सन्देह नहीं है।

श्रुताश्च सर्वधर्मास्ते मंहापुण्यैकराशिभिः ।

श्रुतं यैः स्थिरचेतोभिः काशीमहात्म्यमुत्तमम् ॥

(काशी खण्ड अ० १००)

अर्थ--महा पुण्यात्मा जन स्थिर चित्त से यदि काशी माहात्म्य श्रवण करते हैं, तो उन्हें समस्त धार्मिक ग्रन्थों के श्रवण का फल प्राप्त हो जाता है।

काशीकथासंश्रवणेन सम्यग्मनः-

शुद्धिर्जायते वै नराणाम् ।

स्थितिप्रकारम्परमं वेत्ति सम्यक्

स्थित्वा यथावत्प्रविमुच्यते भयात् ॥

(का० २०, अ० ६, श्लोक ५६)

अर्थ--काशी की कथा का माहात्म्य सुनने से मनुष्यों के मन भली-भाँति शुद्धि हो जाती है। काशी में रहने का तरीका मालूम जाता है तथा विधिवत् काशी में रहते हुए भय से विमुक्त हो जाता है।

एवमेव महामन्त्रं जीवानां च तनुत्यजाम् ।

काश्यां संश्राव्य मरणे दत्ते मुक्तिं परां शिवः ॥६२॥

(शिव पुराण अ० १३)

अर्थ--इसी प्रकार, काशी में शरीर त्याग करने वाले प्राणियों यह महामन्त्र सुनाकर, शिवजी उनकी मृत्यु हो जाने पर मुक्ति प्रदान करते हैं।

कृमिकीटपतङ्गाद्या ये मृता जाल्लवीतटे ।

कूलात् पतन्ति ये वृक्षा स्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ॥

(काशी खण्ड अ० २७, १३४)

अर्थ—कृमि, कीट, पतंग जो भी गंगाजी के तीर पर मरते हैं, तट के जो वृक्ष भी गंगाजी में गिरते हैं, वे सभी मोक्ष प्राप्त करते हैं ।

तथा सर्वाणि तीर्थानि सप्त पुर्यश्च मानदे ।

वसन्ति काशीमाश्रित्य स्वसामर्थ्यविवृद्धये ॥

(का० ख०)

अर्थ—हे मानदे ! समस्त तीर्थ तथा सप्त पुरियाँ अपने-अपने सामर्थ्य की अभिवृद्धि के लिए काशी का आश्रयणकर निवास करती हैं ।

दृष्ट्वा केदारशिखरं पीत्वा तत्रत्याम्बु च ।

सप्तजन्म कृतापापान्मुच्यते नात्र संशयः ॥

(का० ख० अ० ७७ श्लो० ८)

अर्थ—केदार (मन्दिर) का शिखर अर्थात् केदारेश्वर का दर्शन करके तथा उनके चरणामृत का आचमन करने से सात जन्मों के पापों से मुक्ति मिल जाती है—इसमें तनिक भी संशय नहीं है ॥

हरिभक्तः शिवः साक्षाद्हरिः शिवपरायणः ।

विचारतो न भेदोऽस्ति भक्त्या भेदः प्रकल्पितः ॥८५॥

(काशी रहस्य अ० १९)

अर्थ—भगवान् शिव, नारायण के भक्त हैं, साक्षात् नारायण सदाशिव के भक्त हैं, विचारतः कोई भेद नहीं है । भेद तो भक्ति से कल्पित है ॥

नरो न जायते भूयः संसारे दुःखसंकटे ।

दीर्घायुष्यञ्च वासोऽभिज्ञानं पुस्तकदानतः ।

अन्नदानेन सम्पत्तिं कीर्तिं कन्याप्रदानतः ॥१११॥

(का० खण्ड अ० २७)

अर्थ--मनुष्य संसार में दुःख-संकट का भागी तब नहीं होता जब वस्त्र का दान करते हैं, उनको दीर्घायु की प्राप्ति होती है पुस्तक दान करने वाले व्यक्ति को ज्ञान की प्राप्ति होती है एवं दान करने वाले सज्जन को ऐश्वर्य तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होती कन्यादान शास्त्रविधि से करने वाले विद्वानों को सम्मान एवं तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है । अतः, प्रेरणा करके सत् पात्र दान दिलाने वाले सज्जन को भी २५ प्रतिशत फल मिलता है ।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया

समानं वृक्षं परिषस्वजाते ।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्य-

नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥६॥

(श्वेताश्वतरोपनिषद् अ० ४)

भावार्थ--जिस प्रकार गीता आदि में जगत् का अश्वत्थ वृक्ष रूप में वर्णन किया गया है । उसी प्रकार इस मन्त्र से शरीर को अश्वत्थ वृक्ष का और जीवात्मा तथा परमात्मा को पक्षियों का देकर वर्णन किया गया है । इसी प्रकार कठोपनिषद् में जीवात्मा और परमात्मा को गुहा में प्रविष्ट छाया और धूप के रूप में बताकर वर्णन किया गया है । (क० १।३।१)

दोनों जगह का भाव प्रायः एक ही है। यहाँ मन्त्र का सारांश यह है कि यह मनुष्य शरीर मानो एक अश्वत्थ का वृक्ष है। ईश्वर और जीव ये दोनों सदा साथ रहने वाले दो मित्र मानो दो पक्षी हैं। ये दोनों इस शरीर रूप वृक्ष में एक साथ एक ही हृदय रूप घोंसले में निवास करते हैं। शरीर में रहते हुए प्रारब्धानुसार जो सुख-दुःख रूप कर्म फल प्राप्त होते हैं, वे ही मानो इस अश्वत्थ के फल हैं। इन फलों को जीवात्मा रूप एक पक्षी तो स्वादपूर्वक खाता है अर्थात् हर्ष शोक का अनुभव करते हुए कर्म फल को भोगता है। दूसरा ईश्वर रूप पक्षी इन फलों को खाता नहीं केवल देखता है। अर्थात्, इस शरीर में प्राप्त हुए सुख-दुःखों को वह भोगता नहीं, केवल उनका साक्षी बना रहता है। परमात्मा की भाँति यदि जीवात्मा भी इनका द्रष्टा बन जाय तो फिर उसका इनसे कोई सम्बन्ध न रह जाय। ऐसे ही जीवात्मा के सम्बन्ध में पिछले मन्त्र में यह कहा गया है कि वह प्रकृति का उपभोग कर चुकने के बाद उसे निःसार समझ कर उसका परित्याग कर देता है, उससे मुँह मोड़ लेता है। उसके लिए फिर प्रकृति अर्थात् जगत् की सत्ता ही नहीं रह जाती। फिर तो वह और उसका मित्र दो ही रह जाते हैं और परस्पर मित्रता का आनन्द लूटते हैं। यही इस मन्त्र का तात्पर्य है।

सभी भक्तों को शिवजी की पूजा, उपासना करनी चाहिए दर्शन पूजन, उपासना करने से दर्शन करनेवाले भक्तों को इष्टदेव की भक्ति प्राप्त होती है।

त्रिशूलगां काशीमधिष्ठित्य व्यक्ताः सर्वेऽपि मय्येव संविशन्ति ।

एष एवादेशः एष उपदेशः, एष परमो धर्मः ॥

(भस्मजाबालोपनिषद्, अ० २)

अर्थ - भगवान् शंकर के त्रिशूल पर स्थित काशीपुरी रहकर प्राण त्यागने (मरने) पर जीव मुक्ति को ही पाता है मेरा यही आदेश है और मनुष्यों को काशीवास करना, यही पर धर्म है ।

श्रुतिस्मृतिविहीना ये शौचाचारविवाजिताः ।

येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः ॥

अर्थ -- जो लोग सांसारिक भय से डरे हुए हैं, अर्थात् जो क पाप से बँधे हैं और जिन्हें कहीं गति नहीं मिलती उनके लिए का गति देनेवाली है । जो वेदशास्त्र नहीं जानते अथवा शौचादि नि क्रियाओं से रहित है और जिनकी कहीं गति नहीं है । उनके लि भी यह काशी नगरी मोक्षदायिनी है ।

कैलासादधिका काशी काशी सर्वप्रकाशिका ।

कैलासे शंकरोऽप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शंकराः ॥

अर्थ कैलास से काशी अधिक है, काशी सबको प्रकाश क है, कैलास में शंकर एक है और काशी में रहनेवाले सभी शं स्वरूप हैं ।

येनैकजन्मना मुक्तिर्युस्मत् करतले स्थिता ।

अनेकजन्मसंसारबन्धनिर्मोक्षकारिणी ॥

(वायवीय सं० ५ अ० ३२ श्लो० ५२)

अर्थ - काशी में एक जन्म में ही मुक्ति होती है इसके साथ । अनेक बार जन्म को नाश करनेवाली यह काशी है । संसार र बन्धन को नाश करने वाली काशी है अर्थात् काशी जन्म-मृत्यु सम्बत संसार के बन्धन से मुक्त कर देती है ।

काशीवास करने वाले भक्तों की महिमा

वसतुः कोटिगुणं पुण्यं, काशी वासयिताप्नुयात् ।

आत्मानं तारयेद्वस्ता वासदातो भयं कुलम् ॥

(काशी दर्शन)

अर्थ—स्वयं काशीवास करनेवाले से साधु, संन्यासी, महात्माओं और ब्राह्मणों तथा असहाय मनुष्यों को काशीवास करनेवाले नर-नारियों को कोटिगुना अधिक फल मिलता है। काशीवास करनेवाला व्यक्ति तो केवल अपने को ही करता है लेकिन काशीवास करनेवाला व्यक्ति अपने इक्कीस कुल को तथा जिसको काशीवास कराया उसके इक्कीस कुल को तारता है। वह दोनों कुल का उद्धार करता है।

काशी की सीमा

तत्र या जायते रेखा तन्मध्ये क्षेत्रमुक्तमम् ।

काशीति च विदुर्वेदास्तत्र मुक्तिः प्रतिष्ठिता ॥

कृते त्रिशूलवज्रेण त्रेतायां चक्रवर्त्तथा ।

द्वापरे तु रथाकारं शंखाकारं कलौ युगे ॥

मुखं शंखस्य गङ्गायां पृष्ठं देहलिसन्निधौ ।

वामपाद्वर्त्स्थितं तोयं रामाख्यमीश्वराभिधम् ॥

(स्कन्दपुराणस्य नागरखण्डे)

अर्थ—वहाँ जो रेखा बने उसके मध्य का उत्तम क्षेत्र-काशी नाम का है। वेदों ने गंगा, देहली विनायक और अस्सी-वरुणा के बीच में मुक्ति भूमि चुना है।

काशी सतयुग में त्रिशूल के आकार में, त्रेता युग में चक्र के आकार में, द्वापर युग में रथ के आकार में और कलियुग में शंख के आकार में बसती है। शंख का मुख गङ्गा में, पीठ देहलीविनायक के निकट और बायें पार्श्व से स्थित जल वरुणा में हैं तथा दाहिनी तरफ अस्सी नदी है। यहाँ मनःकामना की प्राप्ति होती है। अहर्निश शिव-शिव नाम जपते हुये काम करते रहना चाहिए। शिव-शिव नाम जपने से मन, वाणी और शरीर से किया हुआ पाप का प्रायश्चित्त और पाप का नाश होता है। सभी भक्तों को शिव जी की उपासना करनी चाहिये। दर्शन-पूजन, उपवास करने से भक्ति प्राप्त होती है।

वरं काशीपुरीवासो मासोपवसनादिभिः ।

विचित्रच्छत्रं सच्छायं राज्यं नान्यत्र जीवितुम् ॥

अर्थ—काशी में एक महीने का उपवास रहने पर भी काशी पुरी का वास श्रेष्ठ माना जाता है। किन्तु छाता के छाया से भी दूसरी जगह का निष्कण्टक राज्य श्रेष्ठ नहीं है।

त्रिरात्रोषितस्तत्र ज्ञानं लभते निर्मलम् ।

त्रिरात्रं तत्र कृत्वा वै यो नरः प्रजपिष्यति ॥

सर्वपापविनिर्मुक्तो गच्छेच्च परमां गतिम् ।

अर्थ—काशी में तीन रात निवास करने से निर्मल ज्ञान प्राप्त होता है। तीन रात तक नियम पालन करके जो मनुष्य काशीवास करेगा वह सभी पापों से मुक्त होकर परम गति को प्राप्त करेगा। अतः, तीन रात्रि निवास करने का विधान इस प्रकार है, निर्मल वस्त्र धारण करके, त्रिकाल गङ्गास्नान, त्रिकाल सन्ध्या और त्रिकाल पूजा

करने से ऊपर कहा गया हुआ फल प्राप्त होता है। चौथे दिन ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं भोजन करें।

पुत्रस्थ जननी लोके सर्वदा हितकारिणी ।

हितकृत्सर्वजन्तूनां काशीहामुत्र सिद्धिदा ॥

(का० रहस्य अ० ११)

अर्थ—जिस प्रकार इस लोक में माता अपने पुत्र का प्रत्येक परिस्थिति में हित करनेवाली होती है। उसी प्रकार काशी प्रत्येक जीवों का हित करनेवाली है।

स्वस्वजात्यनुसारेण यो धर्मो यस्य कीर्तितः ।

तत्तद्धर्मपरैरेव सेव्या वाराणसीपुरी ॥

(पञ्चपुराण वाराणसीमाहात्म्ये)

अर्थ—अपनी-अपनी जाति के अनुसार जो धर्मशास्त्र में जिसके लिए कहे गये हैं, उस धर्म में जो जाति तत्पर रहती है, उन्हीं मनुष्यों का वाराणसी पुरी में (काशी) वास सफल होता है और वह व्यक्ति अपना जीवन सफल करता है।

सच्चिदानन्दनिलयं परब्रह्मरसायनम् ।

सुखसन्तानजनकं मोक्षसाधनसिद्धिदम् ॥

अर्थ—यह सत्-चित्-आनन्दस्वरूप एवं ब्रह्मरसास्वादन का स्थान काशी है अर्थात्, ब्रह्म और आत्मा के तादात्म्य (तत्त्वमसि आदि उपनिषद्-प्रतिपादित अनुभूति को देनेवाली काशी है) तथा निरन्तर सुख और सभी मोक्ष साधनों की सिद्धि को देनेवाली काशी है।

भागीरथी गङ्गा का साहाय्य

यदा मनुष्या प्रचलन्ति गङ्गाम्,
 रुदन्ति पापानि वदन्ति किञ्चित् ।
 अहो कृतघ्नाश्च मनुष्यलोके,
 स्वयं कृतं कर्म विनाशयन्ति ॥

अर्थ—अपने पापों का वर्णन करते हुए (अपने द्वारा किए गए पापों का कथन करके उसके लिए स्वयं को धिक्कारते हुए) ओरोते हुए यदि मनुष्य गङ्गा की ओर चलते हैं तो निश्चय ही वे मनुष्य इस लोक में स्वकृत पाप कर्मों का विनाश करते हैं ।

दर्शनात् स्पर्शनात् पानात्तथा गङ्गेति कीर्तनात् ।
 स्मरणादेव गङ्गायाः सद्यः पापात् प्रमुच्यते ॥

अर्थ—गंगा जी के दर्शन, स्पर्श, जलपान, 'गंगा-गंगा' ऐसा कहने से तथा स्मरण मात्र से तत्काल पापों से मुक्ति मिल जाती है ।

गंगा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि ।
 मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥

अर्थ—सैकड़ों योजन की दूरी से भी जो व्यक्ति गंगा-गंगा ऐसा कहता है वह सभी पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक में चला जाता है ।

आगतं शिवनैवेद्यं गृहीत्वा शिरसा मुदा ।
 भक्षणीयं प्रयत्नेन शिवस्मरणपूर्वकम् ॥

अर्थ—यदि शिवनैवेद्य मिल जाय तो उसे सिर पर चढ़ाकर शिवजी का स्मरण करता हुआ प्रयत्नपूर्वक खाना चाहिए ।

दत्त्वा दानानि भूरीणि मखनिष्ठानि भूरिशः ।

वाराणसीजाह्नवीभ्यां सङ्गमे लोकविश्रुते ॥

(लिङ्ग पुराण)

अर्थ—जिस मनुष्य ने काशी में अनेक प्रकार के दान दिये हैं मानों उसने अनेक यज्ञ सम्पादित किये हैं । संसार में प्रसिद्ध काशी गङ्गा के संगम (मिलन स्थान) पर विधिपूर्वक अन्न आदि दान करनेवाले व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होता है ।

त्रिभिर्वर्षैस्त्रिभिर्मासैस्त्रिभिः पक्षैस्त्रिभिर्दिनैः ।

अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते ॥

अर्थ—वेदों में लिखा है कि काशी में जैसे पुण्य बढ़ते हैं, वैसे ही पाप भी बढ़ता है । काशी में पाप करनेवाला व्यक्ति तीन महीने तीन वर्षों तक और पापी का पुण्य अधिक हो तो १२ वर्षों तक रह सकता है । १० वर्षों के पश्चात् वह समूल नष्ट हो जाता है । पाप करनेवाले व्यक्ति पर विघ्न और संकट आते रहते हैं ।

काशी में शिव भक्ति परोपकार-दान करते हुए, वेदान्त और शिव सम्बन्धी श्रवण-सत्संग करते हुए (काशी) वास करना चाहिए । धनी वर्गों को अपने सन्तान और कुल की वृद्धि हेतु और कुल का उद्धार करने के लिए अन्नक्षेत्र खोलना चाहिए और सत्संग, यथा-शक्ति दान करते हुए काशीवास करना चाहिए ।

काश्यान्तु काम्यपुण्या वै मल्लोकं विशते हरेः ।

काश्यां विसृष्टदेहा ये संयुज्यन्ते शिवेन ते ॥ (६६) ॥

भावार्थ—अन्य मुक्ति देनेवाली छः पुरियों में मरने से सातवीं

पुरी काशी में जन्म होता है और काशी में मरने से मुक्त होता है ॥६९॥

त्रैलोक्यगततीर्थानि क्षेत्राणि प्रतिमाश्रयाः ।

देवमूर्त्तिस्तथा काश्यां लिङ्गान्यपि समानयत् ॥१६॥

मठदेवालयादीनि गंगासोपानवन्ति च ॥२७॥

भावार्थ—त्रैलोक्य में जितने तीर्थ क्षेत्र, मन्दिर एवं देवमूर्ति और शिवलिङ्ग हैं, वे सब काशी के शिवलिङ्ग और मूर्तियों के समान हैं। चूँकि प्रलय के पश्चात् जब सृष्टि प्रारम्भ होती है, तब सभी तीर्थ, सभी शिवलिङ्ग, सब मूर्तियाँ, मन्दिर, विश्व के आज जहाँ हैं, वह सब तत्-तत् स्थान में काशी से ही जाते हैं। वेद एवं पुराणों में लिखा है, काशी में मठ मन्दिर, मकान बनवाकर दान करनेवाले व्यक्ति की अहाँ भी मृत्यु हो, वह मुक्त हो जाता है।

निष्प्रत्यूहेन योगेन नानाजन्माजितेन च ।

यत्फलं लभतेऽन्यत्र तत्काश्यां त्यजतस्तनुम् ॥३३॥

तप्त्वा तपांसि सर्वाणि बहुकालं जितेन्द्रियैः ।

यत्फलं लभ्यतेऽन्यत्र तत्काश्यामेकरात्रतः ॥३४॥

(का० खण्ड अ० २६)

अर्थ—अन्य स्थानों में अनेक जन्मजार्जित निर्विघ्न योग द्वारा जो फल प्राप्ता किया जाता है, काशी में वह फल शरीर के त्याग मात्र से मिल जाता है।

अन्यत्र बहुत काल जितेन्द्रिय होकर सर्व प्रकार की तपस्या करने से जो फल प्राप्त होता है, काशी में वह फल एक रात्रि जागरण मात्र से प्राप्त होता है।

गङ्गाहीना यथादेशः पुत्रहीना यथा गृहाः ।

दानहीना यथा सम्पत्तिवहीनास्तथा क्रियाः ॥६१॥

मन्त्रिहीनं यथा राज्यं श्रुतिहीना यथा द्विजाः ।

योषाहीनं यथा सौख्यं शिवहीनास्तथा क्रियाः ॥६२॥

(स्क० पु०, का०, खण्ड अ० ८७)

अर्थ—गंगा विहीन देश, पुत्रविहीन गृह, दानहीन सम्पत्ति जैसे व्यर्थ होती है, ठीक उसी प्रकार शिवहीन समस्त क्रियाएँ व्यर्थ होती हैं ।

मन्त्रीरहित राज्य, वेदविहीन ब्राह्मण, स्त्रीरहित सुख जैसे व्यर्थ हैं, ठीक उसी प्रकार शिवविहीन समस्त क्रियाएँ व्यर्थ हैं ।

पापक्षयकराश्चापि चतुर्वर्गफलप्रदाः ।

यासां च दर्शनाद् ध्यानाद् वन्दनात् पूजनादपि ॥

अर्थ—जो व्यक्ति दर्शन, ध्यान-वन्दन तथा पूजन आदि करता है उस व्यक्ति के पाप को काशी नष्ट करती है तथा चतुर्वर्ग फल धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष देती है ।

प्राणप्रयाणसमये प्राप्य ज्ञानं महेश्वरात् ।

मुच्यन्ते जन्तवः सर्वे बद्धाः स्वाभाव्यविद्यया ॥

अर्थ—प्राण छूटने की बेला में भगवान् शिव से ज्ञान प्राप्त कर स्वाभाव्य अविद्या से जो बद्ध हैं वे सब प्राणी मुक्त हो जाते हैं ।

पूजयित्वा महादेवं काशीनाथं जगद्गुरुम् ।

चतुर्विधश्च ये जीवा ये च वेदादयः परे ॥

ते सर्वे मुक्तिमायान्ति काश्यां स्थावरजंगमाः ।

अर्थ--जगद्गुरु काशी (विश्वनाथ) महादेव जी को जो लोग पूजा करते हैं। वे चार प्रकार के जीव, चार प्रकार के वेद, वे सत्त्वावर, जङ्गम काशी प्राप्त कर मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

यैर्दृष्टा यैः श्रुता काशी यैः स्मृता कीर्तिता तथा ।

त एव वन्द्याः पूज्याश्च कृतार्थाः मुक्तिभागिनः ॥

(का० रहस्य २६) ॥८६॥

अर्थ--काशी को जिन्होंने देखा, सुना, स्मरण किया है काशी का कीर्तन (हरहर महादेव शम्भो, काशी विश्वनाथ गंगे) किया वे ही वन्दनीय हैं, पूजनीय तथा मुक्ति के भागी हैं।

दर्शनाद् देवदेवस्य ब्रह्महत्या प्रणश्यति ।

प्राणानुत्सृज्य तत्रैव मोक्षं प्राप्नोति मानवः ॥

(महाभारत) म

अर्थ--पुलस्त्य जी श्रीभीष्म जी से कहते हैं कि देवों के देव श्री महादेव जी का दर्शन करने से ब्रह्महत्या का नाश होता है अर्थात् प्राणी ब्रह्महत्या के पाप से रहित हो जाता है तथा काशी क्षेत्र में प्राण त्याग करने पर मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है।

तीर्थान्तराणि कलुषाणि हरन्ति सद्यः

श्रेयो ददत्यपि बहु त्रिदिवं नयन्ति ।

पानावगाहनविधानतनुप्रहाणै—

वाराणसी तु क्रुद्धे बत मूलनाशम् ॥

(का० खण्ड)

अर्थ--अन्य तीर्थों में स्नानादि करने से प्राणियों के पाप तत्का नष्ट हो जाते हैं और पुण्य लाभ होने से स्वर्ग की प्राप्ति भी होती है।

पुण्य क्षीण होने पर पुनः मृत्युलोक में आने का भय रहता है, परन्तु काशीपुरी में उत्तर वाहिनी भागीरथी गङ्गा में स्नान और गङ्गाजल का पान तथा काशी में काशी पास और जन्म लेने, शरीर त्याग करने से तो वह जन्म, मृत्युरूप भवसागर का मूल ही नष्ट हो जाता है, अतः वह प्राणी शिव-स्वरूप होकर मोक्ष पद को प्राप्त हो जाता है।

मुक्तिक्षेत्राणि सर्वाणि यत्संसेव्योदितं फलम् ।

पञ्चरात्रान्तरात्रास्तु निषेव्य मणिकर्णिकाम् ॥

(का० रह० अ० २६)

अर्थ—अन्य मुक्ति क्षेत्र के सेवन करने से जो फल प्राप्त होता है। उससे हजार गुना अधिक फल काशी में जितेन्द्र होकर नीजक रहकर पाँच रात्रि तक मणिकर्णिका घाट में स्थान करके विश्वनाथ आदि देव मन्दिरों का दर्शन करते हुए पाँच रात्रि काशीवास करने से उसकी केजहाँ कहीं भी मृत्यु हो, उनकी सद्गति होती है।

एक एव प्रभावोऽस्ति क्षेत्रस्य परमेश्वरि ।

एकेन जन्मना देवि मोक्षं पश्यन्तमनुत्तमम् ॥७०॥

(मत्स्य पुराण अ० १८५)

अर्थ—हे परमेश्वरि ! इस काशी क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि एक ही जन्म में मनुष्य परमश्रेष्ठ मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

धर्मार्थिकाममोक्षाख्यं पुरुषार्थचतुष्टयम् ।

अखण्डं हि यथा काश्यां न तथान्यत्र कुत्रचित् ॥८५॥

(स्कन्द पुराण अ० ३)

अर्थ—पराशर जी ब्रह्मर्षि सूत जी को सम्बोधित करते हुए

कहते हैं कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ काशी में जैसे अखण्ड हैं, वैसे दूसरी जगह नहीं है ।

अन्येषामपि पापानां महापापजुषामपि ॥८॥

निर्वाणनगरी काशी काशी सर्वाघसङ्ग्रहत् ।

विश्वे शिवप्रिया काशी द्यौः काशी सादृशो नहि ॥१०॥

(का० खण्ड अ० ८१)

अर्थ—सभी पापों तथा महापापियों की भी मोक्ष नगरी काशी है, सभी पापों को संहरण (मुक्ति देने वाली) करने वाली काशी विश्वनाथ जी की परम प्रिय काशी है, काशी के समान स्वर्ग नहीं है ।

सूर्यस्यापि भवेत् सूर्यः अग्नेरग्निः प्रभो प्रभुः ।

श्रियः श्रीश्च भवेदग्या कीर्तिः कीर्त्याः क्षमाक्षमा ॥

अर्थ—काशी सूर्य का भी सूर्य है, अग्नि का भी अग्नि है, प्रभु का भी प्रभु है, लक्ष्मी का भी लक्ष्मी है, कीर्ति की भी कीर्ति है और क्षमा का भी क्षमा है ।

ऐसी काशी के प्रति भगवान् सदाशिव विश्वनाथ का अनुरक्त होना स्वाभाविक है, जिस काशी के रहस्य को जानना अत्यन्त कठिन है ।

सहस्रकार्याणि विहाय काश्यां

काशीगुणान्संशृणुयाद्यथावत् ।

काश्याः स्वरूपं प्रबुध्यते यैः

श्रद्धारतिः पापनिवृत्तिरुद्भवेत् ॥

(काशी रहस्य अ० ६, श्लोक ५५)

अर्थ—हजारों कार्यों को छोड़कर काशी में निवास करते हुए विधिवत् काशी के गुणों की कथा को सुनना चाहिए। जो काशी क्षेत्र के स्वरूप को भली-भाँति समझ लेते हैं उनकी काशी के प्रति श्रद्धा तथा प्रेम हो जाता है तथा पापों से छुटकारा मिल जाता है।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ॥

भावार्थ—जो अपने से बड़ों का अभिवादन करता है। (आदर सहित प्रणाम करता है), सदैव वृद्धों की सेवा करता है (वृद्ध चार प्रकार के कहे गए हैं—आयुवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, धर्मवृद्ध और वैराग्यवृद्ध—इनकी सेवा-सुश्रूषा करने वालों का), आयु, विद्या, यश और बल—ये चार उसके निरन्तर बढ़ते हैं अर्थात् ऐसे सत्पुरुष आरोग्ययुक्त हो दीर्घजीवी होते हैं, वे ज्ञानी होते हैं, वे यशस्वी होते हैं और उनका शारीरिक, चारित्रिक, नैतिक, सार्वजनिक और आर्थिक बल सदैव बढ़ता है।

प्रत्येक दृष्टि से काशी की महिमा सर्वातिशायिनी है। जो व्यक्ति इस 'काशी-मुक्ति-निर्णय' का पारायण सद्वृत्तियों सहित करेगा, उसकी बुद्धि अत्यन्त निर्मल होगी और यदि वह काशी में नहीं भी निवास करता तो वृद्धों की सेवा के प्रभाव से वह निश्चय ही शिव-सायुज्य प्राप्त करेगा।

उत्तर वाहिनी गङ्गा जी में स्नान करने से जो फल मिलता है। वह काशी तीनों लोकों से न्यारी है। काशी पृथ्वी में दिखाई पड़ती है,

परन्तु धर्म शास्त्रों में काशी पृथ्वी से न्यारी कही गई है। काशी त्रिशूल की नोक के ऊपर पंचक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग है और उसके आस-पास मिट्टी है, मिट्टी के ऊपर तीर्थ, मन्दिर, देवालय, धर्मशाला, गोशाला और मकान आदि बने हुए हैं। प्रलय के समय में सारी पृथ्वी जल में डूब जाती है। उस समय त्रिशूल के ऊपर पंचक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग जल के ऊपर प्रकाशित होते हैं। अमर देवता ज्योति के रूप में काशी का दर्शन करते हैं।

टूटी हुई मूर्तियों का निर्णय

टूटी-फूटी मूर्तियों की जगह पर सटे हुए बगल में विशाल मूर्ति की स्थापना करनी चाहिए। पुरानी मूर्तियों के नाम से स्थापना करके मन्दिरों का जीर्णोद्धार कर दें और जीर्णोद्धार कर दर्शन-पूजा का पथ सहित संवत् आदि पत्थर में लिख देना चाहिए। जिस मन्दिर में बड़ी छोटी जीर्ण मूर्ति है उसी मूर्ति से सटी हुई विशाल मूर्ति बगल में स्थापना करके मन्दिर का जीर्णोद्धार कर विशाल मन्दिर बना दें चाहिए। जितनी मूर्तियाँ जमीन के नीचे गड्ढे में विराजमान हैं, वे मूर्तियों के चारों ओर पक्की दिवाल उठा कर पूजा, अर्चना करें और साथ ही ऊपर उसी नाम से विशाल मूर्ति-स्थापना करके विशाल मन्दिर बनाकर पूजा, आरती, प्रसाद आदि की व्यवस्था करें चाहिए।

सामाजिक सम्मेलन

वेद और पुराणों में लिखा है कि कलियुग में सामाजिक कलह, कीर्तन तथा वेद, पुराण, उपनिषद् एवं श्रीमद्भागवत, गीता, रामायण आदि का विशाल कथा सम्मेलन करना चाहिए। जिनको अ

धर्म का ज्ञान नहीं है, जो स्वकर्म को नहीं जानते हैं, ऐसे अनपढ़ अज्ञानी मनुष्यों के लिए सत्संग आवश्यक है, जिसने जीवन में तपस्वी, साधक, सिद्ध, साधु महात्मा तथा विद्वानों के दर्शन नहीं किये हैं, कठोर से कठोर हृदय वाला होने पर भी कथा, यज्ञ, कीर्तन, सम्मेलन में जाकर दर्शन करते ही उसका मन पिघल जाता है। सत्संग में किसी न किसी वेश में सिद्ध सन्त, साधु और पितर, देवता सब आते हैं। उनका दर्शन होते ही वह गुमराह व्यक्ति अपने धर्म के अनुसार मुख्य धारा में सम्मिलित हो जाता है। उस दिन से उपासना करना प्रारम्भ कर देता है। वह दृश्य देखते ही उसमें जन्म-जन्मान्तर के धार्मिक संस्कार जागृत होते हैं। वह स्त्री, पुरुष इसी जीवन में धर्म, अर्थ एवं काम, मोक्ष चारों पदार्थ प्राप्त कर लेता है।

काशी की महिमा

तीनों ही लोक से न्यारी त्रिशूल की

नोक पै शंभु सजाये हैं काशी ।

भागीरथी अघ नासति भेद है,

बिम्ब निहारे सदा अविनासी ॥

देवन में जहँ होड़ लगी,

नभयान चढ़े निरखें सुखराशी ।

धन्य है जो निसिवासर सेवत,

देवता तुल्य यहाँ के निवासी ॥

काशी सदा रजधानी धर्म की,

मानवता नहीं फूली समाती ।

ज्ञान को ज्योति मिली जग को,

तपपूत ने ऐसी जलाई है बाती ॥

मठ, मन्दिर, पीठ यहां कितने,

जनरक्षित हैं जहां धर्म की थाती ।

काशी की क्या महिमा कहिए,

गुण गाती है वाणी कभी न अघाती ।

शिव पूजा का फल

जल के चढ़ाये यमलोक से उबार लेत,

चन्दन के चढ़ाये चक्रवर्ती करि देत हैं ।

चावल के चढ़ाये लोक चौदहों बकसि देत,

दीप के दिखाए सातों द्वीप देइ देत हैं ॥

भांग और धतूर के चढ़ाये निज पुरी देत,

बेल के चढ़ाए सदा संग करि लेत हैं ॥

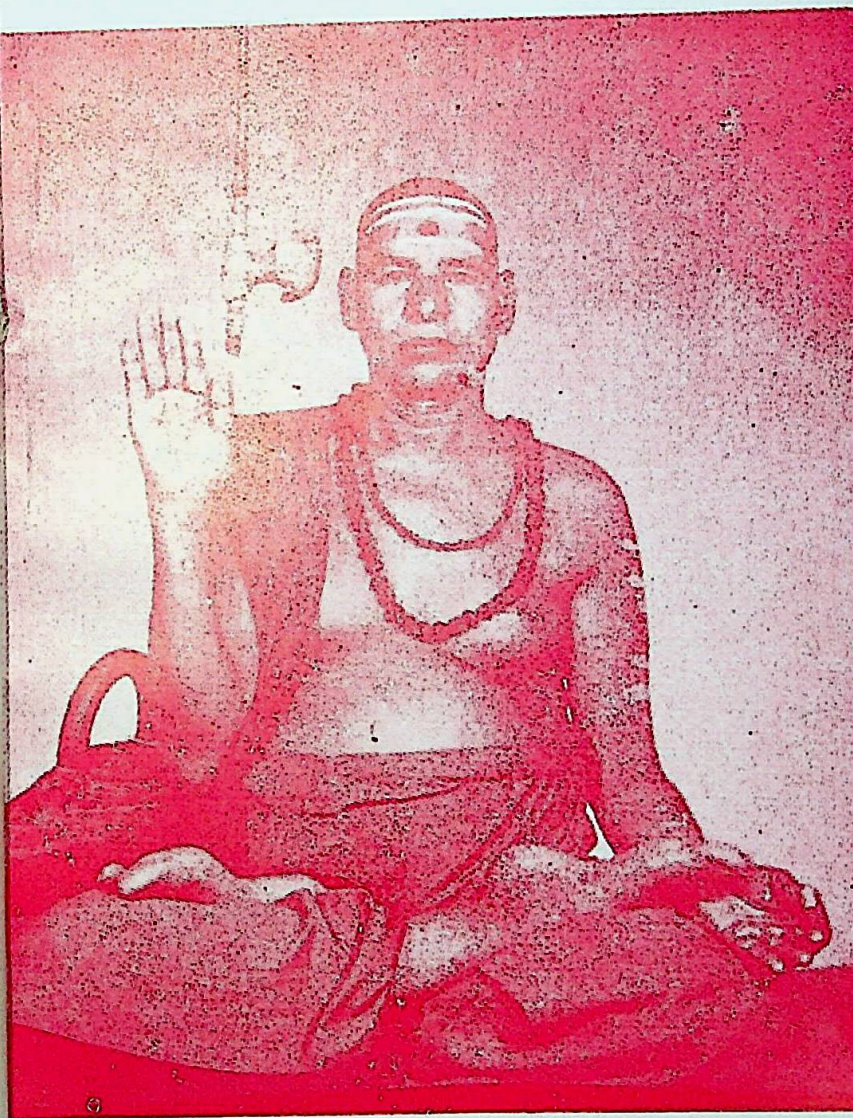
हर हर कहते हर हरत कलेश सदा,

गाल के बजाये तो निहाल करि देत हैं ॥

विश्वनाथ मम नाथ पुरारी, त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी

कासी मरत जन्तु अवलोकी, जासुनाम बल करहुं विसोकी ।

आकर चारि जीव जग अहहीं कासी मरत परमपद लहहीं ॥



दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती



मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान खानि अघहानिकर ।

जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ।

सेइय सहित सनेह देह भरि । कामधेनु कलि काशी ॥

काशी मरत जन्तु अवलोकी । जासु नाम जपि भयउ बिसोकी ॥

जासु नाम बल संकर कासी । देत सबहि समगति अविनाशी ॥

गुरु पितु मातु महेस भवानी । प्रनवऊँ दीनबंधु दिनदानी ॥

दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती महाराजजी का संक्षिप्त जीवन-परिचय

अयोध्या के हनुमानगढ़ी में शंकरप्रसाद उपाध्याय जी के पुत्र भोलानाथ उपाध्याय हुए । माता जी का नाम उमा देवी था । भोलानाथ जी ज्योतिर्मठ के जगद्गुरु शंकराचार्य ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के शिष्य थे । भोलानाथ जी को ३५ वर्ष की अवस्था तक कोई सन्तान नहीं थी । भगवान् की कृपा से भोलानाथ जी को वैराग्य हुआ, वे गाँव के बड़े जमींदार थे । वे अपनी सम्पत्ति अपने चाचा को देकर काशी में आ गए । ब्रह्मनाल में काशीवास करने लगे और अन्नक्षेत्र खोलकर साधु-महात्माओं एवं संन्यासियों को बना हुआ दिव्य भोजन (भिक्षा) कराते रहे । इसके साथ ही सभी वर्गों के गरीबों को प्रतिदिन एक-एक किलो सीधा, (अन्न देते) रहे । वे सभी सन्तों, साधुओं, महात्माओं, संन्यासियों, तपस्वियों, साधकों, अनुष्ठान करने वालों और अग्निहोत्र आदि की कुटिया आश्रमादि (मठ) में जाकर

पत्नी सहित दर्शन करते थे। दर्शन के पश्चात् किस महात्मा के पास किस वस्तु की आवश्यकता है, स्वयं समझकर, स्वयं महात्माओं के पास पहुँचाते थे। इस प्रकार निष्काम सेवा करते हुए साढ़े तीन वर्ष व्यतीत हो गया। जिस दिन साढ़े तीन वर्ष पूर्ण हुआ उसी दिन प्रातः आठ बजे एक दण्डी स्वामी संन्यासी दण्ड और कमण्डल हाथ में लिटा हुए (वृद्ध किन्तु तेजपूर्ण, प्रकाशमान मुखमण्डल, शरीर से दिव्यका तेज स्फुरित हो रहा था) महात्मा उस गली से जा रहे थे, जिस गर्लका के बरामदे में भोलानाथ पत्नी सहित बृहदारण्यक उपनिषद् का पाठ कर रहे थे। उनकी दृष्टि अचानक स्वामी जी के ऊपर पड़ी। दोनों उठकर खड़े हो गए और स्वामी जी को अपने यहाँ लाने के लिये दौड़ पड़े। स्वामी जी का चरण धोकर आसन पर बैठाये, मिष्ठानि आदि उन्हें अर्पण किये। प्रसादस्वरूप फल, मिठाई और लोगों के स्वामी जी ने बाँट दिए, बाद में उमा देवी बोलीं—स्वामी जी कोई पुत्र नहीं है। आप मुझे पुत्र का आशीर्वाद दीजिए। स्वामी अपनी झोली से एक सेब निकालते हुए बोले—‘यह फल खाओ तुम भगवान् का भक्त पुत्र उत्पन्न होगा।’ इस प्रकार कहते ही वे कुछ दूर जाकर अन्तर्धान हो गये। दस महीने के पश्चात् सन् उन्नीस सौ बत्तीस (१९३२ ई०) सम्बत् १९८९ वि० के माघ शुक्ल वसन्त पंचमी के दिन प्रातः ४ बजे उमा देवी और भोलानाथ मणिकर्णिका घाट पर स्नान करके काशी विश्वनाथ जी के दर्शन नित्ययात्रा करने के पश्चात् घर में (जाकर) संन्या करके के शिवमन्दिर में पूजा-पाठ किये। बाद में उमादेवी भगवान् नारायण को अपने आँगन में खड़ी होकर अर्घ्य दे रही थीं, उसी

समय उन्हें पेट में ददं उठा तथा बिना किसी तकलीफ के शिवनारायण नामक बालक जमीन पर गिर पड़ा। शिवप्रिय और हरिप्रिय नाम की दासियों को बुलाकर उमा देवी उस बालक को अन्दर ले आईं। उसी समय गाय, जमीन, मकान, सोना, चांदी और वस्त्र इत्यादि दान करके बालक का संस्कार प्रारम्भ हुआ। शिवनारायण बाल्य-काल से ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। वे यज्ञ, कीर्तन इत्यादि धार्मिक कार्यों में मन लगाते थे। ७ वर्ष की अवस्था से रामलीला में राम भवनने लगे, राम का पाठ करते थे। उमा देवी बालक को लेकर मन्दिर में, गङ्गा स्नान और साधु, संन्यासी-महात्माओं के दर्शन करने जाती थीं और साधुओं से आशीर्वाद दिलाती थीं। शिवनारायण को उनके पिताजी ने उनका उपनयन संस्कार साढ़े सात वर्ष की अवस्था में करवाया। व्रतबन्ध के पश्चात्, अपने पिताजी की आज्ञा से वे नित्यप्रति अपने पिता के (औषधालय) अस्पताल में जाकर रोगियों का दर्शन कर, नमस्कार करने के पश्चात् रोगियों और वृद्धों की सेवा करते थे।

९ वर्ष की अवस्था में इनके पिताजी काशी ब्रह्मनाल मुहल्ले में ब्रह्मलीन हो गये। अपने पिता के नाम पर ११ और बारहवें दिन शैय्या, मकान, जमीन एवं गाय इत्यादि दान करके भोज-भण्डारा कराने के पश्चात् माता जी की सेवा और उनकी आज्ञा का पालन करते हुए शिवनारायण जी सनातन वैदिक धर्म का प्रचार करने लगे तथा तीर्थ, जलाशय, मन्दिर और धर्मशाला, संस्कृत विद्यालयों का जीर्णोद्धार करने लगे। इस प्रकार धार्मिक कार्य करते हुए साधु-महात्माओं के संग और सेवा कर रहे थे। अयोध्या के लक्ष्मण

किला में स्वामी करपात्री महाराज आये हैं, यह सुनकर इनका माता जी इन्हें लेकर स्वामी करपात्रीजी महाराज के पास जाकर दर्शन और ॐ नमोः नारायण प्रणाम करने के पश्चात् उमा देवी बोलों-यह मेरा पुत्र है, पुत्र का हाथ पकड़ कर मैं इसे आप के चरणों में समर्पित करती हूँ।

सन् १९४९ ई० की रामनवमी तिथि के दिन गुरु जी की कृपा से शिव दीक्षा प्राप्त हुई। इनका नाम शिवचैतन्य ब्रह्मचारी पड़ा। इनके गुरु जी ने इन्हें हरिद्वार में स्वामी योगानन्द जी के पास पत्र लिखकर अष्टाङ्ग योग सिखाने के लिये भेजा। इन्होंने थोड़े ही दिनों में योग की शिक्षा प्राप्त कर ली।

सन् १९५० ई० के आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया तिथि के दिन कुल पुरोहित के आज्ञानुसार तीर्थयात्रा प्रारम्भ हुई। पहले दिन नान्द श्राद्ध करके ब्राह्मणों को भोजन कराये। चाचा जी, माता जी के साथ में लेकर कुल-पुरोहित और पाँच लोगों को लेकर तीर्थों पर स्नान, मन्दिरों तथा सन्त महात्माओं के दर्शन हेतु चल पड़े। वेदपाठ ब्राह्मण, वेदों की स्तुति करते हुए आगे-आगे चल रहे थे। वे वैदिक ब्राह्मण श्री नागेश्वर जी के मन्दिर तक गये, नागेश्वर जी के दर्शन पूजन करके माता जी को लेकर काशी गये। काशी के मणिकर्णिक घाट पर स्नान कर, सन्ध्या, देव, ऋषि और पितृ तर्पण करके श्राद्ध किये। श्राद्ध के समय एक चमत्कार हुआ।

पिण्ड को वेद मन्त्र के द्वारा पिण्डदान करके जब पत्तल पर रख रहे थे उसी क्षण पत्तल के ऊपर दोनों हाथ फैला

हुए केवल हाथ पितरों का दिखलायी पड़ा। उसी समय आकाश से कमल का सफेद फूल पिण्ड के ऊपर आ पड़ा। पुरोहित जी बोले— पितर प्रसन्न हो गये। श्राद्ध के पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन कराकर वस्त्र, दक्षिणा आदि देकर के ब्राह्मणों से आशीर्वाद लेकर उस दिन घर में रहे। दूसरे दिन पिशाचमोचन तीर्थ में स्थान करके कपर्दीश्वर से सटे हुए पश्चिम बगल में कुण्ड के पास श्राद्ध कर रहे थे।

जब पिण्डदान करके पिण्ड को हाथ से उठा करके पत्ताल पर रखने जा रहे थे उसी समय एक दृश्य दिखाई पड़ा। पिशाचमोचन तीर्थ कुण्ड के अन्दर जल भरा हुआ था। उसी जल में कमर तक के जल में लाइन में लगभग २५ पुरुष और बहुत-सी स्त्रियाँ दिखाई पड़ीं। थोड़ी देर के पश्चात् जल में खड़े वे सब अन्तर्धान हो गये। कुल पुरोहित ज्ञानानन्द पाण्डेय जी बोले, तुम्हारे जितने पितर अपने कुकर्म से पिशाच हो गये थे वे वह सब पिशाच योनि से मुक्त हो गये। श्राद्ध करके ब्राह्मणों को भोजन कराये, वस्त्र, दक्षिणा आदि देकर ब्राह्मणों को प्रसन्न कर दिये।

काशी में तीन दिन तक साधु ब्राह्मणों को (भोज) भण्डारा कराया गया। काशी में तीन रात्रि रहकर गया जी के विष्णु पादुका में श्राद्ध कर रहे थे। वे पिण्ड हाथ में लिए हुए थे। ब्राह्मण मन्त्र बोल रहे थे, उसी समय एक घटना घटी। पहले आवाज सुनायी पड़ते ही सामने दाहिना हाथ फैला हुआ दिखाई पड़ा। पिण्ड को पत्ताल पर रखते ही एक कनेर का सफेद फूल पिण्ड के ऊपर आ पड़ा। यह दृश्य देखकर सभी प्रसन्न हुए।

(नोट—मनुष्य मात्र को काशी जी में और गया जी में श्राद्ध करने के लिए जाना चाहिए, चूँकि जो व्यक्ति यहाँ दिव्य भोजन, मिष्ठान्न

आदि का दान नहीं करता तथा दूध, जल इत्यादि पेय वस्तु का दान नहीं करता है। वह मनुष्य मरकर पितर लोक में जाने के पश्चात् भूख, प्यास से व्याकुल रहता है। इसका प्रमाण गरुड़ पुराण लिखा है। सबके पितर प्रतीक्षा करते हैं कि कब मेरे पुत्र, पौत्र प्रपौत्र काशी और गया जी में जाकर तर्पण, श्राद्ध आदि करें कब मैं तृप्त होऊँगा ? कहते हैं, जिसके पितर प्रसन्न रहते हैं उस घर में धन, सम्पत्ति, शील और सुख एवं शान्ति का स्रोत आ जाता है। सबको पितर-मरण के दिन श्राद्ध करना अनिवार्य है। ब्रह्मी नारायण श्राद्ध करने जाना अनिवार्य नहीं है क्योंकि ब्रह्मीनारायण समय-समय पर लुप्त होते हैं। काशी, गया जाना अनिवार्य है।) इस प्रकार तीर्थ यात्रा करते हुए गुजरात के सिद्धपुरनाम के मातृ तीर्थ में पहुँचे। दूसरे दिन मातृ तीर्थ में स्नान करके तर्पण श्राद्ध कर रहे थे पिण्डदान करते ही एक अति वृद्धा कुबड़ी जिसका सिर नीचे की ओर झुका था, एक हाथ में (सोटा) लाठी ली हुई थी, वहीं दिखाई पड़ी वह बोली—“बेटा, मैं बहुत दिन से प्रतीक्षा कर रही थी” इतना कहती वहीं अन्तर्धान हो गई। किधर से आई किधर गई, किसी को पता नहीं लगा,। सब आश्चर्यचकित हो गये। गुजरात में अवध भाषा बोली। इसी प्रकार तीर्थ, मन्दिर, सन्त-महात्माओं के दर्शन करते हुए भारत, नेपाल आदि की तीर्थ यात्रा करने के पश्चात् घर में आकर दूसरे दिन यज्ञ और कीर्तन करके तीर्थयात्रा का समापन किये। साक्षात् ब्राह्मण को भोजन कराकर पुनः सबको भोजन कराये।

नोट—तीर्थ यात्रा करने जाते समय विद्वान् को तीर्थ श्राद्ध कराने लिए साथमें ले जाना चाहिए और पण्डा को कुछ रुपया देना चाहिए।

चन्द्रग्रहण में माता जी को अयोध्या से लेकर काशी आये । दूसरे दिन मणि हार्णिका घाट पर स्नान करके देव, ऋषि, पितृतर्पण करके संध्या कर, दर्शन-पूजन करते हुए उपशान्तेश्वर के मन्दिर में दर्शन, पूजा करने के पश्चात् मन्दिर में, जहाँ और माताएँ कीर्तन कर रही थीं ।

वहीं इनकी माता जी भी कीर्तन करने लगीं । कीर्तन करती हुई वे बेहोश होकर गिर पड़ीं. सन् १९५० के फाल्गुन शुक्ल द्वितीया तिथि के दिन उप-शान्तेश्वर के मन्दिर में ही वे ब्रह्मलीन हो गयीं । ११ और बारहवें दिन माताजी के नाम से शैय्या, मकान, जमीन, गो इत्यादि दान दिये । ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणा देकर प्रसन्न किये ।

माता जी का वार्षिक श्राद्ध करने के पश्चात् मातृ, पितृ और देव-ऋषि ऋण से मुक्त होने के पश्चात् ब्रह्मचारी शिवनारायण जी को तीव्र वैराग्य हुआ । उन्होंने अपनी सारी संपत्ति तीन भागों में बाँटकर—गरीब ब्राह्मणों, एवं नौकरों और पट्टीदारों को बाँटना शुरू कर दिया । यह देखकर सब कहने लगे कि भोलानाथ का लड़का तो पागल हो गया है । गाँव के लोग शिवनारायण जी को आकर समझाने लगे । उसी समय कुल पुरोहित पं० रामप्रसाद पाण्डेय जी आये और सबको समझाने लगे । ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इनको तीव्र वैराग्य होगा, यह घर छोड़कर तपस्या करने चला जायगा । कहे इनको तीव्र वैराग्य हुआ, इन्होंने शिवरात्रि के दिन शिव पञ्चाक्षरी महामन्त्र का जप और रुद्राभिषेक करते हुए रात्रि में जागरण किया । प्रातः संध्या आदि कर्म से निवृत्त होकर सर्वत्याग यज्ञ करके अपने पुरोहित तथा अन्य ब्राह्मणों को जमीन, मकान, गाय और चल,

अचल सम्पत्ति तथा अपना वस्त्र सहित दान करके एक कौपीन, एक कटिवस्त्र एवं उपवस्त्र लेकर साधु, गौ, ब्राह्मणों को आगे कर रहे चले। साथ में वैदिक वेदपाठी ब्राह्मण वेदों की स्तुति करते हुए चले रहे थे। हितैषी, मित्रवर आँसू बहा रहे थे। उस समय का दृश्य अलौकिक और अवर्णनीय है। नागेश्वर के मन्दिर तक वेदों से मंगल स्तुति करते हुए ब्राह्मण गये। ये नागेश्वर के मन्दिर में दर्शन, पूजा कर काशी के मणिकर्णिका घाट पर स्नान कर काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करके, उत्तराखण्ड चले गये।

संयोगवश इन्हें गोरखपुर में देऊ बाबा के दर्शन करने जाना पड़ा। यात्री मिले। नारायणी के तट पर देऊ बाबा के दर्शन करते हुए प्रसन्न हुये ब्रह्मात्मा-साक्षात्कार कंसे होगा प्रश्न किए ? देऊ बाबा ने तपस्या, उपासना, पुरश्चरण और साधना की शिक्षा प्राप्त करके देऊ बाबा की आज्ञा के अनुसार नेपाल के मुक्तिनाथ जी जाते समय कृष्ण गण्डकि गंगाजी के किनारे ज्ञान चैतन्य ब्रह्मचारी जी ब्रह्मगायत्री का पुरश्चरण कर रहे थे। उन्होंने कहा—आप यहाँ पर रह कर लाख ब्रह्मगायत्री का पुरश्चरण करिये। उनकी आज्ञा से गंगा जी के पास में ही खर की कुटिया में पद्मासन में बैठकर जप कर रहे थे। उसी समय एक व्यक्ति आकर इन्हें अनेक प्रकार की गाली देने लगा तथा कुटिया में दो लाठी मारा, वे तो जप कर रहे थे। गाली के उनपर कोई असर नहीं पड़ा, परन्तु गायत्री माता सह न सकी उसी समय गाली देने वाले के घर में आग लग गयी। उस समय पद्मासन में बैठकर ५ हजार ब्रह्मगायत्री जप करने का नेम बना था जप पूर्ण होने के पश्चात्, आग बुझाने के लिए स्वयं गये और

गायत्री माता से प्रार्थना करने लगे। लोगों ने पूछा, यह तो गाली दे रहा था। वे बोले गाली देने वाला तो बहुत भाग्य से मिलता है। ब्रह्मचारी जी से गायत्री पुरश्चरण के विषय में शिक्षा प्राप्त करके वे चले। मुक्तिनाथ जी के दर्शन, पूजा करने के पश्चात् मुक्तिनाथ जी से धौलागिरि पर्वत की सिद्ध गुफा में जाकर तपस्या करने लगे। भूख लगने पर जंगल के पत्ते खाकर, झरने का जल पीते हुए रहने का निश्चय किये। जिस दिन गुफा में पहुँचे उसी दिन सूर्य अस्त होने के पश्चात् वनदेव जी की आकाशवाणी हिन्दी में सुनाई पड़ी। शिवचैतन्य ब्रह्मचारी जी, मेरा घर यहीं पर है। मैं आपकी हर प्रकार से रक्षा कळंगा आप निश्चिन्त होकर भजन करें। यह आवाज सुनकर चारों तरफ देखे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा। चारों तरफ तीन किलोमीटर तक कहीं मनुष्यों की वस्ती नहीं थी। दूसरे दिन ब्रह्म गायत्री पुरश्चरण प्रारम्भ हुआ।

जब वे पुरश्चरण करते थे उस समय मन्त्र के अधिष्ठाता देवता आकर दर्शन देते थे।

नोट—जंगल में रहकर तपस्या करने वाले साधक को निम्न-लिखित साधना करनी चाहिए। जिस जगह में उसे रहना हो उससे २५ मीटर दूर पर पेड़ के नीचे या पत्थर में लतापत्तों से सजाकर मन्दिर जैसा बनाकर वनदेव एवं वनदेवी जी का मन से आह्वान करे।

प्रार्थना करने से वनदेव भक्त की भावना के अनुसार रक्षा करते हैं और सब व्यवस्था करते हैं। (उसी प्रकार जो गाँव वाले ग्रामदेवता

के दर्शन, पूजन और मन्दिर का जीर्णोद्धार कराते हैं उनके घर में सम्पत्ति, सुख और शान्ति स्वतः आ जाती है तथा स्थिर लक्ष्मी में निवास करती हैं।) सिद्ध गुफा में रहने पर वनदेव-वनदेवी आते उनकी रक्षा करने लगे। जंगल में बाघ, भालू गरजते थे, उनकी परीक्षा ले रहे थे। कस्तूरीमृग झुण्ड के झुण्ड गुफा के पास आते रहने लगे। वहाँ पाँच वर्ष में ब्रह्मगायत्री का दो पुरश्चरण पूर्ण किया पुरश्चरण करते समय कभी-कभी गायत्री माता दर्शन देती थीं। गायत्री पुरश्चरण की पूर्णाहुति के दिन एक जटाधारी महात्मा आकर बोले, तुम नेपाल के पशुपतिनाथ जी के दर्शन करके गोमुख के ऊपर शिवपुरी में जाकर तपस्या करो। इष्टदेव की आज्ञा पाकर वनदेव वनदेवी से आज्ञा लेकर के वे पशुपति नाथ जी के दर्शन करके शिवपुरी में जाकर पत्तो की कुटिया बनाकर रामषडाक्षरी ॐ राङ्ग्रामाय नमः महामन्त्र का पुरश्चरण करने लगे। वे जंगल के बिच्छूघास, नेपाल भाषा में जिसे सिस्नो कहते हैं और नेपाल में काऊलो नाम का पेड़ का छिलका निकाल कर उसकी रोटी बनाकर प्रसाद पाते थे वहाँ अन्य बहुत से पौधे, पत्ते और कन्द-मूल जमीन में होते हैं। अष्टमि के पश्चात् दिन में २ बजे सिस्नो नाम के बिच्छू पौधे के पत्ते चिमटे से तोड़कर जल में उबालकर बिना नमक का भगवान् को अर्पण करके प्रसाद पाते थे। पुरश्चरण करते समय रामचन्द्र जी के बराबर दर्शन होता था।

तीन वर्षों में रामषडाक्षरी महामन्त्र का पाँच पुरश्चरण पूर्ण हुआ उसी दिन वहाँ वहीं इष्टदेव आकर बोले, तुम केदार जी के पास जाकर तपस्या करो। वनदेव-वनदेवी जी से आज्ञा लेकर गढ़वा

उत्तराखण्ड में केदारेश्वर के दर्शन कर बगल की गुफा में शिवपञ्चाक्षरी महामन्त्र का पुरश्चरण करते हुए ये रहने लगे। जल पीकर, कन्द-मूल खाकर तपस्या करने लगे। ४ मास पर्यन्त बर्फ से गुफा ढक जाती थी। पानी जम जाता था। बर्फ पिघलाकर जल पीते थे। वहाँ रहकर 'ॐ नमः शिवाय' पञ्चाक्षरी महामन्त्र का सात बार पुरश्चरण किये, शंकर भगवान् का साक्षात् दर्शन होता था। ४ वर्ष में, जिस दिन सातवाँ पुरश्चरण पूर्ण हुआ उसी दिन इष्टदेव बोले—तुम जम्मू के वैष्णवी देवी के मन्दिर के पास में रहकर "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्च्वै" नवार्ण महामन्त्र का पुरश्चरण करो। आज्ञा पाते ही प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर केदार जी के दर्शन करके वनदेव-वनदेवी जी से आज्ञा लेकर जम्मू-कश्मीर के वैष्णवी देवी जी के दर्शन करके बगल के गुफा में पुरश्चरण रूप महायज्ञ प्रारम्भ हुआ। दो पुरश्चरण जिस दिन पूर्ण हुआ, दो वर्ष लगे। दुर्गाजी सदा दर्शन देती थीं।

उसी दिन इष्टदेव बोले, तुम बदरीनारायण में जाकर गढ़वाल उत्तराखण्ड में विष्णु महामन्त्र का पुरश्चरण करो। इष्टदेव की आज्ञा पाकर वैष्णवी देवी से बद्रीनारायण के लिए चल पड़े। बदरिकाश्रम में विष्णु भगवान् का दर्शन कर भृगु गुफा में जाकर विष्णु भगवान् जी के महामन्त्र "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" का पुरश्चरण प्रारम्भ किये।

विष्णु भगवान् का उन्हें दर्शन होता रहा। यहाँ रहकर वे ३ वर्षों में पाँच पुरश्चरण किए। जिस दिन तीन वर्ष पूर्ण हुए उसी रात्रि में उन्हें स्वप्न हुआ। स्वप्न में वे काशी के काल भैरव जी के मन्दिर में

दर्शन कर रहे थे। वहीं मन्दिर में इष्टदेव बैठे हुए थे। वे बोले पहले साधु के वेष में दर्शन इष्टदेव देते थे अपने को दण्डपाणि जी कहते थे। अब शंकर जी के रूप में दर्शन देते हैं। तुम कहाँ हो, काशी जाओ। स्वामीजी के इष्टदेव दण्डपाणि जी थे। प्रातः बद्रीनारायण के दर्शन करके वे काशी आये। काशी में भी चमत्कार हुआ, काशी मणिकर्णिका घाट की मणिकर्णिका पुष्करिणी और गंगा जी में स्नान करके कुण्ड के पूर्व बगल के चौतरा पर बैठकर संध्या करने के पश्चात् पञ्चाक्षरी महामंत्र का जप करने लगे। रात्रि के ग्यारह बजे, एक पत्तल की (बड़ी) थाली में खीर और मालपुआ आदि ५६ प्रकार के व्यञ्जन लेकर सात वर्ष की कन्या आकर संस्कृत में बोली—ब्रह्माजी आप भूखे हैं। भोजन कर लीजिए। देववाणी सुनकर वे चौंक उठे और भवानी जी की स्तुति करने लगे। वह कन्या भोजन की थाली को आगे रखकर तत्क्षण अन्तर्धान हो गयी। भवानी जी के प्रसाद पाकर ही उनकी भूख, प्यास, शोक, चिन्ता दूर हो गई। उस प्रसाद को पाकर ही वे आनन्द में डूब गये। अर्हतिश आनन्द में मग्न रहने लगे। प्रातः विश्वनाथ जी के दर्शन करके गुरु जी श्री स्वामी करपात्री हरिहरानन्द सरस्वतीजी महाराज के दर्शन करने के लिए केदारघाट करपात्री धाम में गए। गुरुजी का दर्शन होते ही गुरु जी ने कहा तुम संन्यास ले लो। मुहूर्त आज ही है। संन्यास महायज्ञ प्रारम्भ हुआ। दीक्षा के पश्चात् स्वामी जी ब्रह्मात्म-साक्षात्कार का उपदेश करते हुए बोले—मधुकरी भिक्षा संन्यासियों का सर्वश्रेष्ठ है और अमृत है। संन्यास लेने के पश्चात् अग्निहोत्री महायज्ञ करने वाले ब्राह्मणों से, जो कि उस समय गंगा जल से

जन बनवाते थे, उन उत्तम ब्राह्मणों के घर में स्वामीजी १० बजे ११ बजे के मध्य में भिक्षा लेने जाते थे और द्वार पर खड़े होकर नारायण की आवाज लगाते थे। आवाज सुनते ही सब काम छोड़कर हस्त्य कहते थे, हमारे भाग्य का उदय हो गया। देव, पितर प्रसन्न गये, कहते हुए पुरुष दौड़ कर आते थे और ॐ नमो नारायण कहकर नमस्कार करते थे। माताएँ रसोई में बना ताजा (पदार्थ) जल और जल लेकर दरवाजे पर आकर खड़ी होती थीं। पहले हाथ में जल देतीं और गङ्गाजल के पश्चात् भोजन झोली में छोड़ देतीं, फिर जल हाथ में देती और ॐ नमो नारायण कहकर रसोई में जाती थीं।

वह मधुकरी भिक्षा लेकर स्वामी जी गंगा के किनारे जाते थे। उस समय काशी के अधिकांश घरों में गंगाजल से भोजन बनता था। वह ही झोली में वे दाढ़, भात, तरकारी और रोटी, पूरी, हलुआ, खीर आदि सब कुछ लेते थे (एक घर से पाँच घर तक संन्यासी भिक्षा लेने का विधान है, पाँच घर तक भिक्षा न मिले तो उस दिन उपवास करने का विधान है। दूसरे दिन उसी समय भिक्षा लेने का विधान है। चूँकि किसी घर में जन्म-मृत्यु का आशौच रहता है। किसी घर में भोजन बना ही नहीं रहता और कभी तो लोग भोजन कर चुके होते हैं)।

मधुकरी भिक्षा झोली में लिए हुए गंगा जी में सात बार डूबोकर झोली को बायें हाथ से पकड़कर दाहिने हाथ से जल को निचोड़ कर उस से धोया हुआ पत्थर या जमीन के ऊपर झोली को रखकर अपने ईशदेव को अर्पण करके एक ग्रास अलग रखते थे। दूसरा ग्रास गंगा

जी को अर्पण कर अन्नदेवता को नमस्कार करके भिक्षा ग्रहण कर लेंगे। चौबीस घण्टे में एक बार भोजन करते थे। सबको प्रेरणा दी जाती थी। काशी की प्रदक्षिणा यात्रा पर जाने के लिए निमन्त्रण देते थे।

नोट—तीर्थ पुरोहित अर्थात् और सबको कहते थे काशी में नमस्कार करो। अस्सी घाट के पण्डा होते हुए भी श्री बैजनाथ त्रिपाठिन का वेद, वेदान्त, ज्योतिष के विद्वान् हैं। उनको काशी विश्वनाथ जी की अनन्य भक्ति प्राप्त है। १९८० ई० की श्रावण कृष्ण दशमी तिथि को दो बजे श्री विश्वनाथ जी की अन्तर्गृही यात्रा अपने गुरुजी के करकमलों से स्थापित व्यक्तिगत विश्वनाथ मन्दिर घाट में दिन के दो बजे विश्वनाथ जी के दर्शन कर रहे थे। उसी दिन श्रीविश्वनाथजी के शिवलिंग से यह वाणी प्रस्फुटित हुई कि “शिवजी सरस्वती, काशी-माहात्म्य, काशी-दर्शन काशी का इतिहास लिखो। इसके अनन्तर गुरु जी के पास जाकर उनसे सब वृत्तान्त कहे।

गुरुजी बोले, श्री विश्वनाथ जी प्रसन्न हो गये हैं, तुम माहात्म्य और काशी-दर्शन काशी का इतिहास लिखो। शिवजी सरस्वती जी बोले, गुरुजी मैं अनपढ़ हूँ। गुरुजी बोले, तुमकी विद्या आ जायेगी। यह कहकर गुरुजी अपना दाहिना हाथ उनके सिर पर रखे। उसी दिन से शिवानन्द जी को कथित शक्तिपात प्रदान किये। शक्तिपात प्राप्त होते ही सब विद्वान् बन गयीं। १९८० ई० के श्रावण शुक्ल त्रयोदशी तिथि के दिन स ४ बजे मणिकर्णिका घाट पर स्नान करके विश्वनाथ जी की दर्शने करने जा रहे थे, नीलकण्ठ मुहल्ले में नीलकण्ठेश्वर के शिव पहुँचते ही उन्हें मालूम हुआ, विश्वनाथ जी के तरफ से कोई

रुष" आ रहे हैं। वहीं पर रुक गये, बगल से जाते समय उनके शरीर से स्पर्शित हवा लगते ही आनन्द का अनुभव हुआ, उसी समय से वे कुछ भूल गये, भूख-प्यास का लगना बन्द हो गया। १५ दिनों तक ललिता घाट के राजराजेश्वरी मठ में जाकर गुफा में रहे, प्रतिदिन ललिताघाट में त्रिकाल स्नान करते थे। ॐ प्रणव महातारक मन्त्र का जप करते थे।

सोलहवें दिन गुरु जी के पास गये, सब बातें सुनाई। गुरुजी बोले, अब काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशीवास करो। वहीं पर बैठे हुए काशी के तीर्थ पुरोहित अञ्जनीनन्दन मिश्र जी से स्वामी जी ने कहा; आपको काशी में क्षेत्र संन्यास शास्त्रविधि से कराओ। गुरु जी की आज्ञा पाकर उनके साथ मणिकर्णिका घाट पर गये, शास्त्रविधि से काशी में जीवन पर्यन्त काशीवास करने के लिए काशी में क्षेत्र संन्यास ग्रहण संकल्प हुआ।

स्वामी जी को जप करते समय जो चमत्कार हुआ, उसका सूक्ष्म रूप से वर्णन कर रहा हूँ। माता जी के देहान्त होने के पश्चात् सरयू नदी के किनारे हनुमान घाट पर बैठकर राडाक्षरी महामन्त्र का जप आसन लगाकर कर रहे थे। उसी समय एक व्यक्ति आकर उनसे बोला—मकान, जमीन क्यों दान करते हो? उसने गाली देना प्रारम्भ किया, गाली का स्वामी जी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा तो वह लाठी लेकर दौड़ा। उसी समय एक हवा का भँवर (बवण्डर) आया और उस गाली देने वाले व्यक्ति को उड़ाकर सरयू में डुबो दिया। स्वामी जी दौड़कर सरयू नदी में कूद गये और आधा किलोमीटर जाने के पश्चात् उस व्यक्ति को पकड़कर किनारे लाये और पीठ पर लादकर

अस्पताल पहुँचाये, दवा की सब व्यवस्था की। यह सब देखकर पूछा, ब्रह्मचारी जी आपको तो यह मारने के लिए लाठी लेकर था और गाली दे रहा था। आपने उसको बचाने के लिए इतना प्रयत्न क्यों किया ? ब्रह्मचारी जी बोले—बड़े पुण्य के उदय होने पर देने वाला व्यक्ति मिलता है।

जीवन परिचय, गुरु कृपा और शक्तिपात

सन् १९८१ ई० में फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन प्रातः बजे स्वामी श्री हरिहरानन्द सरस्वती (करपात्री जी महाराज) पूजा करके रुद्राभिषेक करने के पश्चात् दण्डी स्वामी शिव सरस्वतीजी की तरफ देखकर बोले काशी-माहात्म्य और काशी का इतिहास लिखो। स्वामी शिवानन्द (सरस्वती) जी बोले अनपढ़ हूँ। दस्तखत करने नहीं आता है। करपात्री जी महाराज

आपको सब विद्या आ जायेगी, कहते हुए नजदीक में बुलाकर दाहिना हाथ स्वामी जी के सर के ऊपर रखे। स्वामी जी को क्षण में गुरु जी ने शक्तिपात प्राप्त करा दी। उसी समय से स्वामी को वेद, वेदान्त एवं धर्म-शास्त्र के मन्त्र और श्लोक देखते ही याद लगने लगा। मैंने वेद और धर्मशास्त्र में शक्तिपात का वर्णन और सुना था, आज प्रत्यक्ष देखने को मिला। मैं बगल में बैठकर देख रहा था।

काशी में एक दिन की पञ्चकोशी यात्रा सन् १९८३ ई० में प्रारम्भ किये, स्वामी जी की अध्यक्षता में महाशिवरात्रि के दिन प्रातः बाबा विश्वनाथ जी के फाटक खुलने के पश्चात् दर्शन, पूजन

आज्ञा लेकर संकल्प करके एक दिन की पञ्चकोशी यात्रा हजारों यात्रियों के साथ प्रारम्भ किए, सीढ़ियों पर चढ़कर प्रत्येक मन्दिरों के दर्शन करते हुए प्रातः ४ बजे से पैदल चले थे। सायंकाल ६ बजे यात्रा पूर्ण करके काशी विश्वनाथ जी का सायं ६ बजे दर्शन करने आये। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि स्वामी जी का स्थूल शरीर छः फुट लंबा और एक कुन्टल वजन का है। पञ्चकोशी यात्रा में प्रत्येक देव मन्दिरों का दर्शन करते हुए चलने वाला व्यक्ति १५० सीढ़ी चढ़ता है, स्वामी जी प्रत्येक सीढ़ी पर उछलते हुए चलते हैं। स्वामी जी को पंचकोशी यात्रा में भूख, प्यास थकावट नहीं आती थी। यह मैंने विशेष महत्वपूर्ण बात देखी। स्वामी जी के पाँच दिन के पंचकोशी यात्रा में एक गाय का बछड़ा भी चलता था पंचकोशी जाने के दिन प्रातः यात्री संकल्प लेकर चलते थे। यात्रियों के साथ 'उछलते कूदते प्रत्येक पड़ाव में वह नन्दी पहुँच जाते हैं, जहाँ यात्री विश्राम करते हैं, वहीं जाकर नन्दी बैठते हैं, इसी प्रकार पाँच वर्ष तक यह नन्दी स्वामी जी के साथ पंचकोशी यात्रा किया।

वाराणसी प्रदक्षिणा यात्रा

सन् १९८५ ई० में आश्विन शुक्ल शरद-पूर्णिमा तिथि के दिन प्रातः स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में हजारों यात्रियों के साथ विश्वनाथ आदि के दर्शन करके संकल्प लेकर यात्रा प्रारम्भ किये। मणिकर्णिका घाट से दर्शन, पूजन करते हुए लोलार्क घाट में पहुँचे, वहाँ गंगा जी में एक आदमी डूब रहा था, स्वामी जी गंगा में कूद पड़े, उस व्यक्ति को पकड़ कर घाट पर लाए, अपने वस्त्र से उसके पेट में कसकर बांधे, दोनों हाथ से दोनों पैर को उठाये, डूबने

वाले के नाक मुंह से पानी (पेट के पानी) निकाल करके उस रोग को अस्पताल में भेज करके जगन्नाथ मन्दिर, दुर्गाजी, खोजवां, मडुवा डिह, लड़तरारा, केन्टूमेन्ट एरिया, चौकाघाट, राजघाट (आदि) दर्शन यात्रा करते हुए, गंगा-वरुणा-संगम पहुँचे। स्वामी जी आदिकेशव के मन्दिर में बैठकर आदिकेशव विष्णु भगवान की पूजा कर रहे हैं, दूसरी ओर गंगा-संगम से स्वामी जी आ रहे हैं। यह दृश्य देखकर कभी मन्दिर में, कभी दक्षिण फाटक से बाहर जाकर देखता रहा। यहाँ स्वामी जी पूजा कर रहे हैं, वहाँ संगम से आ रहे हैं, जब संगम के स्वामी जी मन्दिर में आ गये, उसी क्षण मन्दिर के स्वामी जी अदृश्य हो गये, यह दृश्य देखकर मैं आश्चर्य चकित हुआ।

काशी में दस महाविद्या का दर्शन यात्रा

सन् ९३ ई० में भाद्र शुक्ल अष्टमी तिथि के दिन स्वामी जी अध्यक्षता में १० माह विद्या देवी जी के दर्शन यात्रा, यात्रियों के साथ पाण्डेय घाट ताराबाड़ी में तारा देवी के दर्शन; पूजन करके संकठा लेकर दाहिने बरत से यात्रा प्रारम्भ किये, दर्शन, पूजन और यात्रा करते हुए संकठा जी के मन्दिर में पहुँचे, संकठा जी के दर्शन कर लिये। पुजारीजी नराज होकर बोले माई को आशीर्वाद देते हो, चमत्कार दिखाओ, कहते ही संकठा जी के गले से लाल फूल (अड़हुल) की माला उछल कर कटघरा के बाहर जाकर स्वामी जी के पास गिरी, स्वामी जी संकठा (देवी जी) की स्तुति करने लगे।

काशी में १२ ज्योतिलिङ्ग दर्शन यात्रा

सन् ९४ में ई० में श्रावण कृष्ण त्रयोदशी प्रदोष वरत के दिन प्रातः ९ बजे दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वतीजी के अध्यक्षता में सी (१०)

यात्रियों के साथ मानमन्दिर घाट में सोमेश्वर नाथ जी के मन्दिर के दर्शन, पूजा करके संकल्प लेकर दाहिने बर्त से १२ ज्योतिर्लिङ्ग यात्रा प्रारम्भ किये। यात्रा पूर्ण करने के पश्चात् पुनः केदारेश्वर भगवान का दर्शन कर रहे थे। उसी समय केदारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग से आवाज आई, स्वामी शिवानन्द सरस्वती मुझे आशीर्वाद दो। दर्शनार्थी मेरी पूजा उपासना और अर्चना करके अपना पाप मेरे ऊपर छोड़ जाते हैं। हमें आशीर्वाद देकर मेरा पाप नष्ट करो। सुनते ही काशी यात्रा के संरक्षक दण्डी स्वामी गंगानन्द तीर्थ जी महाराज के पास जाकर सब बात, जो सुने थे, सुनाये। गंगानन्द जी बोले केदार जी प्रसन्न हो गये। जाओ आशीर्वाद दो। स्वामी जी जाकर केदार जी को आशीर्वाद देने लगे। सोमवार को केदार घाट में स्नान करके केदारेश्वर को हाथ उठाकर आशीर्वाद दे रहे थे। उसी क्षण केदार जी के प्रधान पुजारी पण्डित शिवशंकर पाण्डेय जी बोले मेरे बाबा को आशीर्वाद देते हो, चमत्कार दिखाओ; कहते ही केदारेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग में चढ़ी हुई धतूरे की फूल माला उछलकर स्वामी जी के पास आकर गिरी।

काशी में नव गौरी, नव दुर्गा यात्रा

सन् १४ ई० में आविश्म शुक्ल पञ्चमी और रविवार के दिन दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में नवदुर्गा, नवगौरी दर्शन, पूजन यात्रा, दुर्गा जी का दर्शन, पूजा करके संकल्प लेकर यात्रा प्रारम्भ हुई। यात्रा पूर्ण होने के पश्चात् स्वामी जी पुनः दुर्गा जी की दर्शन कर रहे थे, उसी समय दुर्गा जी की मूर्ति से आवाज आई। स्वामी शिवानन्द सरस्वती मुझे आशीर्वाद दो, स्वामी जी मेरे दर्शन,

पूजन करने वाले भक्तों ने अपना जन्म-जन्मान्तरों के पाप मेरे द्वा-
 करके मेरे ऊपर छोड़ जाते हैं। मुझे आशीर्वाद देकर उन सब पापों को
 नष्ट करो। सुनते ही स्वामी गंगानन्द तीर्थ जी महाराज के पास
 मुमुक्षु भवन मठ में गये। सभी बात सुनाये, स्वामी गंगानन्द
 स्वामी जी से बोले, दुर्गा जी आप से प्रसन्न हो गई हैं। आप जाकर
 आशीर्वाद दो, इतना कहने पर, उसी समय स्वामी जी जाकर दो
 हाथ उठा करके प्रतिदिन आशीर्वाद देते रहे। विजय दशमी के दिन
 स्वामी जी हाथ उठाकर आशीर्वाद दे रहे थे, उसी क्षण दुर्गा जी
 प्रधान पुजारी पण्डित बंशनाथ दुबे जी ने कहा—मेरी माई को आशी-
 र्वाद देते हो, चमत्कार दिखाओ, कहते ही दुर्गा जी के गले में पहना
 हुए अढ़हूल फूल की माला उछल कर कठघरा के बाहर स्वामी जी
 पास जाकर गिरी।

काशी में अविमुक्ति प्रदक्षिणा यात्रा

सन् १९९४ ई० कार्तिक शुक्ल पञ्चमी तिथि के दिन प्रातः ९ बजे
 अविमुक्तेश्वर के दर्शन करके संकल्प लेकर दर्शनार्थियों के साथ यात्रा
 प्रारम्भ किये। ललिता देवी के दर्शन करके काशी विश्वनाथ घाट
 जाकर स्वामी जी बैठे थे, उसी समय एक सेठ आकर बोला, वृद्धा
 वस्था में आप मोटे, ताजे हैं। आप क्या खाते-पीते हैं, दण्डी स्वामी
 शिवानन्द सरस्वती बोले, मैं अहर्निश भगवान् का नाम लेकर पीता
 हूँ। भगवान् को अर्पण करके खाता हूँ और सभी प्राणियों में भगवान्
 का रूप देखता हूँ, उसी क्षण प्रणाम करके सेठ चला गया।

दण्डी स्वामी शिधानन्द सरस्वती जी की निष्काम सेवा

काशी के तीर्थ मठ, मन्दिर, गली और सड़क में पड़े हुये रोगियों को देखते ही टेम्पो, रिक्शा में बैठा कर अस्पताल में ले जाकर तत्काल भर्ती करा देते हैं और उन बीमारों को दवा-भोजन की व्यवस्था करते हैं। काशी की यात्रा करते समय जो रोगी रास्ते में मिलते थे, उनको पत्र लिखकर अस्पताल में भेज देते थे। स्वामी जी का नाम सुनते ही अस्पताल वाले मरीज को भर्ती कर देते थे। स्वामी जी सभा में घोषणा करते थे, जो मानव जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट करना चाहता हो, वे मनुष्य मेरे साथ यात्रा में चलें। मैं काशी को संपूर्ण यात्रा करा करके पाप नष्ट करा दूंगा। मैं उन सबको काशी यात्रा करने वाले भक्तों को मुक्ति दिलाऊंगा, ऐसा कहते थे। स्वामी जी अपने प्रवचन में कहा करते थे जो नर-नारी धन सम्पत्ति और सुख, शांति चाहता है, दे तीर्थयात्री तन, मन, धन से काशी की यात्रा करे। शास्त्र विधि से यात्रा करने वाले के घर में स्थिर लक्ष्मी निवास करती है और वरणी करके ब्राह्मणों को यात्रा करने भेज देने से भी पाप एवं संकट नष्ट होते हैं।

सूर्य दर्शन-पूजन यात्रा

भाद्र शुक्ल पक्ष के बड़े रविवार के दिन सन् ९० ई० में काशी में १० सूर्य यात्रा एक सो (१००) यात्रियों के साथ में स्वामी जी जा रहे थे। लोलार्क कुण्ड में पहुँचते ही हरिप्रसाद पाण्डे जी आकर बोले-पुत्र कैसे प्राप्त होगा? स्वामी जी बोले काशी यात्रा करो, पुत्र मिलेगा। काशी की यात्रा करते हुये जिस दिन एक वर्ष

पूर्ण हुआ, उसी दिन पुत्र (रूप) रत्न की प्राप्ति हुई । उस सूर्य यात्रा के दिन एकादशी व्रत का दिन था । स्वामी जी निर्जला रहते थे । बिना जल पीये १५ किलोमीटर पैदल यात्रा किये । हमलोग जल पीते थे ।

अष्ट भैरव यात्रा

भैरवाष्टमी के दिन अष्ट भैरव यात्रा स्वामी जी १५० यात्रियों के साथ जा रहे थे । हनुमान घाट में एक नारायण प्रसाद नाम के व्यक्ति आकर स्वामी जी से बोले कैंसर का रोग कैसे ठीक होगा । स्वामी जी बोले काशी की यात्रा करो, रोग अच्छा होगा । काशी की यात्रा प्रारम्भ होते ही कैंसर रोग में आराम हुआ । स्वामी जी का और काशी की यात्रा का वर्णन जितना भी करें, कम है, काशी की यात्रा करने वाले हजारों मनुष्यों की मनोकामना पूर्ण हुई और पाप, रोग सब नष्ट हुये ।

काशी में ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा

सन् ११ ई० में कार्तिक कृष्णपक्ष सप्तमी तिथि रविवार के दिन प्रातः ९ बजे स्वामी जी की अध्यक्षता में ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा प्रारम्भ हुई । साधु महात्मा और मंदिरों के दर्शन करते हुए विश्व-कर्मेश्वर के दर्शन करके गोलगड्डा, जी० टी० रोड में राजघाट नौवा पोखरा में पाप मोचनेश्वर के मंदिर के पास पहुँचते ही कसाई लोग चार देशी गाय को लेकर जा रहे थे । गायों ने स्वामी जी को देख-कर बाहाँ-बाहाँ आवाज लगाई, स्वामी जी खड़े होकर नन्दिनी कहते हाथ उठाकर आवाज लगाये, उसी क्षण उन कसाईयों को

मार करके वे गायें दौड़ती हुये स्वामी जी के पास आयी। स्वामी जी चलने लगे तो पीछे-पीछे गायें भी चलने लगीं। स्वामी जी रिक्शा में बैठे। चारों गायें रिक्शा के पीछे-पीछे दौड़ते हुये बाहाँ-बाहाँ की आवाज के साथ मैदागिन गौशाला पर पहुँच गई। गाय को गौशाला में बाँधकर स्वामी जी आदिकेशव में जाकर हमलोगों से मिले।

स्वामी जी ने भगवान का नाम श्वास द्वारा जप निरन्तर करने का बहुत अच्छा अभ्यास किया है। सोते, जागते, खाते, पीते अहर्निश श्वास में ॐ मन्त्र का स्वतः जप करते हैं। रात्रि में जब स्वामी जी सोते हैं, उस समय श्वास के साथ ॐ ॐ आवाज सुनाई पड़ती है।

कभी कभी स्वामी जी ध्यान में ६-६ घण्टा बैठे रहते हैं कभी ध्यान करते हुए समाधी बारह घण्टा लगाते हैं। शंख, घण्टा बजा कर ध्वनि के साथ शंकर भगवान के आरती लोग करते हैं। आरती करते ही स्वामी जी समाधी से जागते हैं।

मैं सन् १९८० ई० में फाल्गुन कृष्णपक्ष की महाशिवरात्रि के दिन काशी आया और केदार जी के दर्शन कर रहा था, उसी समय दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी को देखा, देखते ही मेरा मन उनकी ओर आकर्षित हुआ और मैं स्वामी जी के पीछे-पीछे स्वामी करपात्री जी महाराज के मठ धर्म संघ में जाकर उनकी कुटिया देखा, उस समय स्वामी जी मौन थे। उसी समय से चलते, फिरते, खाते, पीते, सोते, जागते स्वामी जी का अहर्निश स्मरण होने लगा। फाल्गुन शुक्ल द्वितीया तिथि के दिन से पाँच दिन की काशी की पञ्चकोशी

परिक्रमा यात्रा पर हजारों यात्रियों के साथ स्वामी जी जा रहे थे। मैं भी साथ में चला। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आगे मैंने देखा वेद-वेदान्त के विद्वान् एवं वैदिक ब्राह्मण शान्ति पाठ करते हुए साधु महात्मा स्वामी के साथ-साथ चल रहे थे। चितईपुर चौराहे से स्वामी जी अकेले आगे आगे चल रहे हैं और स्वामी जी के साथ दोनों बगल में भारतीय वेष-भूषा में सिर पर साफा बाँधे चौबन्दी धोती पहने हुए सुन्दर शरीर वाले दो व्यक्ति चल रहे हैं। जब स्वामी जी के साथ कोई भी मनुष्य नहीं रहते हैं, उसी समय वे दोनों दिखाई पड़ते हैं। मैंने रामेश्वर में स्वामी जी से पूछा तो स्वामी जी ने कहा—मेरे स्थूल शरीर की रक्षा करने के लिए मेरे परमपिता बाबा विश्वनाथ जी अपने दो गणों को मेरी सुरक्षा हेतु दिये हैं। वही गुप्तचर शिवदूत हर समय मेरे पास रहते हैं। जैसे मनुष्य जहाँ-जहाँ जाता है, वहाँ-वहाँ उसकी छाया भी जाती है। उसी प्रकार से मेरे साथ-साथ शंकर जी के सिपाही सुरक्षागार्ड की भाँति चलते हैं।

इसी प्रकार हजारों चमत्कार मैंने स्वामी जी का देखा है, परन्तु स्वामी जी ने किसी को बताने को मना किया। १९९५ ई० के फाल्गुण शुक्ल प्रतिपदा के दिन सत्यनारायण बम्बई से आकर बोले - एक लाख रुपये लीजिए और बम्बई चलिए, मैं आपको बीस लाख रुपया एक गाड़ी दिलाऊँगा। सेठ जी की बात सुनकर स्वामी जी ने वह एक लाख की गड़्डी उठाकर फेंक दिया। मेरे काशी वास में विघ्न डालते ही बोले हमारे सामने से हट जाओ त्योंही सेठ चला गया। पञ्चकोशी से आने के दूसरे दिन मध्याह्न के समय मध्याह्न स्नान

करने के लिए तुलसी घाट पर गये। गङ्गा जी में स्नान करने के पश्चात् अकेले ही गङ्गा जी को तैरकर उस पार जा रहे थे। थोड़ी दूर जाते ही दो आदमी स्वामी जी के बगल में तैरने लगे और उस पार जाकर बालू में स्वामी के पास बैठ गये। पुनः गङ्गा जी में तैरते हुए गङ्गा जी के किनारे तक आये तत्पश्चात् वहीं पर अदृश्य हो गये। मैं तुलसी घाट की सीढ़ी पर बैठकर यह दृश्य देख रहा था, मैंने स्वामीजी से पूछा—आप के साथ वे लोग कौन थे ? तो स्वामी जी ने कहा—वे विश्वनाथ जी के अदृश्य सिपाही हैं, आप बहुत भाग्यवान् हैं जो दर्शन पाये, किसी को कभी भूत-प्रेत का भी दर्शन नहीं होता। शिवदूतों का दर्शन होते ही मुझे ज्ञान प्राप्त हो गया और उसी समय में आसाम विश्वविद्यालय के कुलपति का पद छोड़ कर काशीवास करने लगा।

सन् १९८३ ई० में निरीक्षणपति जी के घर पर अस्सी में विद्वत् सभा लगी थी। उसी विद्वत् सभा में निरीक्षणपति जी बोले ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा का प्रमाण नहीं है दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी के मुँह से अचानक काशी खण्ड में है, निकल गया निरीक्षणपति जी बोले नहीं है। पुस्तक मँगाया गया, पुस्तक में ८ श्लोक में ओंकारेश्वर अन्तर्गृही यात्रा प्रमाण मिला। सभा के पश्चात् निरीक्षणपति जी ने पुनः काशी खण्ड देखा वे आठ श्लोक कहीं भी नहीं मिले। निरीक्षणपति जी ने काशी के विद्वानों से कहा। स्वामी जी की वाणी सिद्ध हो गई है। आप लोग कभी भी उनसे शास्त्रार्थ नहीं करना, चूँकि भवानी के भक्त हैं। उस दिन से स्वामी जी का नाम काशी में सिद्ध स्वामी पड़ा।

नोट - काशी में जो नर-नारी पाप कर्म से बच कर काशी प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में पहले घर में स्नान करके उत्तरवाहिनी गंगा में स्नान करके सूर्यनारायण भगवान् को अर्घदान करते हैं।

सन्ध्या करके देव, ऋषि और पितरों का तर्पण करते हैं, काशी प्रसिद्ध मन्दिरों का दर्शन, पूजापाठ करते हैं। घर के पास के मन्दिर का दर्शन के पश्चात् यथा शक्ति मिष्ठान, फल, दूध, वस्त्र इत्यादि दान करते हैं, सोमवार और प्रदोष या रविवार के दिन काशी शास्त्रविधि से काशी की यात्रा करते हैं तथा वृद्ध रोगी का दर्शन करते हैं। ऊपर कहे हुए साधन करते हुए विश्व से आए हुए काशी वास करने वाले का जिस दिन १२ वर्ष यह तपस्या करते हुए होता है, उसी दिन उसकी वाणी सिद्ध हो जाती है, अन्नपूर्णा भवानी काशी विश्वनाथ जी प्रसन्न होकर भुक्ति, मुक्ति का वरदान देते हैं और विश्वनाथ जी दो अदृश्य सिपाही उस भक्त के अंग रक्षा के लिए देते हैं, वे सिपाही काशी वासी को तंग करने वाले को अदृश्य रहकर कष्ट देते हैं, संकट में डालकर धनमान की हानि कराकर काशी से बाहर निकाल देते हैं।

सन् १९८८ ई० में फाल्गुन शुक्ल दशमी के दिन प्रातः ९ बजे स्वामी जी हरिश्चन्द्र घाट से केदारजी जानेवाली गली में चढ़ाई पर चढ़ रहे थे, उसी समय मद्रास से शुक्रमन्यु शास्त्री जी प्रान्तों से शास्त्रार्थ करते हुए और दिग्विजय करते हुए काशी आये। शास्त्री जी भी विद्वानों के साथ उसी गली से निकल रहे थे। आज काशी के विद्वानों को शास्त्रार्थ करने के लिए निमन्त्रण करते

और शास्त्रार्थ करके काशी के विद्वानों को परास्त करके काशी से जायेंगे। संस्कृत में कहते हुए चल रहे थे, स्वामी जी के पीछे-पीछे बात करते हुए चल रहे थे। वे लोग केदार जी के दर्शन करने गये; स्वामीजी केदारेश्वर के पूर्व फाटक के पास में जाकर बैठे। शास्त्री जी भी विद्वानों के साथ वहीं आ गये। स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी ने प्रश्न किया, आप किस विषय में प्रश्न करेंगे ?

शास्त्रार्थ करने वाले शास्त्री जी एक चौपाई बोले-“मूढ़ मुड़ाहि होहि संन्यासी, तुम से क्या शास्त्रार्थ करें ?” स्वामी जी बोले-“काशी में किसी भी व्यक्ति को अनपढ़, अज्ञानी नहीं समझना चाहिए। पहले हमसे शास्त्रार्थ करके मुझे परास्त करो तभी विद्वानों को ललकारना।” स्वामी जी की बात सुनकर शास्त्री जी ने ललकारते हुए प्रश्न किए, स्वामी जी उत्तर देते गए। २५ मिनट तक शास्त्रार्थ चला। शास्त्री जी के पक्ष के शास्त्रार्थ निर्णायक थे। उन्होंने शास्त्री जी से कहा कि आप शास्त्रार्थ में स्वामी जी से परास्त हो गये। निर्णायक की बात सुनकर शुक्रमन्यु शास्त्री जी उठकर प्रणाम करके चले गये। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ किसी भी विद्यालय में पढ़ने नहीं गया, शास्त्रार्थ करने की शक्ति और यह विद्या कहाँ से आयी ?

“बैशाख कृष्ण पञ्चमी तिथि के दिन सन् ८५ ई० में काशी विश्वनाथ स्वरूपात्म अङ्ग यात्रा” करते हुए मध्यमेश्वर के मन्दिर में दर्शन करने जा रहे थे। रास्ते में श्रीमद्भागवत की कथा हो रही थी। यज्ञ का यजमान आकर स्वामी जी को ले गया। हम लोग भी साथ

में गये। प्रवचन पंडाल में स्वामी जी के प्रवेश करते ही प्रवचन करने वाले रविशंकर तिवारी व्यास गद्दी से एक चौपाई बोले—

नारि मुई गृह संपति नासी।

सूड़ सूड़ाहिं होंहि संन्यासी॥

कथा कहने वाले व्यास जी का चौपाई बोलते ही गला बग़ाव हो गया। व्यास गद्दी से नीचे उतर कर उछलने, कूदने और दौड़ने लगे। कथा पंडाल में हाहाकार मच गया। व्यास जी को अस्पताल ले गये मैं स्वामी जी के पास में खड़ा होकर सब दृश्य देख रहा था।

[नोट—वेद-पुराण, रामायण, यज्ञ में प्रवचन के आयोजन वाले धर्म परायण भक्तों से मैं नम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि प्रवचन करने वाले वक्ता को निमन्त्रण करते समय हाथ जोड़कर प्रार्थना करें कि जिस सद्ग्रन्थ से कथा व्यास गद्दी से कहनी है, उसी पुस्तक का ही प्रवचन करेंगे। देवता, साधु, ब्राह्मण और किसी की भी आलोचना निन्दा न करते हुए मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए उपदेश, आचार, उपासना विद्या प्राप्ति का साधन, भक्ति और ज्ञान प्राप्त करने का उपदेश करें। व्यास गद्दी में बैठकर जो वक्ता दूसरे की निन्दा करते हैं, ऐसे प्रवचन करने वाले हजारों व्यासों को बड़े-बड़े लोग देखते हुए मैंने देखा है और सुना है।]

काशी विश्वनाथ अन्तर्गृही यात्रा

स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज सन् १९९० ई. कार्तिक शुक्ल की गोपाष्टमी तिथि के दिन काशी विश्वनाथ अन्तर्गृही

प्रदक्षिणा यात्रा पूर्ण करके साधु, ब्राह्मणों को जलपान करा करके पुनः स्वामी जी १२ बजे मणिकर्णिका घाट पर गये और गंगा जी में स्नान करके हृदय तक गंगा जी के जल में खड़े होकर संकल्प किये और दोनों हाथ उठाकर स्वामी जी ने जन्म-जन्मांतर के पापों का आह्वान किया—हे जन्म-जन्मान्तर के पाप, रोग बन कर मेरे स्थूल शरीर में आ जाओ। मैं सम्पूर्ण पापों का प्रायश्चित्त इसी जन्ममें करके मुक्त होना चाहता हूँ, ऐसा कहते ही अनेक रोग स्वामी जी के शरीर में आ गए। स्वामी जी को कोई कष्ट नहीं हुआ। अहर्निश प्रसन्न रहते थे और हँसते रहते थे कि ये रोग तीन दिन के मेहमान हैं। उसी समय मुझे स्वामी जी की सेवा में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। स्वामी जी की रचना (चार पुस्तक) सदा मिलती रहेगी—काशी माहात्म्य; काशी का इतिहास, काशी दर्शन और काशी गौरव में पञ्चकोशी तत्वादि यात्राओं का वर्णन हैं। वर्तमान में पुस्तक अमूल्य छपी है।

शिवप्रसाद उपाध्याय (आसाम) विश्वविद्यालय के कुलपति ।

इति शुभम्

काशी में प्रतिवर्ष होने वाली प्राचीन रामलीला का इतिहास

काशी की श्री रामलीला का वर्णन करते हुए प्रवचन में (स १९८० ई०) दण्डी स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती करपात्रीजी महाराज ने कहा—त्रेता युग के चतुर्थ चरण में श्री रामचन्द्र भगवान् जन्म होने से पहले त्रिकालदर्शी ब्रह्मऋषि वाल्मीकि ने रामायण लिखा था। रामजी का जन्म और विवाह होने के पश्चात् रामजी को वनवास हुआ। राम जी जब वाल्मीकि जी के दर्शन का अगस्त्य मुनि के दर्शन करने गये तो उसी दिन वाल्मीकि काशी चले गए। त्रिलोचनेश्वर मन्दिर के बगल में आकर रुक लगे। काशीराज को पता लगा तो काशी नरेश रामनारायण साहू राजगुरु हरिनारायण पाण्डेय जी और ऋषि ब्राह्मणों को साथ लेकर वाल्मीकि जी से मिलने के लिए गए। वाल्मीकि जी स्वागत करने के पश्चात् “काशीराज बोले” मेरे राजमहल में चलिए राजा की बात सुनते ही वाल्मीकि जी बोले कि मैं आप से रामायण का उद्घाटन कराने आया हूँ। काशी के विश्वनाथ मन्दिर में १० (दस) बजे रामायण का उद्घाटन होगा—यह कहकर काशीराज अपने राजघाट (वर्तमान में बसन्त कालेज) के राज महल चले गए। दूसरे दिन १० बजे काशी विश्वनाथ जी के मन्दिर रामायण का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन करते समय काशीराज बोले “यह रामायण आज से वाल्मीकि रामायण” के नाम से प्रति

होगा। सुनकर ऋषि, मुनि, ब्राह्मण सब प्रसन्न हो गए। दूसरे दिन काशीराज वाल्मीकि जी से मिलने आए, सभा लगी थी, उसी सभा में काशी नरेश जी बोले, वाल्मीकि जी आप काशी वास करें। सुनते ही सभा के बीच में एक विशाल शिवलिङ्ग प्रगट हुआ। काशी नरेश उठकर प्रार्थना करने लगे। वाल्मीकि जी बोले — 'यही शिवलिङ्ग काशीवास करेंगे।' वाल्मीकि जी के वचन सुनकर आश्चर्य हुआ। राजा बोले — "आज से यह शिवलिङ्ग वाल्मीकेश्वर के नाम से प्रसिद्ध होगा।" राजा के वचन सुनते ही वाल्मीकि जी वरदान देते हुए बोले, जो नर-नारी वाल्मीकेश्वर का दर्शन-पूजन और उपासना करेंगे, उनको यह शिवलिंग आवास भोजन, सज्जन का का सग और सत्संग प्रदान करेंगे। इनकी आराधना करने वाले भक्त को धन, सुख-शान्ति देंगे। वाल्मीकिेश्वर को वरदान देने के पश्चात् वाल्मीकि जी बोले — "हे राजन् ! काशी में रामलीला प्रारम्भ करें। काशीराज जी ने तत्काल आदेश दिया। महाराजा रामनारायण जी ने कहा कि रामनगर एवं चित्रकूट में रामलीला की व्यवस्था करें। कल भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी के दिन अच्छा मुहूर्त है। कल से रामलीला की हम स्वयं रहकर व्यवस्था करेंगे। काशी नरेश जी के वचन सुनकर ऋषि-मुनि सभी प्रसन्न हो गए। उसी दिन से रामनगर की रामलीला आज तक भी अखण्ड रूप से काशीराज स्वयं चला रहे हैं।

काशी में भरत मिलाप का प्राचीन इतिहास

मेरे गुरु जी हरिहरानन्द सरस्वती (स्वामी करपात्री जी) अपने प्रवचन में काशी भरत मिलाप का वर्णन करते हुए बोले कि भगवान्

रामचन्द्र का राज्याभिषेक अयोध्या के राजा होने के बाद, ब्रह्मर्षि वशिष्ठ गुरुजी की आज्ञा से रामचन्द्र जी गुरु, माता, भाई और ब्राह्मणों को साथ में लेकर तीर्थ यात्रा करते हुए काशी में आए, दूसरे दिन रामनगर की रामलीला में भरत मिलाप सायं ८ बजे होने वाला था। भरत मिलाप आज जहाँ पर होता है, वहीं पर अतिथि भवन में भगवान् रामचन्द्र के रहने की व्यवस्था की गई थी। उस समय के काशी के महाराजा रामनारायण साह जी राजगुरु हरिनारायण एवं ऋषि, ब्राह्मणों और जो रामनगर की रामलीला में भरत जी बनते थे, अमरनाथ उपाध्याय को साथ में लेकर रामचन्द्र जी से मिलने के लिए गये। पहले भरत जी से मिले और रामनगर की रामलीला के रामजी काशीराज जी की आज्ञा से अयोध्या के भरत और काशी-रामलीला के रामचन्द्र दोनों मिले, उसी दिन से भरत मिलाप मोहल्ला प्रसिद्ध हुआ। त्रेतायुग के चतुर्थ चरण में काशी के धूपचण्डी मोहल्ला में भरत मिलाप हुआ था। वह काशी का भरत मिलाप आज तक अखण्ड रूप से हो रहा है।

दुर्गा जी का प्राचीन इतिहास

सन् १६६८ ई० में औरंगजेब ने दुर्गा जी का मन्दिर तोड़ने के लिए सेना भेजी। दुर्गा जी के चौराहे पर सेना पहुँचते ही हजारों बाघ, शेर प्रकट होकर सेना के ऊपर टूट पड़े। (उस समय घोड़ा, हाथी से युद्ध होता था) घोड़े, हाथी, शेर को देखते ही चिल्लाते हुए औरंगजेब की सेना जिस स्थिति में थी, उसी स्थिति में सब भाग गये।

दुर्गा जी और हनुमान जी का प्राचीन इतिहास

सन् १६८४ ई० में औरंगजेब की सेना दुर्गा जी के चौराहे पर जा रही थी उसी समय हनुमान जी हजारों विशाल शरीर वाले प्रातरों का रूप धारण करके औरंगजेब की सेना के ऊपर हर-हर महादेव की ध्वनि करते हुए चारों तरफ से पड़े टूट और तलवार आदि हथियार प्रत्येक हनुमान जी छोड़कर फेंक दिए। हनुमान जी का दर्शन होते ही सैनिक मूर्छित होकर गिर पड़े। हजारों सैनिक सड़क पर मूर्छित होकर गिरे हुए थे। एक हनुमान जी, दुर्गा जी के सामने दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगे। दुर्गा जी की कृपा से एक भी सैनिक की मृत्यु नहीं हुई। वही हनुमान जी दुर्गा हनुमान जी के नाम प्रसिद्ध हुए। आज भी मन्दिर में विराजमान है। औरंगजेब यह सब बात सुनकर दुर्गा जी के मन्दिर को देखने के लिए चौराहे पर आया। आँख चमचमा गई, घोड़े से औरंगजेब गिर गया। दुर्गा जी के महन्त जी से बोला (बुला कर पूछा) — “हम दुर्गा जी के मन्दिर का जीर्णोद्धार करा देते हैं” लेकिन महन्त जी ने मन्दिर बनवाने से इनकार कर दिया।

काशी के केदारेश्वर जी का प्राचीन इतिहास

सन् १६८५ ई० में औरंगजेब ने केदारेश्वरजी का मन्दिर तोड़ने के लिये सेनाको भेलूपुरा के रास्ते से सोनारपुरा होते हुए भेजा। लम्बोदर विनायक के मन्दिर के सामने पहुँचते ही काशी के सेनापति दण्डपाणि जी महाराज ने अदृश्य रूप धारण करके सभी सेनाओं को एक ही समय में एक साथ मारना शुरू कर दिया। मुक्का, झापड़ सबको लगा।

छूटते ही सैनिक मूर्छित होकर सड़क पर गिर जाते। कोई भी दिखाई नहीं पड़ता था। सोनारपुरा से भेलुपुरा तक सैनिक मूर्छित होकर पड़े रहे। सोनारपुरा में शंकर मठ में एक तपस्वी सा शंकर आश्रम नाम के दण्डी स्वामी रहते थे। एक सैनिक ने जाकर स्वामी जी से पूछा—“यह मृत्यु शय्या पर पड़े हुए सैनिक कैसे जीवित होंगे।” स्वामी जी ने कहा—“केदारेश्वर का चढ़ा हुआ निर्मल जल लाकर सभी सैनिकों के ऊपर छिड़क दो सभी सैनिक नीरोग और स्वस्थ हो जायेंगे।” सुनते ही चढ़े हुए जल का छीटा देते ही सभी सैनिक उठ खड़े हुये।

काशी के केदारेश्वर जी का दूसरा इतिहास

पुनः सन् १६९० ई० में केदारेश्वर मन्दिर तोड़वाने के लिए सेनापति ने, जो सैनिक हिन्दू थे, उनको धोती पहनाकर ब्राह्मणों के वेष में गंगा के किनारे से केदार घाट में स्नान करके हरिश्चन्द्र कर्नल ब्राह्मणों को साथ में लेकर केदारेश्वर के मन्दिर में जाकर पूजा करना प्रारम्भ किया। उधर कर्नल के पीछे-पीछे अल्लाह नाम का एक मुसलमान हिन्दू के वेष में खड्ग छिपा करके लाया था। दर्शनार्थियों की भीड़ के कारण वह अन्दर तक चला गया दूसरे फाटक के अन्दर मन्दिर के बगल में जाकर नन्दी की पीठ पर खड्ग मारा। नन्दी के पीठ से एक इन्च के खून की धारा तीन फुट ऊँचाई से गंगा जी तक बह चली। ब्राह्मणों ने केदारेश्वर की स्तुति करनी प्रारम्भ की। स्तुति करते ही नन्दी की पीठ से खून बहना बन्द हो गया। आज भी नन्दी की पीठ पर खड्ग का निशान है।

गङ्गाजल का माहात्म्य

इस घोर कलियुग में सनातन वैदिक हिन्दू धर्म को समाप्त करने की दृष्टि से लोभ लालच में पड़ करके आधुनिक विज्ञान के विद्वान् और ऊँचे पद पर पदासीन विभिन्न नेता नास्तिक हठ से गंगा में स्नान करना और गंगा जल पीना मना करते हैं। विश्व के इतिहास में गंगा जल जैसा पवित्र और शुद्ध कोई भी वस्तु नहीं है। शीशे में भर करके रखने पर सैकड़ों वर्ष तक ज्यों का त्यों रहता है भारत के गंगा जी जैसी नदी विश्व में कहीं भी नहीं है। वेद और धर्मशास्त्र कहते हैं कि मृत्युशय्या पर पड़े हुए रोगी को एक बूँद गंगा जल पिलाने से उस व्यक्ति के जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं। गंगा जल से बना हुआ भोजन करने वाला, गंगा जल पीने वाला, गंगा जल में स्नान करने वाला व्यक्ति हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ जीवन पर्यन्त रहता है। गंगा जी में स्नान, गंगा जल से भोजन, गंगा जल पीता हो, जीवन मुक्त माना जाता है। आज भी काशी में मठ, मन्दिर और हजारों घरों में गंगा जल से भोजन वनता है। काशी के राजाओं के इतिहास में सभी काशीनरेश गंगा स्नान, गंगा जलपान तथा गंगा के जल से बना हुआ भोजन करते हैं, कभी भी नहीं छोड़ते हैं। वर्तमान में विराजमान काशी राज (काशी के राजा) विभूति नारायण सिंह जी महाराज प्रति दिन प्रातः ३ बजे गंगा में स्नान करते हैं, त्रिकाल सन्ध्या शिव, विष्णु धूजा और हवन करते हैं, गंगा जल पीते हैं। गंगा जल से बना

हुआ पदार्थ भगवान् को अर्पण करके प्रसाद पाते हैं। प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में ३ बजे से गंगा स्नान करने के लिए तपस्वी सिद्ध, साधक और ज्ञानी अमर, ऋषि, मुनि, साधु एवं सन्त, भक्त गंगा जी में आते हैं। जो नर नारी प्रति दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में स्नान करने गंगा जी में आते हैं वे नर, नारी, अमर ऋषि, तपसी एवं सिद्ध ज्ञानी, साधक और साधु, महात्मा भक्तों का दर्शन पाते ही उनके जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते हैं। वह निर्मल तथा शुद्ध हृदय वाला हो जाता है (पाप नष्ट होते हैं) पुण्य का उदय होता है, गंगा स्नान, शिव पूजा करने वाले व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष हस्तामलक हो जाता है। आज भी गंगोत्री से समुद्र तक प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में करोड़ों नर-नारी गंगा जी में स्नान करके अपना जीवन सफल बनाते हैं और जीवन मुक्त हो जाते हैं। "गंगा जल भरकर के रखने का विधान" इस प्रकार है—गंगा जी में स्नान करने के पश्चात् (कटि पर्यन्त जल) गंगा जी में खड़े होकर सूर्य नारायण भगवान् को अर्घ्य देने के पश्चात् उसी जगह से गंगा जल भरकर रखें। गंगा जल भरकर रखने के लिए कार्तिक माह सबसे अच्छा माना जाता है।

**भागीरथी गंगा जी की महिमा का वर्णन वेद व्यास
जी स्वयं स्कन्द पुराण में करते हैं**

गंगायां स्नाति यो मर्त्यो यावज्जीवं दिने दिने ।

जीवन्मुक्तः स विज्ञेयो देहान्ते मुक्त एव सः ॥

अर्थ—गंगा जी में प्रति दिन स्नान करने वाले व्यक्ति को जीवन मुक्त जानना चाहिए। मरने पर तो वह मुक्त है ही।

दर्शनात् स्पर्शनात् पानात्तथा गंगेति कीर्तनात् ।

स्मरणादेव गंगायाः सद्यः पापात् प्रमुच्यते ॥

अर्थ -- गंगा जी के दर्शन एवं स्पर्श स्नान और गंगा जी के गुणों का, कीर्तन करने से गंगा का जलपान करने वाले नर-नारी तथा गंगा जी के स्मरण करने मात्र से मनुष्य पाप से शीघ्र मुक्त हो जाते हैं । आज घोर कलिकाल में आधुनिक और नास्तिक अज्ञानी सब गङ्गा में स्नान करना और गंगा जल पीना मना करते हैं । वेद पुराण एवं धर्म शास्त्र कहते हैं कि जिन मनुष्यों ने गंगा जी का दर्शन, मार्जन, आचमन, स्नान, सन्ध्या कर देव ऋषि और पितरों का तर्पण किया, पितरों को पिण्डदान दिया; उनके सब पाप नष्ट हो जाते हैं । सनातन, वैदिक हिन्दू धर्म को मानने वाले धर्म परायण लोग गंगोत्री से बंगाल की खाड़ी तक गंगा जी में स्नान करते हैं, गंगा जल पीते हैं, गंगा जल से ही भोजन बनाकर भगवान् को अर्पण करते हैं । पूजा, पाठ, यज्ञ एवं राज्याभिषेक और जन्म-मृत्यु में गंगा जल के द्वारा ही सब पवित्र हो जाता है ।

काशी में गंगा जी का इतिहास

प्रश्न—भागीरथी गंगा काशी में प्रवेश करते ही आवाज नहीं करती है, स्थिर होकर क्यों चलती है, काशी को कभी भी नहीं छोड़ती है, ऐसा क्यों ?

उत्तर—स्कन्द पुराण के काशी खण्ड में वेद व्यास जी लिखते हैं, राजा भगीरथ जी गंगा जी को लेकर काशी की सीमा अस्सी नदी के संगम में जाकर पहुँचे, उसी क्षण काशी के महामन्त्री भैरव

अपने सेनापति दण्डपाणि आदि गणों के साथ अस्सी गंगा संगम में जाकरके गंगा जी को काशी में आने से रोक दिए। गंगा जी बोली—“मैं काशी में जाकर शिवलिंग की स्थापना करूँगी और काशी के नीचे से चलूँगी, आवाज नहीं करूँगी, स्थिर रूप से चलूँगी।” गंगा जी ने काशी में उत्तर वाहिनी का वरदान दिया है—“जो कोई भी गंगा जी का स्मरण, दर्शन, मार्जन एवं स्नान तर्पण करे, उन सबको काशी विश्वनाथ जी की भक्ति प्राप्त होगी” जब गंगा जी ने ऐसा कहा उसी समय विश्वनाथ जी के गण आगे-आगे चले, उनके पीछे-पीछे भगीरथ जी, भगीरथ के पीछे गंगा माता जी चलीं। दशाश्वमेध घाट में जाकर शिवलिङ्ग की स्थापना की। वह मंदिर शूलटङ्केश्वर से सटे हुए दक्षिण वगल में ऊपर बड़े गंगे के नाम से प्रसिद्ध लाल मंदिर हैं। जिसमें प्रयागराज घाट लिखा है, वहीं गङ्गेश्वर का मंदिर है।

उसी दिन राजा भागीरथ जी ने शिवलिङ्ग की स्थापना की। यह भागीरथेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है।

एक बार ब्रह्माजी स्वयं काशी के ऊपर से जा रहे थे। हंस वाहक हवा के वेग से रुक गया। ब्रह्मा जी बोले “क्या हुआ?” हंस बोले काशी हमें खींच रहा है। ब्रह्माजी बोले “काशी में उतरो” काशी में दशाश्वमेधघाट रुद्र सरोवर में स्नान करके हंस एवं ब्रह्माजी ने हंसेश्वर की स्थापना की। स्वयं ब्रह्माजी ब्राह्मीश्वर की स्थापना करके मन्दिर बनाने का आदेश देकर ब्रह्मा लोक चले गये। एक बार विष्णु भगवान् काशी के ऊपर से कैलाश जा रहे थे। गङ्गा

रुक गये । गरुड़ जी बोलेकि मैं चल नहीं पा रहा हूँ । (गरुड़ जी मन के संकल्प के अनुसार चलने वाले हैं) विष्णु भगवान् बोले— 'काशी के पञ्चगंगा में उतरो ।' पञ्चगंगा में स्नान करके विष्णु जी ने वेणीमाधव की मूर्ति स्थापना की और गरुड़ जी गरुड़ेश्वर की स्थापना करके विष्णु भगवान् कैलाश चले गये ।

काशी में वाहन

प्रश्न—सवारी (रेलगाड़ी, बस, ट्रक इत्यादि) वाहन क्यों धीरे-धीरे चलते हैं ?

प्रमाण—नन्दी उप पुराण के परिशिष्ट भाग में है ।

उत्तर—शिव चैतन्य ब्रह्मचारी जी ने अपने काशी में चलने वाले वाहनों के चालकों के कल्याण के लिए प्रश्न किया । मेरे गुरु जी सन् १९८० में काशी में धीरे-धीरे चलने वाले वाहनों का वर्णन करते हुए प्रवचन में कहते हैं । ब्रह्मा जी सृष्टि के प्रारम्भ में प्राणियों को मन से (मानसिक) उत्पन्न करने लगे । उस समय कूर्पक्षी नाम का पक्षी उत्पन्न हुआ (कूर्पक्षिका विशाल शरीर वाला पक्षी) जो आज समुद्रों के टापू में रहते हैं जो मनुष्यों को उठा ले जाते हैं जैसे बाज पक्षी (पक्षियों) को उठा ले जाता है उसी प्रकार कूर्पक्षी भी मनुष्यों को आकाश मार्ग से आ करके झपट कर एवं छाती तक मुँह के अन्दर डाल करके मनुष्यों का हाथ पैर हिलाते हुए वह पक्षी आकाश मार्ग से मनुष्यों को उठा ले जाता था । ब्रह्मा जी कूर्पक्षी से बोले हिमालय में जाकर शंकर-भगवान् की तपस्या करो और वर माँगो कि हिंसक कार्य नहीं करूँगा । ब्रह्मा जी से आज्ञा पाकर कूर्पक्षी ब्रह्मलोक से चला । काशी के ऊपर से हिमालय की तरफ जा रहा

था । काशी विश्वनाथ जी के पास में मनुष्यों को देखा और आकाश मार्ग से झपट कर सिर धड़ मुँह के अन्दर डालकर हाथ हिलाते हुए आकाश मार्ग से ले जा रहा था । उसी क्षण में भवानी जी ने देखा और उसी क्षण शाप दिया कि जो काशी के जल, थल, और आकाश मार्ग से दौड़कर काशी की सीमा के अन्दर चलेगा, उसकी शक्ति क्षीण हो जायेगी । दूसरा शाप—मेरे गण उस वाहन को रोक देंगे । तीसरा शाप—काशी में जो हिंसक प्राणी आयेगा, वह अहिंसक हो जायेगा । माँ भवानी के शाप से आज भी वाहन धीरे-धीरे चलते हैं । काशी की सीमा के अन्दर जो चालक गाड़ी को तेज चलाते हैं, उनको टक्कर लगना या काशी में मृत्यु होना संभव है । हजारों ऐसी घटनायें काशी में देखने और सुनने में आती हैं ।

काशी में वाहन चालक जितना धीरे-धीरे चलायेगा उतना ही धनी, नीरोग और सुखी रहेगा । यह काशी विश्वनाथजी का वचन है । विश्वनाथ जी के अदृश्य गण तेज चलने वाले प्रत्येक वाहन को रोक देते हैं । अज्ञानी चालक समझ नहीं पाते और गड्ढे में वाहन गिर जाते हैं ।

सन् १९५० ई० में पंजाब मेल तेजी से राजघाट पुल पर से काशी की सीमा के अन्दर प्रवेश करने लगी । उसी समय शिवगणों ने गाड़ी को आगे बढ़ने से रोक दिया । गाड़ी उछलकर गङ्गा जी में गिर गयी । इसी प्रकार कुछ वर्ष पहले भी एक गाड़ी उसी प्रकार उछल कर गंगा जी में गिर पड़ी । हजारों यात्री मरे । दो वर्ष पूर्व गुरुघाम से मारुति दुर्गा जी की तरफ जा रही थी । तेज चलकर दुर्गाकुण्ड में

जाकर गिर जाने से चार व्यक्ति मरे। तेज मोटर साइकिल और गाड़ी में प्रतिदिन टक्कर लगने का समाचार सुनने में आता है।

- (१) काशी में तेज गाड़ी चलाने वाले।
- (२) पाप कर्म करने वाले।
- (३) काशीवासियों को कष्ट देने वाले।
- (४) अभिमान करने वाले।
- (५) दूसरे के धन, मकान, जमीन हड़पने वाले।
- (६) साधु-महात्माओं को कष्ट देने वाले।
- (७) मुख से किसी को भी गाली देने वाले।
- (८) मंदिर मूर्तियों को तोड़ने व खण्डन करने वाले।
- (९) दूसरे की निन्दा करने वाले।

ऐसे व्यक्तियों को काशी क्षमा नहीं करती हैं और विश्वनाथ जी के सेवक पापी को डण्डा मारते हुए काशी की सीमा से बाहर निकाल देते हैं। इन नौ प्रकार के (अपराधी) व्यक्तियों को काशी में विश्वनाथ भगवान् की पूजा करने पर भी बराबर विघ्न, संकट, दुःख, कष्ट आते रहेंगे। क्योंकि ऐसे व्यक्तियों को काशी की सीमा से बाहर निकालने का आदेश है। घर के लोगों को या उनके शत्रुओं को प्रेरणा करके उन पापियों को दूसरे से टकरा करके कुकर्म करने वाले मनुष्यों को काशी से बाहर निकाल देते हैं। वर्तमान सरकार भी पापी को पकड़ कर जेल में डाल देती हैं। जेल भी मोक्ष भूमि की सीमा से बाहर माना जाता है।

प्र०—काशी में अपने से बड़े को माननीय पूजनीय एवं राजा-महाराजाओं को हर-हर महादेव के ध्वनि से स्वागत करते हैं। यह हर-हर महादेव की परम्परा कब से चली और किसने चलायी।

उ०—सत्ययुग के प्रथम चरण में काशी विश्वनाथ जी अपने राज-सभा-सदन में देवता, ऋषि, मुनि, साधु, महात्मा एवं अच्छे मानव, और भूत पिशाच, अपने मंत्रिमंडल और वीरभद्र, दण्डपाणि इत्यादि सभासदों के साथ बैठे हुए थे । विशाल सभा लगी हुई थी । उसी सभा के मध्य में वैकुण्ठ से विष्णु भगवान् गरुड़ पर चढ़कर आकाश मार्ग से सभा के मध्य में उतरे । विष्णु भगवान् का दर्शन पाते ही सभासद सहित काशी विश्वनाथ जी उठकर खड़े हो गये । दोनों हाथ जोड़कर सिर झुका करके विश्वनाथजी ने हर-हर महादेव की ध्वनि लगायी । आकाश मण्डल में ध्वनि गुञ्जायमान हो गया । उसी समय विष्णु भगवान् बोले “आज से काशी में स्वागत, हर हर महादेव के ध्वनि से होगा और जो व्यक्ति स्वागत करते हुए हर हर महादेव की ध्वनि लगायेंगे, उनके पाप रोग, संकट नष्ट होंगे । मेरे और शंकर भगवान् के भक्त बनेंगे ।” विष्णु भगवान् के कहने से उसी दिन से हर हर महादेव से स्वागत करने की परम्परा चली आ रही है और अनादिकाल तक चलेगी ।

[प्रमाण ऋग्वेद में है]

प्र०—“काशी में अपने से बड़े माता-पिता बड़े भाई और माननीय पूजनीय गुरु, एवं साधु महात्मा तथा ब्राह्मणों के चरण छूकर प्रणाम करने की परम्परा कब से चली और किसने पैर छू कर सर्व प्रथम प्रणाम किया ।”

उ०—सत्ययुग के दूसरे चरण में ब्रह्माजी अपने मानसिक पुत्र सप्त ऋषियों से मिलने के लिए काशी आये । सप्त ऋषि प्रातः संध्या कर रहे थे । आकाश मार्ग से ब्रह्मा जी वहीं पर प्रगट हो गये सप्त ऋषि

सब उठकर एक पंक्ति से सिर को झुका करके दोनों हाथ से पैर छूकर प्रणाम किया। पीठ पर हाथ रख करके सबको आशीर्वाद देते हुए ब्रह्मा जी बोले—“आज से मृत्युलोक में जो मनुष्य अपने से बड़े को सिर झुकाकर पैर छूयेंगे उनके अभिमान, दरिद्रता और पाप करने की बुद्धि नष्ट होंगी। जब तक सृष्टि रहेगी तब तक चरण स्पर्श करने की परम्परा चलेगी।” कहने के पश्चात् वरदान देकर ब्रह्माजी ब्रह्मलोक चले गये। [प्रमाण यजुर्वेद में है]

सिर झुकाकर चरण छूने वाले व्यक्ति को चारो पदार्थ प्राप्त होते हैं—

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुः विद्या यशो बलम् ॥

अपने से बड़े माता, पिता, गुरु एवं माननीय, पूजनीय, साधु, ब्राह्मण और वृद्ध इत्यादि बड़ों का चरण स्पर्श करने वाले नर-नारियों को यश, सम्मान, बल की प्राप्ति होती है, आयु बढ़ती है। इतना ही नहीं जीवन में धन, सुख, शान्ति की प्राप्ति होती है।

प्रश्न—काशी ढूँढे वेद और पुराणों में कहा गया है। काशी की धरती पर चलने मात्र से मुक्ति कैसे प्राप्त होती है ?

उत्तर—काशी में तैंतीस कोटि देवता, अमर ब्रह्मा, ऋषि, जीवन-मुक्त साधु, महात्मा और सिद्ध एवं विरक्त, तपस्वी त्यागी तथा साधक; भगवान् के अनन्य भक्त, ज्ञानी, त्रिकालदर्शी, अग्निहोत्री आदि विद्वान् ब्राह्मण निवास करते हैं। वेदों ने डिम् डिम् घोष किया है कि काशी की दर्शन यात्रा करने मात्र से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष स्वतः हस्तामलक हो जाते हैं। चूँकि ऊपर कहे हुए दृश्य या अदृश्य देवता

त्रिकालदर्शी सिद्ध साधुओं के दर्शन और जो अदृश्य हैं, वे मनुष्य के नेत्र इनको देख नहीं पाते। इन जीवनमुक्त अमर ऋषियों और देवताओं के रास्ते में चलते समय शरीर में हवा लगते ही पाप, वासना, शरीर के अन्दर रहने वाले षड्विकार सब नष्ट (भस्म) हो जाते हैं। पाप एवं वासना से सूक्ष्म शरीर बनता है। सूक्ष्म शरीर ही प्राणियों को कभी स्वर्ग में ले जाता है, कभी नरक में डाल देता है। जो मनुष्य पाप कर्म करते हैं, उनको सूक्ष्म शरीर चौरासी लाख योनि में जन्म दिलाता है। वेद में विष्णु भगवान् कहते हैं, प्रातः तीन बजे काशी विश्वनाथ जी अपने सेवक दण्डपाणि, भैरव, वीरभद्र इत्यादि भक्तों को साथ में लेकर काशी की सीमा के अन्तर्गत तीर्थ मन्दिरों की दर्शन-यात्रा करने जाते हैं। विश्वनाथ जी काशी की गलियों में ढूँढ़-ढूँढ़कर मन्दिरों का दर्शन करते हैं, इसलिए वेदों में काशी ढूण्डे नाम पड़ा। काशी में जो नर, नारी प्रातः ३ बजे उठकर स्नान करके देव मन्दिरों की दर्शन-यात्रा करने जायेंगे उनको चारों पदार्थ प्राप्त होंगे—(१) धर्म, (२) अर्थ, (३) काम, और (४) मोक्ष, । विष्णु भगवान् की बात सुनकर ऋषि, मुनि प्रसन्न हुए।

प्रश्न—विश्व के मनुष्य काशी को गुरु क्यों कहते हैं? सनातन वैदिक, हिन्दू धर्म को मानने वाले काशी को गुरु क्यों मानते हैं तथा काशी में सभी सम्प्रदाय, सभी धर्म को मानने वाले एवं सभी जाति के मनुष्य काशी को गुरु क्यों कहते हैं?

उत्तर—ब्रह्मा जी ने सृष्टि करते समय सबसे पहले पशु, पक्षियों को मानसिक संकल्प से उत्पन्न किया पुनः मन से संकल्प करते ही सप्तऋषि (सात बालक) प्रगट हो गये। आगे वही बालक सप्तऋषि

के नाम से प्रसिद्ध हुए। सप्तऋषियों को देखकर ब्रह्मा जी प्रसन्न हो गये। ब्रह्मा जी सप्तऋषियों का नामकरण-संस्कार करने के पश्चात् बोले—“आप लोग काशी में जाकर काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करके तपस्या करो। सुनते ही सप्तऋषि आकाश मार्ग से काशी केदारेश्वर घाट में उतरे। केदार घाट में स्नान करके सप्तऋषियों ने दस हजार वर्ष तक तपस्या की। विश्वनाथ भगवान् प्रसन्न होकर वर देने के लिये गये। (जंगमबाड़ी मुहल्ला है; जंगमबाड़ी मठ में बाज भी सप्तऋषीश्वर हैं) सब ऋषि आँख बन्द करके तपस्या में लीन थे।

विश्वनाथ जी ने कहा कि आप लोग जिनका तप, ध्यान कर रहे हैं, वह मैं आप लोगों को वरदान देने के लिए आया हूँ। इतना कहते ही भी ऋषियों की समाधि नहीं खुली। विश्वनाथ जी ने अपना डमरू, कपोल (गाल) में छुवा दिया सप्तऋषियों की समाधि खुल गई। विश्वनाथ जी बोले—“वर मांगो” ऋषि लोगों ने कहा कि आप जो उचित समझे वही वर हमें देने की कृपा करें। विश्वनाथ जी कहने लगे—“हे सप्तऋषियों! विश्व में जितने मनुष्य होंगे, सब आप की सन्तान माने जायेंगे और मनुष्यों का गोत्र आप लोगों के नाम से चलेगा। सभी मनुष्य आप लोगों के वंशज माने जायेंगे।” पुनः विश्वनाथ जी बोले—“आप लोग अपने-अपने नाम से प्रत्येक मुहल्ले में शिवलिंग की स्थापना करके तीनों लोकों में सनातन वैदिक, धर्म, के प्रसार-प्रचार एवं भ्रमण करें। मावन मात्र के कल्याण के लिए नियम, आचरण, शिक्षा, दीक्षा और प्रवचन से मनुष्यों को सही मार्ग पर लगाने के लिए उपदेश करें। सबको आशीर्वाद दें। वरदान प्राप्त करके सप्त

ऋषियों ने काशी की स्तुति की और कहने लगे—“काशी हम लोग की गुरु है, काशी से ही हम लोगों को शिक्षा, दीक्षा, ज्ञान और वरदान प्राप्त हुआ, काशी हमारी गुरु है और विश्व का गुरु है। काशी में रहने वाले आपस में गुरु शब्द का प्रयोग करेंगे।” सप्तऋषियों ने काशी में वरदान दिया। काशी में सप्तऋषि, दर्शन, पूजन, यात्रा प्रत्येक शुक्ल पञ्चमी तिथि के दिन करनी चाहिए। प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजा की सामग्री गंगा जल साथ में लेकर दाहिने वर्त से यात्रा कर जंगमबाड़ी में कश्यपेश्वर का दर्शन, पूजन करने के पश्चात् सन्यास लेकर दर्शन, यात्रा प्रारम्भ करते हैं।

१—कश्यपेश्वराय नमः (मकान नं० डी २५/९ में है। मो० जंगमबाड़ी)

२—वज्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० २५/९ में है मो० जंगमबाड़ी)

३—लोमेश्वराय नमः (म० नं० डी० ३६/३३ में है मो० टेढ़ी बड़ादेव)

४—गीतमेश्वराय नमः (म० नं० डी ३६/३३ में है मो० टेढ़ी बड़ादेव)

५—पुलस्त्येश्वराय नमः (म० नं० सी० के० १०/२५ में है ब्रह्मनाल)

६—वशिष्ठेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ६/१७१ में है संकठा वसिष्ठधाम)

७—जमदग्नीश्वराय नमः (मु० मध्यमेश्वर)

सप्तऋषि दर्शन, पूजन, यात्रा करने वाले भक्तों के प्रति सप्त ऋषि प्रसन्न होकर दर्शनार्थियों को धन, सम्पत्ति, धर्म, सुख-शान्ति इस लोक में देकर सुखी रखते हैं, परलोक में मुक्ति प्रदान करते हैं।

ब्रह्मा जी को काशी में जो चमत्कार हुआ उसका वर्णन सुनिये। सत्ययुग के प्रथम चरण में काशी के ब्रह्मा घाट में ब्रह्मा जी आकाश मार्ग से उतरे। जमीन पर चरण रखते ही आकाशवाणी हुई—“ब्रह्मा जी आपकी सृष्टि में जो जन्म-जन्मान्तर के और इस जन्म के पाप कर्म करने वाले हों इन सब पापियों को काशी भेज दीजिए। सब पापियों को काशी मुक्त कर देगी।” आकाशवाणी सुनकर ब्रह्मा जी आश्चर्यचकित हुए—“मैं विश्व के सभी तीर्थों में गया, ऐसी आकाशवाणी सुनने को नहीं मिली। यह काशी मेरा गुरु है। मैंने मनुष्यों को तपस्या, आचरण, साधना और उपासना कर्म, ज्ञान की शिक्षा-दीक्षा दी है। कहते हुए ब्रह्मा जी ब्रह्मलोक चले गये। प्रमाण अथर्ववेद में है।

नारद जी को काशी में आते ही जो चमत्कार हुआ उसका वर्णन सुनिये। सत्ययुग के चतुर्थ चरण में नारद आकाश मार्ग से काशी विश्वनाथ घाट में उतरे। पृथ्वी पर पैर रखते ही आकाशवाणी हुई (नारद जी चौदह लोकों से भ्रमण करते हुए काशी आ रहे थे)—“नारद जी विश्व में जितने पापी हों उन सबको प्रेरणा करके काशी में भेज दीजिए। आकाशवाणी सुनकर नारद जी ने प्रश्न किया क्या पाप करने वाले को काशी मुक्ति देगी?” पुनः आकाशवाणी हुई—“काशी में पाप कर्म करने वाले को भी भैरव भय दिखा कर मुक्त कर देते हैं।” नारद जी बोले—“मैं तीनों लोकों के तीर्थों में गया, मुझे कहीं भी ऐसी शिक्षा नहीं मिली। काशी

मेरा परम गुरु है।” कहने के पश्चात् नारद जी कंलाश चले गये (प्रमाण कार्तिकेय उपपुराण में है)।

वेद पुराण और धर्म शास्त्रों में वर्णन है—

त्रिभिर्वर्षैस्त्रिभिर्मासैस्त्रिभिः पक्षैस्त्रिभिर्दिनैः ।

अत्युत्कटैः पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते ॥

भावार्थ—वेद में लिखा है कि काशी में जैसे पुण्य बढ़ते हैं, वैसे ही पाप भी बढ़ता है। पापी पाप करने वाला व्यक्ति तीन महीने तीन वर्षों तक और पापी का पुण्य अधिक हो तो १२ वर्षों तक रह सकता है। १२ वर्षों के पश्चात् वह समूल नष्ट हो जाता है। पाप करने वाले व्यक्ति पर विघ्न और संकट आते रहते हैं। काशी में निन्दा न कहे हुए, शिवभक्ति, परोपकार-दान करते हुए, वेदान्त और शिव सम्बन्धी ध्वज सत्संग करते हुए काशी वास करना चाहिए। धनी वर्गों को अपने सन्तान और कुल की वृद्धि हेतु और कुल का उद्धार करने के लिए अन्न क्षेत्र खोलना चाहिए और सत्संग, यथाशक्ति दान करते हुए काशी में रहना चाहिए।

वैकुण्ठ से विष्णु भगवान् काशी में आये। सत्ययुग के तृतीय चरण में काशी विश्वनाथ घाट में पृथ्वी पर विष्णु भगवान् के पैर रखते ही आकाशवाणी हुई—“हे विष्णु, काशी में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारों पदार्थ स्वतः सबको प्राप्त होता है। आपको क्या चाहिए।” आकाशवाणी सुनकर भगवान् विष्णु चकित होकर बोले—“मैं विश्व के सभी तीर्थों में गया, कभी भी इस प्रकार की बात सुनने में नहीं आयी” काशी को नमस्कार करके, काशी मेरा गुरु है—कहते हुए विष्णु भगवान् वैकुण्ठ चले गये।

वेदव्यास जी को काशी आगमन के समय में जो चमत्कार हुआ उसका वर्णन सुनिये द्वापर युग के द्वितीयचरण में जब वेदव्यासजी आकाश मार्ग से काशी में पधारे तथा सोमनाथ [मान मन्दिर] घाट में स्नान करके संध्या कर रहे थे, उसी समय तीन वर्ष का बालक आकर संस्कृत में तोतली बोली से वेद व्यास से बोला—“गुरुजी आपने काशी की अन्नपूर्णा जी के विषय में पुराणों में कुछ भी नहीं लिखा।” बालक के वचन सुनते ही व्यास जी चौंक उठे, बोले—“काशी मेरा गुरु है। क्योंकि मैं विश्व के तीर्थों में गया, कहीं भी मुझे सुज्ञाव नहीं मिला।” यह कहते वेदव्यास जी बदरिकाश्रम चले गये।

[प्रमाण नन्दी उप पुराण में है ।]

भारत में कालिदास विद्वान् हुए। शास्त्रार्थ में दिग्विजय करते हुए काशी के विद्वानों को शास्त्रार्थ में परास्त करने के लिए काशी आये। दशाश्वमेध घाट में जाकर स्नान करके संध्या कर रहे थे। भवानी जी साधारण स्त्री की भेष बनाकर, दशाश्वमेध घाट में दो घड़ों में जल भरकर एक घड़ा कटि में दूसरा घड़ा सिर पर रखकर कालिदास जी के सामने आकर खड़ी हुई। बहुतदेर तक कालिदासजी को देखती रही। कालिदास जी संस्कृत में बोले—“क्या देख रही हो।” भवानी बोली—“तेरे जैसा ही शास्त्रार्थ करके दूसरे को परास्त करने वाला और मूर्ख, अज्ञानी, तुम्हारी ही शकल का मेरा नौकर खो गया है। मैं उसी को देख रही हूँ।” भवानी संस्कृत में बोली। भवानी की बात सुनकर कालिदास चौंक उठे—“मैं भारत के तीर्थों में गया, कहीं भी ऐसी शिक्षा नहीं मिली। काशी मेरा गुरु है” कहते हुए चले गये।

प्रश्न—विश्व में कहीं भी शबदाह संस्कार यात्रा में 'राम नाम सत्य है' नहीं कहते हैं। काशी में क्यों 'राम नाम सत्य है' कहते हैं, इसका प्रमाण क्या है ?

उत्तर—ऋग्वेद के चतुर्थ भाग में 'राम नाम सत्य है' का वर्णन है। सत्ययुग के तीसरे चरण में दुर्वासा ब्रह्मर्षि काशी विश्वनाथ जी का दर्शन करने के लिए काशी में आये। काशी विश्वनाथ जी के अविमुक्त भवन के द्वार पर द्वारपाल सनत् ने दुर्वासा जी को रोक दिया। दुर्वासाजी ने कहा—“हमें भवन में जाने से कभी भी रोका नहीं गया। तुम क्यों रोकते हो ?” दुर्वासा जी को क्रोध आया, उस समय दुर्वासा जी ने 'मृत्यु हो' शाप दिया। शाप देकर दुर्वासा जी भवन में चले गये। विश्वनाथ जी ने ब्रह्मर्षि दुर्वासा जी का स्वागत किया और जलपान कराया। दुर्वासा जी को कुछ दूर पहुँचाने लिए विश्वनाथ जी अविमुक्त भवन के बाहर आये। देखा द्वारपाल की मृत्यु हो गई थी। विश्वनाथ जी ने सबसे कहा कि एक बार नारद जी को सनत् ने अपशब्द कहा था तब नारदजी बोले थे कि दुर्वासाजी के वचनसे तुम्हारी मृत्यु होगी। नारद जी के शाप के कारण सनत् की मृत्यु हुई। अपने शरीर से किया हुआ कृकर्म या सुकर्म-दोनों कर्म, करने वाले व्यक्ति को भोगना पड़ता है। अच्छे कर्म करने वाले के घर में धन, सम्पत्ति और सुख, शान्ति स्वतः (घर में बिना) बुलाये आते हैं। (मनुष्य मात्र को दुष्कर्म से बचकर के सत् कर्म करते हुए पुरुषार्थ करके उपासना, व्रत, दान, यज्ञ, एवं निष्काम सेवा और सभी पर दया तथा जो जैसा व्यक्ति हो उनके कल्याण के लिए उपदेश करना चाहिए।) विश्वनाथ जी ने कहा कि सनत् जी काशी में मरकर

मुक्त हो गये । काशी में मरने वाले व्यक्ति का पुनः जन्म नहीं होता । विश्वनाथ जी के वचन सुनकर सब प्रसन्न हो गये । ब्राह्मणों ने दुर्वासा जी से कहा कि यह सनत् ब्रह्मा जी का मानसपुत्र हैं । आप को ब्रह्म-हत्या का पाप लगा है । आप मणिकर्णिका घाट में स्नान करके शिवलिङ्ग की स्थापना और मन्दिरों का जीर्णोद्धार कीजिये । ब्राह्मणों का वचन सुनकर दुर्वासा जी ने शिवलिङ्ग की स्थापना की । दुर्वासा द्वारा स्थापित लिङ्ग का नाम दुर्वासेश्वर पड़ा । दुर्वासा जी त्रिलोचनेश्वर महादेव जी के मंदिर का जीर्णोद्धार करके तपस्या करने के लिए चले गये । इधर विश्वनाथ जी ने भैरव और दण्डपाणि जी से कहा कि सनत् के दाह संस्कार शव यात्रा में जाने के लिए देवता, मनुष्य, एवं भूत, प्रेत, वेताल सबको निमन्त्रित करो । विश्वेश्वरगंज (वर्तमान में टाउनहाल) में सभा लगी । सबसे आगे बाजा बजाने वाले चले, उनके पीछे नृत्य करने वाले, उनके पीछे मुर्दा बाँस के ऊपर सजा हुआ चार व्यक्ति कन्धे पर रखकर चल रहे थे । सबके पीछे देवता, उनके पीछे विश्वनाथ जी, विश्वनाथ जी के पीछे दानव, उनके पीछे भैरव आदि उच्चपद के अधिकारी, उनके पीछे भूत-प्रेत वेताल इत्यादि भक्त चले । उसी समय काशी विश्वनाथ जी बोले कि सब मिलकर एक स्वरसे “राम नाम सत्य है” बोलो सत्ययुग के तीसरे चरण से आज तक अखण्ड और ‘निरन्तर राम नाम सत्य है’ की ध्वनि काशी में शव यात्रा में होती है और विश्वनाथ की आज्ञा से ही हो रही है । काशी विश्वनाथ जी ने सनत् की मृत्यु के सोलहवें दिन विशाल साधु, ब्राह्मण भोजन (भोज) भण्डारा किया ।

विश्वनाथ जी की आज्ञा से आज भी मठ, मन्दिरों में मृतक व्यक्ति के घर में सोलहवें दिन साधु, ब्राह्मण भोज, भण्डारा होता है।

प्रश्न—काशी में राजपरम्परा कब से चली और राजतिलक (अभिषेक) प्रथम किसने किया तथा पहला राजा काशी में कौन बना ?

उत्तर—सत्ययुग के द्वितीय चरण में ब्रह्मा जी के मानसिक संकल्प से उत्पन्न मानस पुत्र हुआ। नाम करण-संस्कार करने के पश्चात् ब्रह्मा जी ने कहा कि हिमालय पर्वत पर जाकर भगवान् शंकर की तपस्या करें। [सत्ते नाम का मनुष्य] नेपाल के मुक्ति नाम क्षेत्र के धौलागिरि पर्वत पर जाकर तपस्या करने लगे। भगवान् शंकर तपस्या से प्रसन्न होकर वर देने के लिए गये और वर माँगे कहा। सत्ते जी ने कहा कि आप जो उचित समझे वहीं वरदान दें। भगवान् शंकर वरदान देते हुए बोले—“पहला वरदान राजा बनकर प्रजा का पालन करो, दूसरा वरदान शरीर के अन्त में मुक्त कर दूँगा। वरदान देकर भगवान् शंकर अर्न्तध्यान हो गये।

नारदजी काशीमें विश्वनाथ भगवान् का दर्शन करने गये। नारद जी ने विश्वनाथ जी से कहा कि तपस्वी, विरक्त, बुद्धिमान्, साधु को शंकर जी ने राजा बनने का वरदान दिया है। उनको आप काशी का राजा बनाइये। नारदजी का वचन सुनकर विश्वनाथजी भगवान् विष्णु से बोले—“काशी का राजा सत्ते को बनाया जाय।” विष्णु जी ने ब्रह्माजी का स्मरण किया। ब्रह्माजी प्रगट हो गये। विष्णुजी ब्रह्मा जी से बोले—“आप के पुत्र सत्ते को विश्वनाथ जी काशी का

राजा बनाना चाहते हैं।" ब्रह्मा जी बोले—“कल अच्छा मुहूर्त है।” विष्णु भगवान् सत्ते को लेने गये। सत्ते जी हाथ में कमण्डल, दाहिने हाथ में पलास का दण्ड लिए, सिर में जटा धारण किए हुए, सर्वाङ्ग शरीर में भस्म लगाये हुए, कौपीन (लगोटी) पहने हुए ब्रह्मचारी साधु के भेष में आये। फाल्गुन कृष्ण महाशिवरात्रि के दिन प्रातः ११ बजे ब्रह्मा जी ने सत्ते ब्राह्मण को काशी के वर्तमान में बसन्त कालेज में राजतिलक कर दिया। विष्णुभगवान् राज्याभिषेक करके काशी के राजा को वरदान देते हुए बोले—“जब तक पृथ्वी रहेगी तब तक काशी की राजपरम्परा चलती रहेगी। जो भी काशी का राजा बनेगा काशी का राजा धर्मात्मा होगा। विष्णु भगवान् ने काशी के राजा को वरदान दिया। अथर्ववेद में वर्णन है।

विश्व के राजा विद्वान्, विरक्त, तपस्वी साधु से उपदेश लेते हैं और विद्वान् ब्राह्मणों की आज्ञा से राजा प्रजा का पालन करते हैं। भारत के इतिहास में साधु और ब्राह्मण की आज्ञा से राजा राज्य करता है और सुखी रहता है।



काशी में प्रसिद्ध लोलार्क कुण्ड का इतिहास

लोलार्ककुण्डाय नमः

मकान न० डी० २/३१ भदनी, काशी में है ।

विधाय वार्षिकीं यात्रां नरः पापैः प्रमुच्यते ।
कृतानि यानि पापानि नरैः संवत्सरावधिः ॥
नश्यन्ति एषतस्तानि षष्ट्यंके लोलदर्शनात् ।
लोलार्कसङ्गमे स्नात्वा दानं होमं सुरार्चनम् ॥
यत्किञ्चित्क्रियते कर्म तदान्त्याय कल्पते ।
प्रत्येकवारं लोलार्कं यः पश्यति शुचिन्वतः ॥
न तस्य दुःखं लोकेऽस्मिन्कदाचित्सम्भविष्यति ।
सेवन्ते तं नरं क्लेशाः तं चक्षुर्व्याधिसम्भवाः ॥

(काशी खण्ड)

अर्थ—काशी में लोलार्क कुण्ड पर जो मनुष्य वार्षिक यात्रा करता है, सभी पापों से मुक्त हो जाता है । मनुष्य के द्वारा एक सम्बत्सर (एक वर्ष) के मध्य में किये गये सभी पाप लोलार्क कुण्ड में स्नान करके लोलार्क सूर्येश्वर के दर्शन करने से क्षण भर में नष्ट हो जाते हैं । लोलार्क, गङ्गा संगम लोलार्क कुण्ड और गङ्गाजी के संगम लोलार्क घाट में स्नान करके दान हवन देवार्चन जो भी शुभ कर्म किया जाय वह अनन्त गुणा फल देने वाला होता है । प्रत्येक रविवार को और प्रतिदिन दर्शन करने वालों को (लोलार्क) चिन्ता नहीं देते । सब चिन्तायें दूर हो जाती हैं ।

रविवारे रवेयात्रा षष्ठ्यां वा रविसंयुजि ।

तथैव रविसप्तम्या सर्वविघ्नोपशान्तये ॥६५॥

(काशी खण्ड अ० १००)

अर्थ— रविवार के दिन जब षष्ठी या सप्तमी तिथि पड़ती हो, जिसको पद्मयोग कहते हैं। इस पद्म योग में १२ सूर्य ग्रहण में स्नान करने के समान फल देने वाला माना जाता है। ऐसे महायोग के दिन पाप और सर्व विघ्नों की शान्ति के लिए सूर्य यात्रा करनी चाहिए। जिनकी आँखपू की ज्योति कमजोर हो गयी हो वे नर-नारी सूर्य यात्रा विधि बँक करें, उनके नेत्र की ज्योति में वृद्धि होती है और चर्मरोग अच्छे होते हैं। जो यात्री काशी की १२ सूर्य यात्रा करने में असमर्थ हैं; ब्राह्मण को वरणी करके यात्रा करने भेज दें और वे प्रतिदिन लोलार्क कुण्ड के दर्शन करें। घर में या किसी जलाशय में स्नान करके धोया हुआ शुद्ध वस्त्र पहन कर, अपनी मनःकामना पूर्ति करने के लिए अमुक रोग, अमुक संकट, अमुक पुत्र प्राप्ति के लिए इत्यादि संकल्प करके हाथ में फल-फूल, पैसा, पूजा की सामग्री साथ में लेकर जिस तीर्थ में और जिन मन्दिरों में दर्शन करने जाना हो, उनका स्मरण और कीर्तन करते हुए शनैः-शनैः चले। तीर्थ एवं (साधु महात्मा) मन्दिरों का दर्शन दूर से होते ही शरीर झुकाकर प्रणाम करने के पश्चात् जाकर स्थान में दर्शन करने से यात्री की सम्पूर्ण (जिसकी जो इच्छा हो) इच्छा पूर्ण होती है।

त्रिपुण्ड्रं मस्तके धृत्वा वतुलं रक्तचन्दनम् ।

निधने याति वेंकुण्ठं मुक्तो भवति वै जनः ॥

(स्कन्दपुराणे पशुपतिखण्डे)

अर्थ—जो मनुष्य मस्तक में त्रिपुण्ड लगाते हैं और त्रिपुण्ड्र के बीच में गोल रक्त चन्दन लगाते हैं, वे व्यक्ति मरने पर (जन्म मृत्यु से मुक्त होकर) वैकुण्ठ में जाते हैं ।

भाद्र शुक्ल षष्ठी तिथि के दिन जो लोलार्क छठ के नाम से प्रसिद्ध हैं, लोलार्क कुण्ड में एक विशाल स्नान, दर्शन, पूजा मेला लगता है । भारत के कोने-कोने से लोग स्नान करने आते हैं । नेपाल, भूटान, श्रीलंका और पूर्वी बंगाल आदि से भी लोग स्नान करने आते हैं । तीर्थों में स्नान करने जाने के एक दिन पहले प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में नित्य कर्म से निवृत्त होकर संध्या तर्पण इत्यादि करने के पश्चात् प्रत्यक्ष सूर्य नारायण भगवान् को लाल फूल, लाल चन्दन छोड़ कर अर्घ्य दान दें । विद्वान् नन्दीश्राद्ध करते हैं और ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं, जो भोजन कराने में असमर्थ हैं, वे साधु ब्राह्मणों को एवं मन्दिरों में सीधा लगाकर भेजते हैं । तीर्थों में स्नान करने का विशेष विधान इस प्रकार है—शौच, स्नान आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र पहन करके तीर्थ में स्नान करने जाने से इस जन्म और जन्म-जन्मान्तर के स्थूल पाप, ताप, संकट, रोग-दुःख सब नष्ट हो जाते हैं । भाद्र शुक्ल लोलार्क छठ के दिन लगभग एक लाख यात्री प्रातः ३ बजे से सायं ७ बजे तक स्नान करते हैं, “वेद, पुराण एवं धर्मशास्त्रों में सचैल स्नानम्” कहा गया है । जो जैसा कपड़ा पहने है, उसी से स्नान करना चाहिए । स्नान करके तीर्थों से दूर जाकर के गीला कपड़ा बदलना चाहिये । लोलार्क कुण्ड की कृपा से स्नान करके हजारों नर-नारियों को पुत्र (लड़का) रूपी रत्न की प्राप्ति होती है ।

नोट—लोलार्क कुण्ड के तीर्थ पुरोहित से नम्र निवेदन करता हूँ कि पुलिस से सहायता लेकर कुण्ड के ऊपर मैदान में कपड़ा बदलने की व्यवस्था कर कुण्ड के अन्दर कपड़ा बदलना इत्यादि कोई भी कार्य करने न दें और कुण्ड के तीनों फाटक से लाइन से स्नान करने जाने दें, जिस फाटक से जो यात्री गया है उसे दूसरे तरफ से कपड़ा पहने हुए ऊपर जाने की व्यवस्था करें और कुण्ड को पवित्र रखें। कुछ अज्ञानी स्त्रियाँ (महिलाएँ) हाथ की चूड़ी, केशको शरीर से निकाल कर स्नान से पहले फेंक देती हैं और कपड़ा बदलकर कुण्ड में ही छोड़ देती हैं, ऐसा सुनने में आया है, ऐसा अभद्र कार्य धर्मशास्त्र के विरुद्ध है। एक महीना पहले से ही समाचार पत्र के माध्यम से रोक लगा देनी चाहिए।

कार्तिक शुक्ल सूर्य षष्ठी, जिसको सूर्य छठ कहते हैं, छठ व्रत सूर्य की उपासना के नाम से प्रसिद्ध है। सूर्य षष्ठी व्रत कथा का प्रमाण, देवी भागवत, अग्नि पुराण, स्कन्द पुराण, मार्कण्डेय पुराण, ब्रह्मपुराण और सूर्य उपपुराण में वर्णित हैं। सूर्य षष्ठी व्रत कथा नाम की पुस्तक भी उपलब्ध है। छठ के एक दिन पहले के दिन नर-नारी व्रत रहते हैं, पूजा की सामग्री एकत्रित करते हैं, सायंकाल ४ बजे जो जहाँ रहते हैं, घर के आंगन को गोबर से लीप करके घर या पास में दीप करना चाहिए, बड़, पीपल और बेल के पेड़ के नीचे, पोखरा, तालाब एवं मठ-मन्दिर, नदी और गङ्गा जी में दिया-बत्ती जला करके सायं ४ बजे से सूर्य नारायण को अर्घ्य देने के लिए प्रतीक्षा करते हैं और सुबह भी ४ बजे स्नान करके पूजा की सामग्री लेकर उसी जगह जाते हैं। सूर्य नारायण भगवान् के उदय की प्रतीक्षा करते हैं। उदय होते

ही जल को पात्र में रखकर लाल फूल, लाल चन्दन, पैसा, लाल अक्षत छोड़कर सूर्य को अर्घदान करते हैं। गोदान, अन्नदान, तुलादान करते हैं और जमीन, मकान इत्यादि धनी लोग दान करते हैं। घर में जाकरके साधु ब्राह्मण को भोजन करा करके व्रत का समापन कर पारायण करते हैं। भारत के बिहार प्रान्त में विशेषकर यह व्रत मनाते हैं। गङ्गोत्तरी से लेकर गङ्गा सागर तक गङ्गा के किनारे स्नान, दर्शन और सूर्य नारायण को अर्घ दान करते हैं। काशी में लगभग ३ लाख यात्री स्नान करके सूर्य नारायण को अर्घ देते हैं।

भाद्र शुक्ल पक्ष के बड़े रविवार के दिन सूर्य नारायण भगवान् का जन्म हुआ था इसलिए बड़ा रविवार कहा जाता है। बड़े दिन या इतवार के दिन सूर्य जी की उपासना करते हैं। प्रातः स्नान करके सूर्योदय के समय जल में लाल चन्दन, सिन्दूर, लाल फूल, अक्षत छोड़कर सूर्य नारायण भगवान् को अर्घ दान देते हैं। (प्रतिदिन और मकर संक्रान्ति के दिन इसी विधि से अर्घ देना चाहिए)। व्रत रहते हैं। बड़ा दिन लोलार्क कुण्ड में स्नान, दर्शन एवं मेला लगता है। आदिकेश में केशवादित्य के दर्शन एवं मेला लगता है। काशी के उत्तर में रहने वाले यात्री केशवादित्य सूर्य के दर्शन करके १२ सूर्य दर्शन, यात्रा चलते हैं, काशी के दक्षिण में रहने वाले भक्त लोग लोलार्क कुण्ड में यात्रा प्रारम्भ करते हैं। व्रत रहने वाले और सूर्य यात्रा करने वाले यात्रियों के एक वर्ष तक आने वाले विघ्न और कष्ट दूर हो जाते हैं। यात्रियों के मनोरथ पूर्ण होते हैं। जब रविवार के दिन षष्ठी या सप्तमी तिथि पड़े तो विशेष योग आता है। उस दिन सूर्य व्रत उपासना सूर्य दर्शन, यात्रा करने वाले व्यक्ति के सात जन्म के स्थूल पाप नष्ट होते हैं। यह १२ आदित्य यात्रा छः घण्टा में पूर्ण हो जाती है।

काशी में द्वादश सूर्य-दर्शन-यात्रा

सूर्य यात्रा प्रत्येक रविवार के दिन करनी चाहिए । विशेष महत्त्व-पूर्ण दिन निम्नांकित है—

रविवारे रवेर्यात्रा षष्ठ्यां वा रविसंयुजि ।

तथैव रविसप्तम्यां सर्गविघ्नोपशान्तये ॥६५॥

(काशीखण्ड अ० १००)

अर्थ—रविवार के दिन जब षष्ठी या सप्तमी तिथि पड़ती हो जिसको पद्म योग कहते हैं । इस पद्म योग में सूर्यग्रहण में स्नान करने के समान फल माना जाता है । ऐसे महायोग के दिन पाप और सर्व विघ्नों की शान्ति के लिए सूर्य यात्रा करनी चाहिए, जिनकी आंख की ज्योति कमजोर हो गई हो, वे नर-नारी सूर्य यात्रा विधिपूर्वक करें । उनके नेत्र की ज्योति में वृद्धि होती है और चर्मरोग अच्छे होते हैं ।

रविवार के दिन प्रातः सन्ध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर लाल फूल, लाल अक्षत, लाल चन्दन एवं लाल वस्त्र इत्यादि साथ में लेकर (कीर्तन करते हुए) यात्री लोलार्क (तीर्थ) कुण्ड में आते हैं, लोलार्क कुण्ड में स्नान करके भस्म आदि धारण करके लोलार्कादित्य को मीठा दूध, मिष्ठान्न, धान का लावा, ऋतु फल आदि चढ़ाते हैं । ब्राह्मणों को मीठा दूध चढ़ा हुआ दूध पिलाकर दक्षिणा देते हैं । (काशी खण्ड अध्याय ४६, श्लोक ५३) । लोलार्कादित्य गणेश जी अर्कविनायक के मन्दिर में पूर्वाभिमुख हैं, लोलार्कादित्य भी पूर्वाभिमुख हैं ।

काशी में गर्गसंहिता के विमोचन का प्रमाण और

प्राचीन इतिहास

काशी में गर्गसंहिता के विमोचन का प्रमाण देते हुए सन् १९२० ई० में मेरे गुरु जी दण्डी स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती [करपात्री जी महाराज] जी प्रवचन करते हुए बोले—“नन्द जी के गुरु पुरोहित गार्गाचार्यजी ने कृष्णजी के मथुरासे द्वारिका जानेके पश्चात् गर्गसंहिता लिखना प्रारम्भ किया। महाभारत का युद्ध होने के पश्चात् युधिष्ठिर और कुन्ती जी से आज्ञा लेकर कृष्ण भगवान् द्वारिका जाने के बाद गार्गाचार्य जी गर्गसंहिता लेकर काशी के धर्म कूप मोहस्ला में जाकर धर्मेश्वर के बगल में रहने लगे। इधर काशिराज जी को पता लगा कि गार्गाचार्य जी काशी में आ गये हैं, सुनकर अपने राजगुरु शिवशंकर जी को और वेदपाठी विद्वान् ब्राह्मण को साथ में लेकर काशीनरेश गार्गाचार्य जी से मिलने के लिए धर्म पीठ पर गये। गार्गाचार्य जी से मिलकर स्वागत करने के पश्चात् काशिराज बोले कि राजमहल में चलिए। गार्ग जी बोले कि मैं गर्गसंहिता का आप से विमोचन करने के लिए आया हूँ। कल ११ बजे इसी धर्मपीठ में विमोचन होगा। कहकर राजा अपने राजमहल (वर्तमान में वसन्त कालेज के नाम से प्रसिद्ध है। प्राचीन इतिहास में वसन्त कालेज की भूमि गङ्गा, वरुणा के बीचमें ६ किलोमीटर लम्बी और चौड़ी थी। वर्तमान में गङ्गा जी और वरुणा नदी से कटकर यह भूमि आधी रह गई है। पहले भी इस भूमि में राजा का राजमहल था भविष्य में भी राजमहल बन होगा) में चले गये। दूसरे दिन काशिराज गर्गसंहिता का विमोचन

वन करने के पश्चात् चले गये। गर्गाचार्य जी ने शिवलिङ्ग की स्थापना की उस शिवलिङ्ग का नाम गर्गेश्वर पड़ा। मन्दिर धर्मकूप से सटा हुआ पूर्व बगल के शिवमन्दिर में है।

लोलाकीदित्यविनायकाय नमः।

(१) लोलाकीदित्यसूर्याय नमः (मु० लोलार्क कुण्ड)। दर्शन, पूजन करने के पश्चात् 'हर हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ मंगे' शीतल करते हुए, धीरे-धीरे उत्तर की ओर यात्री चलते हैं।

सोनारपुरा, जंगमबाड़ी, खारी कुआं होते हुए, हरीकेशेश्वर के बगल में त्रिमलादित्य हैं। इनके दर्शन-पूजन से कुष्ठ रोग नाश होता है।

(काशीखण्ड, अ अ० ५१, श्लोक ९९)

(२) त्रिमलादित्याय नमः (म० नं० डी० ३५।२७३ में है, मु० खारी कुआं)।

जंगमबाड़ी खारी कुआं से उतर नई सड़क में सनातन धर्म काटर कालेज से पश्चिम जाने वाली गली में साम्बादित्य सूर्य तीर्थ के बगल में सूर्य शक्ति तीर्थ कुआं के रूप में है।

(काशीखण्ड, अ० ४८, श्लोक ४८)

(३) साम्बादित्य सूर्याय नमः (म० नं० डी० ५१।९० में है, मु० सूर्यकुण्ड)।

जो यात्री चलने में असमर्थ होते हैं वे साम्बादित्य की शीत यात्रा करके यहीं विश्राम करते हैं। दूसरे रविवार के दिन यात्रा पूर्ण करते हैं। सूर्य कुण्ड से उतर लोहटिया, जैतपुरा होते हुए पी. टी. रोड, जी. टी. रोड से पश्चिम बगल में बकरिया कुण्ड के पूर्व

तट में जोगीबीर के नाम से प्रसिद्ध है। जोगीबीर के पूर्व बगल में बड़े हनुमान जी के मन्दिर में भी दर्शन करें।

(काशीखण्ड, अ० ८७)

(४) उत्तरार्कादित्याय नमः (म० नं० जे० १७।१३ में हैं, मु० बकरिया कुण्ड)। बकरिया कुण्ड से उत्तर बाराणसी सिटी स्टेशन के पश्चिम रेलवेगेट से लाइन पार करके राजघाट जाने वाली सड़क से बसन्त कालेज होते हुए यात्री आदिकेशव जाते हैं।

(काशीखण्ड, अ० ५१, श्लोक ७३)

केशवादित्य सूर्य अपने दर्शन करने वाले भक्तों को अज्ञान रूपी अन्धकार को नष्ट करके सूर्य और विष्णु की भक्ति देते हैं।

(५) केशवादित्याय नमः (म० नं० ए० ३७।५१ में स्थित मु० गंगा वरुणा संगम आदिकेशव (बसन्त कालेज)। ज्ञान केशव आदि के दर्शन करके उसी मार्ग से (बसन्त कालेज होते हुए, जी० टी० रोड पहुँचते ही गंगा किनारे जाने वाली पगडण्डी रास्ते से पार्क के नीचे से प्रह्लाद घाट होते हुए मच्छोदरी पार्क के पूर्व कामेश्वर गली में खखोलादित्य हैं।

(काशीखण्ड अ० ५० श्लोक १४)

(६) खखोलादित्याय नमः (म० नं० ए० २।९ में स्थित हैं, मच्छोदरी-त्रिलोचन)। खखोलादित्य से पूर्व त्रिलोचनेश्वर के मन्दिर में अरुणादित्य हैं।

(काशीखण्ड अ० ५१, श्लोक १२१)

(७) अरुणादित्याय नमः (म० नं० ए० २।८० में स्थित हैं, त्रिलोचन घाट)। त्रिलोचन से दक्षिण दुर्गाघाट होते हुए मंगलागोरी, मंगलागोरी, गभस्तीश्वर के दर्शन करने के पश्चात् मयूखादित्य

रविवार के दिन दर्शन पूजन करने वाला व्यक्ति कभी भी दरिद्र और रोगी नहीं होता है ।
(काशीखण्ड, ० ४९, श्लोक ९३) ।

(८) मयूखादित्याय नमः (म० नं० के० २४।३४ में हैं, मु० मंगला-
गौरी) । मयूखादित्य से दक्षिण में हैं । यमादित्य वशिष्ठेश्वर के बगल
में हैं ।
(काशीखण्ड अ० ५१, श्लोक १०९) ।

(९) यमादित्याय नमः (संकठाघाट) । सिन्धियाघाट से दक्षिण
ललिताघाट मंगा केशव जी के मन्दिर में हैं ।
(काशीखण्ड, अ० ५१, श्लोक ४) ।

(१०) गंगादित्याय नमः (म० नं० डी० १।६६ में स्थित हैं, मु०
ललिताघाट) । ललिताघाट से दक्षिण आशापूर्ण हनुमान जी के बगल
में वृद्धादित्य हैं, प्रत्येक रविवार के दिन प्रणाम करके जो दर्शन
करता है वह अभीष्ट सिद्धि पाता है और वृद्धावस्था में रोग नहीं
लगता है ।
(काशीखण्ड, अ० ५१, श्लोक ४३) ।

(११) वृद्धादित्यसूर्याय नमः (म० नं० डी० ३।१६ में स्थित हैं,
मु० मीरघाट) । मीरघाट से पश्चिम सूर्य हनुमान जी के मन्दिर में
द्रौपदादित्य हैं ।
(काशीखण्ड, अ० ४९) ।

(१२) द्रौपदादित्यसूर्याय नमः (म० नं० सी० के० ३५।२१ में हैं
मु० अन्नपूर्णा गली) । प्रतिदिन जो नर-नारी द्रौपदादित्य के दर्शन
करेंगे, अन्न, धन-धान्य आदि उनके घर में परिपूर्ण होता रहेगा ।
जो व्यक्ति द्रौपदादित्य को नमस्कार करके विश्वनाथ जी का दर्शन
करते हैं उनके दुःख, अज्ञान, अन्धकार द्रौपदादित्य अपने किरणों
द्वारा दूर करते हैं और यात्रियों के मनोरथ पूर्ण होते हैं । अन्नपूर्णा

विश्वनाथ जी आदि के दर्शन करने के पश्चात्, सूर्य यात्रा पूर्ण होती है। संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को दक्षिणा देकर साधु-महात्मा को जलपान देकर सूर्यनारायण भगवान् का स्मरण करते हुए यात्री अपने अपने घर जाते हैं। कोई-कोई यात्री दूसरे दिन तीन घण्टे का कीर्तन करते हैं, तीन घण्टे का रामायण पाठ करते-कराते हैं। साधु, ब्राह्मण को भोजन कराते हैं। श्रीसूर्यापणमस्तु। हर हर महादेव। सूर्ययात्रा के सम्बन्ध में काशी दर्शन, द्वितीय संस्करण में प्रमाण और प्रत्यक्ष फल का वर्णन लिखा गया है।

श्रेयसां भाजनं चैतन्नृजन्म न मुधा नयेत् ।

देवानामपि दुष्प्राप्यं काशीसन्दर्शनादृते^१ ॥

समस्त कल्याणों का आधार और देवताओं को भी दुष्प्राप्य इस मनुष्य जन्म को बिना काशी के दर्शन किये वृथा (व्यर्थ) नहीं करना चाहिए।

तुलापुरुषदानेन यत्पुण्यं सम्यगाप्यते ।

काशीदर्शनमात्रेण तत्पुण्यं श्रद्धयाऽस्तु वै^२ ॥

सम्यक् प्रकार से तुलापुरुष दान करने से जो पुण्य प्राप्त होता है, श्रद्धापूर्वक काशी के दर्शन करने मात्र से वही पुण्य प्राप्त होता है।

१. का० ख० ५०।१३३, २. वही—३६।९३;

अन्यत्र विहितं पापं नश्येत् काशीनिरीक्षणात् ।

काश्यां कृतानां पापानां दारुण्यं यातना^१ ॥

दूसरे स्थानों पर किया हुआ पाप काशीको देखते ही (दर्शन करते ही) विनष्ट हो जाता है, परन्तु काशी में किये हुए पापों के लिए घोर भैरवी यातना भोगनी ही पड़ती है ।

प्रयागस्नानपुण्येन यत्पुण्यं स्याच्छिवप्रदम् ।

काशोदर्शनमात्रेण तत्पुण्यं श्रद्धयाऽस्त्वह^२ ॥

प्रयाग तीर्थ में स्नान से जो मङ्गलप्रद पुण्य प्राप्त होता है, वही पुष्प श्रद्धापूर्वक 'काशी' के दर्शन करने मात्र से प्राप्त हो जाता है ।

अतीतं वर्तमानं च यज्ज्ञानाज्ञानतोऽपि वा ।

सर्वं तस्य च यत्पापं क्षेत्रं दृष्ट्वा विनश्यति^३ ॥

अतीत या वर्तमान में ज्ञान या अज्ञान से किये गये जीवों के समस्त पाप काशी-क्षेत्र के दर्शन मात्र से विनष्ट हो जाते हैं ।

यस्य दर्शनमात्रेण कृतार्थो मोक्षमाप्नुयात्^४ ॥

काशी के दर्शन मात्र से ही मनुष्य कृतकृत्य होकर मोक्ष-पद का अधिकारी हो जाता है ।

पुराणों में काशी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रमाण मिलता है कि बौद्ध कल्प पहले प्रलय के पश्चात् जब सृष्टि आरम्भ हुई, तब भगवान् ने सर्वप्रथम पशु-पक्षी, मृग आदि जन्तुओं को उत्पन्न किया ।

१. वही—३३।११५ । २. वही—२६।९९,

३. म० पु० १८५।५५ ४. का० २० १३।६२ ।

प्राणियों की उत्पत्ति के पश्चात् भगवान् को सन्तोष नहीं हुआ, पुनः उन्होंने मनुष्यों की उत्पन्न किया। मनुष्य को देखकर भगवान् प्रसन्न हो गये। जब मनुष्य उत्पन्न हुए, तो वे पृथ्वी पर चारों ओर फैल गये। जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार से वे अनेक प्रकार के कर्म करने लगे। भगवान् शङ्कर कैलास में विराजमान थे। करुणा के सागर भगवान् शिवजी कहने लगे—‘हे प्रभो ! प्राणियों का कल्याण कैसे होगा ? क्या कल्प-कल्पान्तर, जन्म-जन्मान्तर तक प्राणी रोग से ग्रस्त रहेंगे ? क्या वे सभी प्राणी दुःख, कष्ट और संकट में तड़पते रहेंगे ? जन्म और मृत्युरूपी महान् कष्ट से तड़पते हुए मनुष्यों की मुक्ति कैसे मिलेगी ?’

भगवान् शङ्कर के प्राणियों के प्रति दया से युक्त वचन सुनकर भवानी जी शंकर भगवान् से प्रश्न करती हैं कि हे शिव ! मृत्युलोक में रहने वाले प्राणियों का कल्याण कैसे होगा ? वे प्राणी जन्म-मृत्युरूपी भवसागर से कैसे मुक्त होंगे ? तब भगवान् शंकर ने कहा कि हे भवानी ! मृत्युलोक के प्राणियों का कल्याण कैसे होगा और इनको कैसे मुक्ति मिलेगी ? इस विषय में मैं अत्यन्त चिन्तित हूँ। हे भवानी ! मैं मृत्युलोक के सभी जीवधारियों और प्राणिमात्र को मुक्ति देने के लिए मुक्तिक्षेत्र खोलना चाहता हूँ। इस पर भवानी प्रसन्न होकर कहती हैं कि हे स्वामी ! मृत्युलोक में आप कहाँ मुक्तिक्षेत्र खोलना चाहते हैं ?

तदनन्तर भगवान् विश्वनाथ कहते हैं कि हे भवानी ! भारत के मध्य भाग में उत्तरवाहिनी भागीरथी गङ्गा जी के परमपावन तट पर

‘काश्य’ नामक एक महानगरी है। उसी ‘काश्य’ नामक महानगरी में मैं जन्म-मृत्युरूपी महान् कष्ट में फँसे हुए प्राणियों को मुक्ति देने के लिए ‘मुक्तिक्षेत्र’ खोलूँगा। हे भवानी ! जँसे देवताओं के लिए कैलाश है, वैसे ही मृत्युलोक के प्राणियों को मोक्ष देने के लिए शिवलोक-सदृश काशी नामक मुक्तिक्षेत्र का निर्माण करता हूँ। तदनन्तर विश्व-नाथ जी ने एक ज्योतिर्मय देदीप्यमान शिव-ज्योतिर्लिङ्ग को प्रकट किया।

तदनन्तर भगवान् शिव हाथ में त्रिशूल लेकर कहने लगे कि हे त्रिशूल ! तुम काशी में जाओ और काशी के मध्यभाग में खड़े हो जाओ।

तीनों लोक (त्रिकण्ठक) के ऊपर प्रकाशमान दिव्य-शिव-ज्योतिर्लिङ्ग पञ्चक्रोशात्मक होकर काशीमें सदा निवास करेगा, मैं भी काशी के पञ्चक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग में प्राणियों को मोक्ष देने के लिए सदा काशीवास करूँगा। इतना कहकर भगवान् शिव ने अपने शिर की एक जटा को उखाड़ा। उखाड़ते ही कालभैरव प्रकट हो गये और हाथ जोड़कर कहने लगे—‘हे प्रभो ! मेरे लिए क्या आज्ञा है’ ?

विश्वनाथ जी कहते हैं—‘हे भैरव ! तुम काशी के कोतवाल और महामन्त्री बनो और तत्काल जाकर काशी की रक्षा करो। काशीवास करने वालों को सभी प्रकार की सुविधा प्रदान करो। उनकी सब प्रकार से रक्षा करो। काशीवासियों को कष्ट देने वाले व्यक्ति को कठोर दण्ड दो। काशी में पाप करने वाले अनाचारी, दुराचारियों को डण्डे से मारकर काशी से बाहर निकालो। काशी की निन्दा करने

वाले अभिमानियों का अभिमान चूर्ण कर उन्हें कठोर दण्ड दो। काशीवासियों के अज्ञान को मिटाकर उनमें ज्ञान भर दो। उन्हें वैराग्य दो। उन्हें ईश्वर की अडिग भक्ति प्रदान करो। हे कालभैरव ! काशी की रक्षा करो” ।

इस प्रकार कहने के पश्चात् विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे भैरव ! तुम काशी के अधिपति हो। यह काशी तुम्हारे ही अधीन रहेगी। विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे अन्नपूर्ण ! तुम और हम दोनों काशीवास करेंगे। तुम सभी प्राणियों को अन्न देना, आवास देना, उन्हें (सन्मार्ग) ज्ञान, भक्ति, वैराग्य की ओर प्रेरित करना और मैं सभी प्राणियों को मुक्ति दूँगा। हे अन्नपूर्ण ! हमारी काशीपुरी तीनों लोकों से श्रेष्ठ होगी। त्रैलोक्य में काशी जैसी पुरी नहीं होगी। काशी में जो व्यक्ति क्षणमात्र भी वास करेगा, उसको विशेष फल की प्राप्ति होगी।

काशी के दर्शन से जन्म-जन्मान्तर के पाप समाप्त हो जायेंगे। हे अन्नपूर्ण ! हमारी काशीपुरी में मरने वाला प्राणी पुनः जन्म नहीं लेगा। काशी में शरीर त्याग करने वाले प्राणियों को साख्य प्राप्त होगा। पुनः वह हमारा सान्निध्य प्राप्त करके सायुज्य प्राप्त करेगा। वेदों में ब्रह्मरूपा, मुक्तिरूपा (काशी) कहेंगे। हे अन्नपूर्ण ! मृत्युलोक के प्राणी अल्पायु, अल्पबुद्धि और शक्तिहीन होंगे। प्रलय से पहले मृत्युलोक के सभी देवता और सभी तीर्थ काशी में आकर रहेंगे। प्रलय के पश्चात्, सृष्टि के बाद सभी देवता और सभी तीर्थ यथास्थान एक साथ रहेंगे। जन्म-जन्मान्तर के पुण्य से मनुष्य तीर्थों में जाकर दान-यज्ञादि करके वहाँ निवास करेंगे। जो मनुष्य

कथा श्रवण करते हुए और कथा कहते हुए, साधना, ज्ञान और भक्ति का उपदेश करते हुए काशीवास करेंगे, उनको अन्य क्षेत्र में स्थित प्राणियों से करोड़ गुना अधिक फल मिलेगा। हे अन्नपूर्ण ! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि काशी में रहने वाला प्राणी भूखा नहीं रहेगा। इतना ही नहीं, काशी में मरने वाला प्राणी भी पुनर्जन्म नहीं लेगा। मैं सबको मुक्ति प्रदान करूँगा। मृतकों की अस्थियाँ काशी की गङ्गा में छोड़ने पर और काशी के बाहर मरने वाले प्राणियों को काशी में जलाने पर मैं उन सभी प्राणियों को मुक्त कर दूँगा।

जो व्यक्ति विश्व में कहीं भी रहकर हमारी पूजा-अर्चना, उपासना: पञ्चाक्षरी महामन्त्र का जप-अनुष्ठानादि और मेरा स्मरण करेगा, उसे मैं मुक्त कर दूँगा। यह हमारी प्रतिज्ञा है। विश्वनाथ जी पुनः कहते हैं—“हे अन्नपूर्ण ! जो मनुष्य पञ्चक्रोशात्मक (पञ्चक्रोशी) शिव ज्योतिर्लिङ्ग की दर्शन-यात्रा एवं काशी की अन्तर्गृही दर्शन-यात्रा करेंगे, उन सबको मैं मुक्त कर दूँगा। हे पार्वती ! जो मनुष्य केवल काशीवास करके मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं, उनको काशीवास कराने वाला तथा अन्न, वस्त्र, दूध, मिष्ठान्न आदि दान देने वाला जहाँ कहीं भी देह-त्याग करे, उसको मैं मुक्त कर दूँगा। हे अन्नपूर्ण ! एक बात मैं और कहना चाहता हूँ कि जो मनुष्य वेद, पुराण, उपनिषदादि शास्त्रों का प्रेमपूर्वक अध्ययन-अध्यापन और सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करेगा, मैं उसके पूर्वजों सहित उसे मुक्त कर दूँगा। हे अन्नपूर्ण हमारी काशी में जो मनुष्य जलाशय, कुण्ड, कूप आदि का निर्माण और मन्दिरों का जीर्णोद्धार, मूर्ति स्थापित करेंगे तथा प्रेरित करके करायेंगे, उन भक्तों को उनके पूर्वजों सहित मुक्ति दूँगा।

निवृत्ति मार्ग के शिवयोगी, शिवभक्त तथा ज्ञानी साधु-महात्मा, संन्यासियों को अन्न, वस्त्र, आवास आदि से सहयोग करने वाले को भी जब तक वह जीवित रहेगा, ऐश्वर्य और अपनी भक्ति दूँगा। वह जहाँ भी शरीर-त्याग करे, उसे मुक्त कर दूँगा। हे भवानी ! कल महाशिवरात्रि का दिन है। मैं महाशिवरात्रि के दिन पञ्चक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग को काशी में स्थापित करूँगा।

हे भवानी ! मृत्युलोक में सबसे श्रेष्ठ मोक्ष-क्षेत्र मेरी काशीपुरी होगी। इसकी सबसे बड़ी विलक्षणता होगी कि मृतक को भी विवाहादि सामग्रियों से सजा करके 'राम नाम सत्य है' इस प्रकार गीत गाते हुए श्मशान तक ले जाया जायेगा। इससे अधिक आश्चर्य और क्या होगा ?" इस प्रकार भगवान् विश्वनाथ यहाँ काशी में सदा सर्वदा माँ अन्नपूर्णा के साथ स्थित हो गये। काशी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में इस प्रकार का प्रमाण मिलता है।

विश्वनाथ जी को कैलास से काशी में आये चौदहवीं चतुर्गुंजी बीत रही है। विश्वनाथ जी के कैलास से काशी आने के पश्चात् तेरह बार प्रलय हुआ और तेरह बार सृष्टि हुई, क्योंकि चौदहवीं चतुर्गुंजी में विश्वनाथ जी काशी आये थे। यह अट्ठाइसवीं चतुर्गुंजी है। तब से तेरह बार कलियुग आया और गया। यह कलियुग चौदहवाँ है। यह बात मैंने अपने परमपूज्य गुरु जी स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती श्री करपात्री जी महाराज द्वारा सुनी थी।

तुलसीकृत रामायण के विजया-टीकाकार श्री विजयानन्द तिवारी ने भी केदार-माहात्म्य में लिखा है :—

भारत का महावारुणी महापर्व माहात्म्य

वारुणेन समायुक्ता मधोः कृष्णा त्रयोदशी ।

गंगायाः यदि लभ्येत सूर्यग्रहणतैः समा ॥

(स्कन्द पुराण)

भावार्थ—चैत्र कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन वारुणी एवं महा-वारुणी पर्व है । वेद एवं स्कन्द पुराण में कहा है - वारुणशतभिषा नक्षत्र से युक्त चैत्र मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन यदि गंगा जी का दर्शन, स्नान प्राप्त हो जाय तो सौ बार सूर्य ग्रहण में स्नान करने के समान फल प्राप्त होता है । अस्तु, यदि उत्तरवाहिनी गंगा, उसमें भी काशी प्राप्त हो जाय तो करोड़ हजार गुणा अधिक फल प्राप्त होता है ।

शनिवारसमायुक्ता सा महावारुणी स्मृता ।

गङ्गाया यदि लभ्येत कोटि सूर्यग्रहैः समा ॥

वह शनिवार से युक्त हो तो महावारुणी होती है । चैत्र कृष्ण त्रयोदशी के दिन गंगा जी में स्नान प्राप्त हो जाय तो करोड़ों सूर्य ग्रहण में स्नान करने के समान फल प्राप्त होता है ।

शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि ।

महामहेति विख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत् ॥

यदि शनिवार शतभिषा नक्षत्र तथा शुभ योग से युक्त हो तो उस दिन वारुणी को महावारुणी कहते हैं, और महावारुणी नाम से प्रसिद्ध होती है इस महावारुणी पर्व में गंगा आदि नदियों में स्नान और दान करने से तीन करोड़ कुल का उद्धार हो जाता है ।

मधोकृष्णत्रयोदश्यां शनौ शतभिषा युता ।

वारुणीति समाख्याता शुभे तु महती स्मृता ॥

(ब्रह्मपुराण)

कल्पतरु में भी इसी प्रकार से मिलता है—शनिवार तथा शतभिषा नक्षत्र से युक्त चैत्र मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि हो तो उसे वारुणी नाम से कहा जाता है। वही शुभ योग से युक्त होने पर महा-वारुणी हो जाती है। चैत्र कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन महावारुणी या वारुणी पर्व के दिन काशी में अस्सीघाट, केदारघाट, दशाश्वमेध घाट और मणिकर्णिका घाट, पंचगंगा घाट, तथा वरुणा संगम में जहाँ सुविधा हो, वहीं स्नान तथा यथाशक्ति दान करना चाहिए। अन्य तीर्थों में स्नान करने से जो फल मिलता है उस फल से करोड़ गुना अधिक काशी के उत्तर वाहिनी गंगा जी में स्नान करने से फल मिलता है।

महाशिवरात्रि पर्व

चलत्यन्ते कदाचिद् निश्चलं हि शिवव्रतम् ।

शिव उवाच मम भक्तस्तु यो देवि शिवरात्रिमुपासकः !

गणत्वम् क्षयं दिव्यं लभते शिवशासनम् ।

सर्वान् युक्त्वा महाभोगान् ततो मोक्षमवाप्नुयात् ॥

शिव जी पार्वती जी से कहते हैं कि हे पार्वती ! मेरे भक्त जो महाशिवरात्रि के दिन प्रातः स्नान करके मेरी पूजा और उपासना करते हैं और उस दिन उपवास कर व्रत रहते हैं, वे अपने पाप समूहों का नाश कर दिव्य शिव लोक को प्राप्त करते हैं। वे मेरे भक्त संसार के सभी सुखों का भोगकर अन्त में मोक्ष को प्राप्त करते हैं। शंकर

भगवान् पार्वती जी से कहते हैं, 'महाशिवरात्रि' के दिन विश्व में जहाँ कहीं भी रहकर शिव पूजा जो करता है, उसको शिव लोक की प्राप्ति होती है। महाशिवरात्रि व्रत कथा नाम के पुस्तक से कथा श्रवण करे। करने से जो फल प्राप्त होता है उसे मैं कहता हूँ श्रवण करो। हे राजन् ! शिव की एक परिक्रमा करने वाले नर-नारियों की ब्रह्म-हत्या से निवृत्ति होती है। दूसरी परिक्रमा करने से मनुष्य अधिकारी पद पाता है और तीसरी से इन्द्र के समान ऐश्वर्य को पा लेता है।

शिव-नैवेद्य-महिमा

भक्षिते शिवनैवेद्ये शिवसायुज्यमाप्नुयात् ।

यद् गृहे शिवनैवेद्यप्रचारोऽपि प्रजायते ॥

तद्गृहं - पावनं सर्वमन्यपावनकारणम् ॥

अर्थ—शिव पूजा करने के पश्चात् शिव नैवेद्य खाने वाले नर-नारियाँ शिव सायुज्य मुक्ति को प्राप्त हो जाते हैं। जिनके घर में शिवजी का चढ़ा हुआ शिवापित नैवेद्य पहुँच जाता है वह घर परम पवित्र हो जाता है।

काशी जिसका रहस्य गोपनीय है, जिसकी महिमा त्रिलोक में सदैव प्रथित है, जो सभी लोकों में श्लाघनीय है, जो सभी तीर्थों में पूजनीय है, ऐसी काशी की महिमा को मैं क्षुद्र प्राणी क्या कह सकता हूँ ? जिससे मैं स्वयं अनभिज्ञ हूँ। जिस प्रकार से शिशु माँ के द्वारा प्रदत्त दूध को सहर्ष पान कर लेता है, किन्तु वह उसके ज्ञान से शून्य रहता है। वह यह नहीं जानता कि माँ क्या है ? यह दूध कहाँ से लाती है ? उसको यह भी पता नहीं कि यह दूध माँ के रक्त से ही

निर्मित है। मां ने आज भोजन किया है कि नहीं? उसे बिलकुल ही ज्ञान नहीं रहता है। वह तो उदरपूर्ति के लिए मातृ-स्तन से सब सन्निहित रहता है।

वेद, पुराण आदि शास्त्रों के अनुसार काशी में देवता एवं तीर्थ पन्द्रह कलाओं से सदा रहते हैं।

काशी से बाहर विश्व के तीर्थ, मन्दिरों में एक कला से रहते हैं। प्रलय के समय में विश्व के मन्दिरों के देवता और तीर्थ काशी में आते हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में पुनः तत्तत् स्थान में जाकर स्थित होते हैं।

सनातनधर्म

जन्म-जन्मान्तर के तपस्वी, साधक, आस्तिक धर्मात्मा, उदार, धर्मप्राण तथा हिन्दू, सनातन, वैदिक धर्म को मानने वाले जन्म-जन्मान्तर के संस्कारी व्यक्ति तीर्थ मठ, मन्दिर, आश्रम, संस्कृत महाविद्यालयों, गौशाला, धर्मशाला, यज्ञशाला आदि में जाकर देखते ही उनके जन्म-जन्मान्तरों के पुण्य पुंज संस्कार जागृत हो जाते हैं। जैसे प्रयागराज के महाकुम्भ में स्नान, दर्शन करने वाले नर-नारी का दर्शन करते ही नास्तिक, कठोर से कठोर हृदय वाला मनुष्य भी वहाँ के धार्मिक दृश्य को देखकर आस्तिक, धर्मात्मा हो जाता है। उसी प्रकार तीर्थ मठ-मन्दिर, संस्कृत महाविद्यालय एवं आश्रम में तपस्वी सन्त, महात्माओं की कुटिमा में जाते ही अनन्त जन्मों की धार्मिक भावनाएँ जाग्रत हो जाती हैं तथा मठ, मन्दिर, आश्रम एवं साधु-महात्माओं की कुटिमा से जाकर तन, मन, धन से सेवा करते हैं।

प्रश्न—गुरुजी मठ, मन्दिर धर्मशाला, आश्रम और संस्कृत विद्यालय में कैसे व्यक्ति को रखना चाहिए?

उत्तर—गणेश चैतन्य ब्रह्मचारी जी सुनो ! भजन करने वाले साधक, तपस्वी, सिद्ध-सन्त, ब्रह्मनिष्ठ को ढूँढ़ कर रखना चाहिए । ये लोग ब्रह्म गायत्री पुरश्चरण करने वाले हों या पञ्चाक्षरी तथा गुरु द्वारा प्राप्त गुरु मन्त्र के अनुष्ठान करने वाले लोगों को सब प्रकार की सुविधा देकर रखना चाहिए । महात्माओं के भजन, तपस्या और पुरश्चरण के मन्त्र के प्रभाव से तथा उपासना से धन, अन्न, वस्त्र आदि पदार्थ स्वतः ऋद्धि-सिद्धि सहित आते हैं । करोड़पति तथा गरीब भी तन, मन, धन से उनके सेवा करते हैं ।

प्रश्न—गुरु जी मठ, मन्दिर, आश्रम में कर्मचारी-सेवक किस प्रकार के रखे जायें ?

उत्तर—वत्स सुनो ! ऐसे व्यक्तियों को रखना चाहिए जो विद्वान् हों, उनमें नम्रता, सरलता और यथार्थ ज्ञान हो, हँसमुख हों । उनमें अपरिचित, अभ्यागत, अतिथियों का भी स्वागत करने की प्रवृत्ति हो । सबसे प्रेम से बात करने की प्रवृत्ति हो । जैसे अपने सम्बन्धियों से प्रेमपूर्वक व्यवहार किया जाता है, उसी प्रकार सबसे वार्ता करने वाला हो ।

स्नेह, प्रेम पाकर सब आपके कार्य में तन, मन, धन से सहयोग करेंगे ।

जिस घर के बच्चों को गाय का दूध और मट्ठा पर्याप्त मात्रा में पीने को मिलता है, उस घर के सभी सदस्य नीरोग रहते हैं । बालकों को तो बल, बुद्धि, विद्या तथा तेज एवं प्रतिभा देशी गाय के दूध का पान करने से प्राप्त होती है । सभी बालकों को बचपन से ही देशी गाय की सेवा करना स्वास्थ्यलाभ के लिए सीखना चाहिए ।

प्रश्न—गुरुजी ! चन्द्र-सूर्य-ग्रहण लगने के समय क्या साधना करनी चाहिए ?

उत्तर—विष्णु चैतन्य ब्रह्मचारी जी, आपने जनकल्याण के लिए उत्तम प्रश्न किया है। अपनी जाति इष्टदेव धर्म-सम्प्रदाय के अनुसार, कुल-परम्परा के अनुसार जिस देवता को इष्ट मानते हों, उनके मन्त्र का जप करना चाहिए तथा अपने गुरु द्वारा प्राप्त हुए मन्त्र का जप करना चाहिए।

ग्रहण प्रारम्भ होते ही स्नान करके देशी गाय के गोबर से लीपी हुई जमीन में कुशासन पर बैठ कर प्राणायाम करें। प्राणायाम के पश्चात् दीर्घ उपांशु जप करना प्रारम्भ करें। ग्रहण पूर्ण होने के पश्चात् माला को पूरा करके स्नान करें, इसी प्रकार चार ग्रहण में जप करने से वाणी, शरीर और मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं। पाँचवाँ ग्रहण शुरू होते ही स्नान करके हवन की सामग्री पहले से इकट्ठा करके रखें। आसन पर बैठकर प्राणायाम करने के पश्चात् एकान्त जगह में अकेले अग्नि प्रज्ज्वलित करके वही मन्त्र बोलते हुए हवन करें। ग्रहण के पश्चात् स्नान करके घर जाय। दूसरे दिन प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर शिवजी की पूजा करें। यथाशक्ति दान तथा यथाशक्ति साधु, ब्राह्मण और नौ कन्याओं को भोजन करावे वस्त्र, दक्षिणा दें, आशीर्वाद लें। इस प्रकार की साधना करने से उस मन्त्र द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष-चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति स्वतः होती है। इतना ही नहीं, ग्रहण में जपा हुआ मन्त्र सिद्ध हो जाता है, जिससे झाड़ू-फूंक करने से रोगी, दीन, दुःखी को रामबाण की तरह लाभ पहुँचाता है। भूत, प्रेत, डाकिनी शाकिनी और

बुखार आदि में मंत्र पढ़कर विभूति छोड़ने से एवं जल मंत्र द्वारा फूंककर पिलाने से अथवा कुश से झाड़ने से कष्ट सकट दूर हो जाता है। ग्रहण में या अन्य अनुष्ठान करने वाला व्यक्ति भी सदा नियम, आचार से रह कर प्रतिदिन जप करे। तभी उस मन्त्र के कार्य करने की शक्ति बनी रहती है।

काशी का इतिहास

शिव प्रसाद पाण्डेय जी लिखते हैं कि ५वीं शताब्दी में काशी का राजा विजय तुङ्गे नाम का हुआ। श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन प्रातः विश्वनाथ मन्दिर की दीवाल गिर गयी थी। सनातन धर्म के मानने वाले मन्दिर का जीर्णोद्धार कराना चाहते थे और बौद्ध धर्म को मानने वालों में विवाद हो गया। राजा ने बौद्ध धर्मियों का पक्ष लिया। अदालत में मुकदमा चलने लगा। विजय तुङ्गे ने १० वर्ष राज्य किया। विजय तुङ्गे के बाद रणतुङ्गे राजा हुआ, रणतुङ्गे राजा ने काशी विश्वनाथ जी का विशाल मन्दिर बनाने का आदेश दिया। उस समय विश्वनाथ जी का मन्दिर बहुत विशाल और चौड़ा बना जैसे वर्तमान में मद्रास में रामेश्वर का मन्दिर है। उसी प्रकार से मन्दिर बना। मन्दिर के बाहर तीन घेरे बने। विशाल चार फाटक बने। फाटक के चारो कोणों में विष्णु, सूर्य, गणेश जी तथा देवी जी का मन्दिर बना। दूसरे फाटक के अन्दर चारों कोनों में भैरव, दण्डपाडि, वीरभद्र, पार्वती जी का मन्दिर बना। तीसरे फाटक के अन्दर चारों कोनों में पार्वतीश्वर, देवदासेश्वर, काल-राजेश्वर, स्कन्देश्वर (कार्तिकेश्वर) बने। काशी के विश्वनाथ जी का

मन्दिर उस समय इसी प्रकार का बना। ज्ञानवापी से पश्चिम में भवानीश्वर आदि विश्वनाथ, बांसफाटक उत्तर में चौक, कचोड़ी गली तक था। पूरब में नीलकण्ठेश्वर, नीलकण्ठ मुहल्ला तक था। दक्षिण में शुक्रेश्वर कालिका गली तक पहले मन्दिर की बाहर की दीवाल बनी। वेद, स्कन्द पुराण और इतिहास में भी इसी सीमा का उल्लेख मिलता है।

तृतीय विश्व युद्ध के पश्चात् मनुस्मृति के अनुसार पुनः राज परम्परा भारत में चलेगी। साधु ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य सब शिव जी की उपासना, आराधना करेंगे। विश्व कल्याण के लिये तीन-तीन किलोमीटर के अन्दर अखण्ड कीर्तन कराना चाहिये। चूँकि जहाँ कीर्तन होता है, वहाँ कीर्तन से मनुष्यों की बुद्धि शुद्ध हो जाती है, अन्तःकरण पवित्र होता है। उस कीर्तन स्थल के चारों तरफ ९ किलोमीटर के अन्दर समय-समय पर वर्षा होती है।

प्रश्न—काशी में दोनों हाथ जोड़कर अपने से बड़े को सिर झुकाकर प्रणाम करने की परम्परा कब से चली और किसने प्रणाम किया।

उत्तर—सत्ययुग के प्रथम चरण में काशी विश्वनाथ जी के दर्शन के लिए पाँच वर्ष के बालक सनत्कुमार आये, विश्वनाथ जी अपने देवताओं के साथ सभामें बैठे हुए थे। दरबार लगा था। उसी सभा के मध्य में आकाश मार्ग से सनत्कुमार जी आये और दोनों हाथ जोड़कर सिर को झुकाकर विश्वनाथ जी को प्रणाम किये। उसी समय विश्वनाथ जी बोले, आज से अपने से बड़े को जो मनुष्य सिर झुकाकर, दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करेंगे, मैं उन्हें धन, ऐश्वर्य, प्रतिष्ठा और

सम्मान प्रदान करूँगा और वे सब मेरी अनन्य भक्ति को प्राप्त करेंगे ।

नोट —दोनों हाथ जोड़कर सिर झुका के प्रणाम करने वाले व्यक्ति को चारों पदार्थ स्वतः प्राप्त होते हैं, प्रमाण—

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुः विद्या यशोबलम् ॥

भावार्थ—अपने से बड़े माता पिता चाचा बड़े भाई, वृद्ध और अपने से जाति में बड़े आदि के चरणस्पर्श करने एवं अवस्था में बड़े ब्राह्मण, साधु महात्मा तथा संन्यासियों को हाथ जोड़कर प्रणाम करने वाले नर-नारियों को विद्या, यश, बल की प्राप्त होती है और आयु बढ़ता है इतना ही नहीं जीवन में धन, सुख, शान्ति भी प्राप्त होती है ।

प्रश्न—हर-हर महादेव सम्भो काशी विश्वनाथ गंगे कीर्तन करने से क्या फल मिलेगा तथा काशी की पञ्चकोशी यात्रा कीर्तन करते हुए किसने किया और कैसे किया ?

उत्तर—काशी की पञ्चकोशी यात्रा का वर्णन करते हुए वेद भगवान् कहते हैं कि कार्तिक शुक्ल पञ्चमी तिथि के दिन सत्ययुग के प्रथम चरण में काशी विश्वनाथ जी, देवता, ऋषि, तपस्वी, साधु, वेदपाठी ब्राह्मण, विरक्त काशी में रहने वाले काशी वासियों तथा अपने सेवकों को साथ लेकर शास्त्रीय विधि से काशी की पञ्चकोशी यात्रा करने भवानी सहित चले । विश्वनाथ मन्दिर से मणिकर्णिका घाट गये, मार्जन करके मणिकर्णिका घाट से दक्षिण पंक्तिबद्ध होकर सबसे

आगे देवता, देवता के पीछे काशी विश्वनाथ भगवान्, वेदों की स्तुति करते हुए चल रहे थे। वेदपाठी ब्राह्मण, उनके पीछे साधु चले, साधु के पीछे विश्वनाथ जी के भक्त, भैरव आदि शिवगण चले, शिव गणों के पीछे मनुष्य, मनुष्य के पीछे काशीवासी चले। उसी समय विष्णु भगवान् देवताओं से बोले कि सभी लोग मिलकर एक वर से हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे कीर्तन करते हुए चलो। विष्णु जी की आज्ञा पाकर सब कीर्तन करते हुए चलने लगे, कीर्तन की ध्वनि आकाश में गुञ्जायमान हुई जिससे काशी विश्वनाथ जी कीर्तन की ध्वनि सुनकर प्रसन्न होकर कीर्तन और काशी की यात्रा करने वालों को वरदान देते हुए बोले कि जो देवता और मनुष्य काशी की यात्रा करते हुए कीर्तन करेंगे उनके पाप, कष्ट, संकट, रोग दरिद्रता एवं विघ्न नष्ट होंगे, दूसरा वरदान देते हुए दण्डपाणि और भैरव जी से बोले तीन सौ साठ दिन मेरे गण और काशीवासी आज से पञ्चक्रोशी यात्रा करेंगे, मैं यात्रा करने वालों के जन्म-जन्मान्तर के पाप नष्ट कर दूँगा। इस लोक में भोजन, आवास, धन एवं सुख शान्ति दूँगा। शरीर छूटने के पश्चात् कैवल्य मोक्ष सबको दूँगा, जो नर-नारी काशी की यात्रा करेंगे उनके घर में लक्ष्मी निवास करेगी, घर में स्वतः धन, शील, गुण एवं धर्म आयेंगे। शत्रु मित्र बनेंगे, रोगी नीरोग होंगे, गरीब धनी होंगे, विश्वनाथ जी ने यात्रा करने वालों को वरदान दिया।

ब्रह्मा जी काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा करते हुए रामेश्वर पहुँचे। तीन बजे से काशी का पञ्चक्रोशी माहात्म्य और काशीवास के विषय में प्रवचन करने के लिए सभा लगी। उसी सत्सङ्ग पाण्डाल में कथा

कहते हुए ब्रह्मा जी ने काशी की यात्रा करने वालों को वरदान देते हुए कहा कि जो कोई तीर्थ यात्रा करते हुए काशी की उत्तर वाहिनी गंगा जी में स्नान करके शिव पूजा करने के पश्चात् काशी की यात्रा करेगा उसके इस जन्म एवं जन्म-जन्मान्तर के ब्रह्म हत्या, बालहत्या, स्त्री हत्या एवं किसी प्राणी की हत्या, गोहत्या और अन्य प्रकार के पाप नष्ट होंगे। यात्रा पूर्ण करने के पश्चात् दूसरे दिन गंगास्नान कर पूजा, देवऋषि तर्पण करके गोदान, तुलादान, रुद्राभिषेक, श्राद्ध करके साधु, ब्राह्मण को भोजन कराकर उस दिन काशी में विश्राम करें। दूसरे दिन प्रातः गंगास्नान करके पिशाच-मोचन तीर्थ में जाकर शास्त्रीय विधि से श्राद्ध करें तो उसके पापों का प्रायश्चित्त हो जायेगा। ब्रह्मा जी ने दूसरा वरदान काशी यात्रा करने वालों को देते हुए कहने लगे जो नर-नारी काशी में गंगा स्नान, सन्ध्या, देव, ऋषि, पितर तर्पण, पूजा, मन्दिरों का दर्शन नित्य कर्म से निवृत्त होकर काशी की प्रदक्षिणा यात्रा करेंगे। उनको जीवन में सुख और शान्ति प्राप्त होगी, शरीरपात होने के पश्चात् मुक्त होंगे। काशी की यात्रा करने वालों को पुत्र पौत्र प्रपौत्र धनी एवं धर्मात्मा होंगे। काशी की यात्रा करने वाले व्यक्ति को वरदान देते हुए ब्रह्मा जी ने कहा काशी में सम्पूर्ण प्राणियों को कैवल्य मोक्ष देने के लिए विश्वनाथ जी भुक्ति और मुक्ति का क्षेत्र खोले हैं। जो प्राणी भुक्ति, मुक्ति चाहते हों वे स्वधर्म का पालन करते हुए काशीवास करें तो उनको धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों पदार्थ स्वतः प्राप्त होंगे। ब्रह्मा जी की बात सुनकर विश्वनाथ भगवान् अति प्रसन्न हुए।

पञ्चक्रोशी यात्रा करते हुए गंगा-वरुणा संगम में आये, यात्रा करने वाले धर्मात्माओं का स्वागत करने के लिए सभा का आयोजन किए थे उसी सभामें काशीका वर्णनकरते हुए विष्णु भगवान्ने कहा कि काशी के नीचे जल है, जल के ऊपर त्रिशूल है, त्रिशूल के ऊपर पाँचकोस का प्रकाशमान लम्बा चौड़ा गोलाकार ज्योतिर्लिङ्ग विराजमान है। उसी ज्योतिर्लिङ्गके ऊपर मिट्टी, पत्थर है और मिट्टीके ऊपर काशीमें तीर्थ, मठ, मन्दिर, धर्मशाला, गोशाला, विद्यालय, सत्संगभवन, अन्नक्षेत्र, कथामण्डप तथा अमर ऋषि, मुनि, सिद्ध और प्रसिद्ध साधु, अग्नि-होत्री धर्मशास्त्रके विद्वान् ब्राह्मण, काशीवासी स्वधर्मपालन करनेवाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र काशी में निवास करते हैं। विष्णु भगवान् का प्रवचन सुनकर देवता, ऋषि, मुनि, साधु-संन्यासी एवं महात्मा प्रसन्न हुए, हर-हर महादेव की ध्वनि आकाश में गुञ्जायमान हुई। पाँचकोश के ज्योतिर्लिङ्ग के बाहर से काशी की पञ्चक्रोशी की परिक्रमा होती है। यात्रा करते समय रास्ते से दाहिनी तरफ थूकना, बैठना; विश्राम करना, भोजन, शयन, शौचादि नहीं करना चाहिए। पैसा चावल (अक्षत) फूल, माला मन्दिरों में चढ़ाते हुए दरिद्रनारायण को पैसा, चावल देते हुए एवं कीर्तन करते हुए चलना चाहिए। काशी की सातरात्रि की पञ्चक्रोशी की यात्रा का वर्णन— काशी विश्वनाथ जी प्रथम दिन कर्दमेश्वर (कंदवा) में निवास किये, दूसरे दिन भीमचण्डी में विश्राम किये, तीसरे दिन सोमनाथ (लगुटिया हनुमान) जी में पड़ाव पड़ा चौथे दिन काशी के रामेश्वर में रहे पाँचवें दिन शिवपुर में वास हुआ। छठे दिन पितृतीर्थ कपिलधारा में निवास किये। प्रत्येक विश्राम स्थली में पूजा करके साधु, ब्राह्मण को

भोजन कराते थे, काशी की महिमा पर कथा होती थी, कीर्तन करते थे, सातवें दिन यात्रापूर्ण करके काशी में विश्राम किये, काशी विश्वनाथ जी ने जैसे पञ्चक्रोशी की यात्रा की उसी प्रकार सभी मनुष्यों को शास्त्र विधि से यात्रा करनी चाहिए ।

काशी रहस्य के नवम अध्याय में ऋषिपुत्र मण्डप का आख्यान सूक्ष्म रूप से वर्णन करते हैं । विश्वनाथजी जंगीषव्य ऋषि से कहते हैं कि मण्डप ने माता-पिता, भ्राताके द्वारा मना किये जाने पर भी कुसंगति को नहीं छोड़ा तो पिता ने घर से निकाल दिया ।

एक दिन मण्डप दो साथियों के साथ पिता के घर गया । कुष्माण्ड ऋषि बोले —“तुम पापों का प्रायश्चित्त करके घर आना” उसी समय मण्डप को पञ्चक्रोशी दर्शन यात्रा जाने वाले यात्री मिले । वह संकल्प लेकर साधु-महात्मा, संन्यासी और शिव भक्तोंके साथ शिव-शिव नाम मन्त्र जपते हुए हर-हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे का कीर्तन करते हुए यात्रियों के साथ चला, यात्रा में मण्डप के पाप कर्म, पाप-बुद्धि नष्ट हो गयी । पापों का नाश करने वाली काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा से पापवासना समाप्त हो गयी । यात्रा पूर्ण होने के पश्चात् यात्रियों ने उससे कहा कि अपने पिता को बुलाओ ।

पिता आ गये । पिता बोले जब तक विष्णु, सूर्य, दुर्गिराज और दण्डपाणि, भैरव नहीं कहेंगे तब तक मैं इन बातों पर विश्वास नहीं करूँगा । सभी यात्री देवताओं की स्तुति करने लगे । पाँचों देवता प्रकट हो गये ।

विष्णु बोले —“मण्डप ने शिवभक्त, साधु-महात्मा के संग होकर काशी की प्रदक्षिणा यात्रा की और प्रदक्षिणा करते समय जगत्

गुरु श्री विश्वनाथ जी का कीर्तन करते हुए पञ्चक्रोशी यात्रा किया इससे मण्डप शुद्ध हो गया। इसके पश्चात् श्री ढुण्डिराज जी कहते हैं कि शिव-शिव नाम के जप करने से जैसे पाप नष्ट होते हैं वैसे ही काशी नाम को जपने वाले मनुष्यों के पाप समूह नष्ट होते हैं। काशी के विषय में कथा-श्रवण और कीर्तन करते हुए जो पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा करते हैं वे पापों से मुक्त होते हैं। दण्डपाणि जी कहते हैं - पञ्चक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा करके पापी लोग पापों से शुद्ध होते हैं।

कालभैरव जी ने कहा कि मैं पापी लोगों को अनेक प्रकार से दण्ड देता हूँ और जो पापी शास्त्र विधि से काशी की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा यात्रा करते हैं, उन पञ्चक्रोशी दर्शन-यात्रा करने वाले यात्रियों के पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है। अतः मण्डप विशुद्ध हो गया है।

सूर्यनारायण जी कहते हैं—“मण्डप ने पापों को नष्ट करने वाली पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा की है और सज्जन, साधु-संन्यासियों के साथ पञ्चाक्षरी महामन्त्र और शिवनाम का जपकीर्तन करते हुए काशी के विषय में कथा श्रवण करते हुए इसने पञ्चक्रोशी दर्शनयात्रा किया। इसलिए यह मण्डप शुद्ध हो गया है। मण्डप के पिता देवताओं की बात सुनकर सन्तुष्ट हो गये और मण्डप को अपने घर ले गये।

प्रश्न—चातुर्मास्य के पश्चात् मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष द्वितीया तिथि के दिन काशी की वार्षिक पञ्चक्रोशी यात्रा किसने की? इसमें प्रमाण क्या है?

अथर्ववेद और काशी संहिता के तीसरे अध्याय में विश्वनाथ भगवान् स्वयं कहते हैं कि चतुर्मासा करने के लिए बाहर से आये हुए और काशीवासी भी चार महीना उत्तरवाहिनी गंगा जी में स्नान, सन्ध्या, देव, ऋषि, पितर तर्पण करते हैं तथा यथाशक्ति दान करते हैं। मन्त्रों का जप अनुष्ठान करते हैं अन्य जगह पाँच वर्ष में पुरश्चरण या अनुष्ठान मन्त्र का जप करने से जो पुण्य होता है वह फल (पुण्य) काशी में अनुष्ठान करने से एक महीने में ही प्राप्त होता है। विश्वनाथ जी स्वयं कहते हैं कि मैं श्री आषाढ़ शुक्ल हरिश्चयनी एकादशी के दिन से कार्तिक पूर्णिमा की तिथि तक स्वयं शुद्ध, आचार, संयम से रहकर नाम जप करता हूँ। भगवान् का स्मरण, ध्यान करता हूँ। मार्गशीर्ष (अग्रहन) की कृष्णपक्ष द्वितीया तिथि के दिन काशी की वार्षिक पञ्चक्रोशी यात्रा, चतुर्मासा करने वाले और काशीवासियों को साथ में लेकर मैं यात्रा करने जाता हूँ। और प्रतिवर्ष यात्रा करके चतुर्मासा व्रत का समापन करता हूँ। काशी विश्वनाथ जी स्वयं कहते हैं और स्वयं यात्रा करने जाते हैं तो हम अनपढ़ पापी, अज्ञानी मूर्ख मनुष्यों को सदा काशी की यात्रा करनी चाहिए।

भगवान् शंकर अथर्ववेद एवं काशी संहिता में काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि चैत्रकृष्ण पञ्चमी तिथि के दिन वसन्त ऋतु में काशीविश्वनाथ भगवान् देवता, ऋषि मुनि एवं मनुष्यों को साथ में लेकर प्रतिवर्ष वार्षिक यात्रा करते हैं और काशी की यात्रा करने वालों को वरदान देते हुए शंकर जी बोले—“यात्रा करने वाला व्यक्ति मृत्युलोक में ऐश्वर्य प्राप्त करता है और मृत्यु

होने के पश्चात् मुक्त हो जाता है, उसका पुनः जन्म नहीं होता, जो मनुष्य दूसरे को प्रेरित करके मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराता है एवं शास्त्र विधि से काशी की यात्रा करता कराता है वह धन, सम्पत्ति, सम्मान और सुख शान्ति प्राप्त करता है और मृत्यु होने के पश्चात् मुक्त हो जाता है शंकर भगवान् काशी की यात्रा करने वाली को वरदान देकर कैलाश चले गये ।

नोट — मेरे गुरु जी हरिहरानन्द सरस्वती करपात्री जी महाराज भी चैत्रकृष्ण पञ्चमी तिथि के दिन वार्षिकी पञ्चक्रोशी की प्रदक्षिणा मधुमास, वसन्त ऋतु में करते थे । आज भी गुरु जी के हजारों भक्त होली के पश्चात् पञ्चमी तिथि के दिन पञ्चक्रोशी यात्रा करने जाते हैं और शङ्कराचार्य, महामण्डलेश्वर महन्थ एवं तपस्वी सिद्ध संन्यासी भक्त तथा ज्ञानी, साधु, महात्मा, राजा, महाराजा, बड़े-बड़े उद्योगपति एवं पण्डित, विद्वान् भी यात्रा करते हैं । काशी की यात्रा बारहों महीने चलती है । जब जिसको समय मिले, अपनी सुविधानुसार उसी दिन से काशी यात्रा करनी चाहिए । स्कन्दपुराण, में काशी संहिता में और सनत्कुमार संहिता में वर्णन है । काशी विश्वनाथ जी स्वयं कहते हैं—

दक्षिणे चोत्तरे चैव ह्ययने सर्वदा मया ।

क्रियते क्षेत्रप्रदाक्षिण्यं भैरवस्य भयादिति ॥

(सनत्कुमार संहिता)

अर्थ—विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे भवानी ! भैरव के भय से मैं उत्तरायण और दक्षिणायन दोनों अयनों में काशी की सर्वदा प्रदक्षिणा यात्रा करता हूँ ।

काशी विश्वनाथ जी स्वयं काशी की यात्रा करते हैं तो हम पापी आचरणहीन, अनपढ़, अज्ञानी, मूर्ख काशी की यात्रा क्यों न करें ?

नोट--एक दृष्टान्त से समझ लीजिए। किसी बड़े आदमी से मिलना हो तो पहले उसके नजदीक में रहने वाले व्यक्ति से मिलकर उसको प्रसन्न करने के पश्चात् वही व्यक्ति आप को ले जाकर उस विशिष्ट आदमी से मिलाकर आप के गुण की प्रशंसा करके अभीष्ट व्यक्ति को प्रसन्न करा देते हैं। बड़े आदमी प्रसन्न होते ही आप के सभी कार्य सफल करा देंगे। इसी प्रकार काशी की यात्रा करने से विश्वनाथ जी के गण भैरव आदि प्रसन्न होते हैं। जहाँ सेवक प्रसन्न होते हैं वहीं मालिक भी प्रसन्न रहते हैं। एक और दृष्टान्त से समझें। जैसे किसी पड़ोसी से शत्रुता हो गयी हो और आप का छोटा बालक उसको बहुत मानता हो और वह शत्रु भी बालक से प्रेम करता हो तो वह शत्रु मित्र बन जायेगा। इसी प्रकार काशी में उत्तर-वाहिनी गंगा में स्नान पूजा, पाठ, मन्दिर, विरक्त, तपस्वी, संन्यासी, साधु, ब्राह्मण, सांड़, गौ एवं मठों के दर्शन करने से और काशी की यात्रा करने से विश्वनाथ जी तथा दण्डपाणि आदि गण प्रसन्न होकर यहाँ धन, सुख, शान्ति देते हैं और अन्त में मुक्ति भी दिलाते हैं। काशी इन्द्र का राज्य नहीं है, यमराज के दूतों का काशी में प्रवेश निषेध है। काशी तीनों लोकों से न्यारी है। विश्वनाथ जी की राजधानी है।

ब्रह्मा जी कहते हैं कि काशी मेरी सृष्टि नहीं है। पाँचकोश का ज्योतिर्लिङ्ग स्वयं प्रकट हुआ है और काशी में सदा उत्तरायण

रहता है। मोक्षभूमि के अन्दर खरमास, मलमास आदि में भी भेद नहीं है।

यज्ञ, प्रवचन, पूजा, दान हर दिन होते रहते हैं।

काशीक्षेत्रे विश्वेश्वरस्य शिवां प्रति प्रतिज्ञाद्वयम् ।

जीवतोऽन्नं ददासि त्वं मुक्तिं मृत्यौ ददाम्यहम् ॥

भावार्थ—काशी विश्वनाथ जी भवानी—अन्नपूर्णाजी से कहते हैं, कि हे अन्नपूर्ण ! तुम सभी काशीवासियों को भोजन, आवास और भक्ति तथा ज्ञान दो। काशी वासियों को किसी भी प्रकार का कष्ट न हो। हे भवानी मैं मृत्यु के समय में सभी काशी वासियों को मुक्ति प्रदान करूँगा। विश्वनाथ जी स्वयं कहते हैं—

सर्वभ्यः काशीसंस्थेभ्यो मोक्षभिक्षां प्रयच्छति ।

त्रिपुरारिः पुरद्वारि कदास्यां मोक्षभिक्षुकः ॥

भावार्थ—काशी में मुक्ति चाहने वालों को मोक्ष कि भिक्षा देने के लिए भगवान् विश्वनाथ जी मुक्ति लेने वाले भिखारियों की सदा प्रतीक्षा करते हैं कि हमारे घर के द्वार वे मोक्षभिक्षुक मुक्ति की भीख माँगने कब आयेगें, उस मोक्ष की भिक्षा माँगने वाले अतिथि का मैं कब दर्शन करूँगा, हे भवानी जब तक भिक्षा माँगने वाला अतिथि मेरे घर में नहीं आयेगा तब तक मैं भोजन नहीं करूँगा—कहते हुए काशी विश्वनाथ जी के दरवाजे बाहर दालान में बैठकर मुक्ति की भीख माँगने वाले मनुष्यों की प्रतीक्षा करते हैं।

इमां यात्रां नरः कृत्वा क्षेत्रेस्मिन्मुक्तिजन्मनि ।

न दुःखैरभिभूयेत इहामुतापि कुत्रचित् ॥

(का० खं० १००)

अर्थ—मुक्ति के जन्म स्थान काशी क्षेत्र में यात्रा करने से इस लोक तथा परलोक में मनुष्य दुःखों से पीड़ित नहीं होता है और काशी की यात्रा करने वाले यात्रियों को धन-सुख, शान्ति, मुक्ति स्वतः प्राप्त होती है, और यदि काशी से बाहर मृत्यु हो गई तो दूसरे जन्म में करोड़पति के घर में उत्पन्न होकर पुनः धर्म कार्य में लग जाता है, धर्मात्मा बनता है तथा अन्त समय में ब्रह्मात्मसाक्षात्कार करके केवल्य मुक्ति को प्राप्त करता है । काशी का इतिहास और धार्मिक यात्राओं का वर्णन काशी में वेद, पुराणों में और धर्म शास्त्र में आया है । काशी में पचास हजार देवताओं की मूर्ति और मन्दिर है । काशी में जो भी काशी खण्डोक्त मन्दिर हमें मिले उन मन्दिरों का नाम, मकान नंबर सहित लिखा गया है, उन मन्दिरों के दर्शन करने से जन्म जन्मान्तरों के पाप, ताप, दुःख, एवं गरीबी विघ्न, रोग, और व्याधि, संकट सब नष्ट हो जाते हैं, प्रमाण श्लोक सहित लिखा गया है ।

पुस्तकों का नाम यह है—(१) काशी माहात्म्य, (२) काशी का इतिहास (३) काशी दर्शन (४) काशी गौरव इन चार पुस्तकों द्वारा काशी के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त होगी । शोध करने वाले छात्रों के लिए सभी सामाग्री इन पुस्तकों में उपलब्ध है । विश्व से काशी वास करने के लिए आये हुए और काशी वासियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होंगे । जो व्यक्ति इन पुस्तकों को पढ़कर लाभ प्राप्त करेंगे मैं उनका आभारी और ऋणी रहूँगा । इन चार पुस्तकों में सब अलग-अलग विषय प्रकाशित है । सभी पुस्तकें पढ़ने पर काशी के विषय में पूर्ण जानकारी होगी । इन पुस्तकों के माध्यम से

काशीवासियों को धन, सम्पत्ति, भोजन, आवास सज्जन का संग, कथा, सत्संग और भक्ति स्वतः प्राप्त होगी, अन्त में मुक्ति प्राप्त होगी ।

पूर्व आचार्य दंडी स्वामी गंगानन्द तीर्थ जी कहते हैं कि काशी की प्रदक्षिणा यात्रा, जिस तिथि के दिन धर्मशास्त्र में कहा गया है, उसी दिन यात्रा करनी चाहिए । स्कन्द पुराण में कहा गया है कि जिस दिन जिस व्यक्ति को समय हो और जिज्ञासा हो उसी दिन वे ही समय उत्तम मुहूर्त काशी की यात्रा करने के लिए है ।

पहले काशी में सोमवार और प्रदोष के दिन प्रदक्षिणा यात्रा होती थी वर्तमान में सड़क पर बहुत भीड़ होने के कारण प्रत्येक रविवार के दिन यात्रा की जाती है । जिन्हें काशी की सम्पूर्ण यात्रा करने की जिज्ञासा हो; वे यात्री किसी भी महीने के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि के दिन से काशी के मन्दिरों का दर्शन, पूजन, प्रदक्षिणा यात्रा प्रारम्भ करें ।

काशीप्रदक्षिणा येन कृता त्रैलोक्यपावनी ।

सप्तद्वीपा साब्धिशैला भूः परिक्रामिताऽमुना ॥

(नारद पुराण अ० ६ श्लोक १)

अर्थ--हे भवानी ! जिसने काशी की प्रदक्षिणा दर्शन-यात्रा की है । उसने त्रैलोक्यपावनी सात द्वीप, सात समुद्र, सम्पूर्ण पर्वतों के सहित पृथ्वी की वह प्रदक्षिणा, दर्शन कर चुका । वह पुरुष निष्पाप और पुण्यवान हुआ, कृतार्थ हुआ और वह चौरासी लाख योनियों से छूटकर शिव सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है ।

यावज्जीवं वसेत् काश्यां, प्रत्यब्दं सुप्रदक्षिणम् ।

कुर्यादेव निरालस्य आनन्दसदनस्य हि ॥३॥

(काशी रहस्य)

अर्थ--जन्म भर जब तक काशी में वास करे; तब तक आनन्दवन दान काशी की वार्षिक पञ्चकोशी की प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा करें। गालस्य को छोड़ कर पञ्चकोशी यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

काशी के तीर्थों में स्नान करने का प्रत्यक्ष फल

सर्वतीर्थावगाहाच्च यत्पुण्यं स्यान्नृणामिह।

(काशी रहस्य अ० २ श्लोक ६५ से)

सर्वतीर्थावगाहाच्च यावज्जन्म यदज्यते।

(काशी खं० अ० १६, श्लो० २९ से)

अर्थ--काशी से बाहर सभी तीर्थों में स्नान करने से जो पुण्य प्राप्त होता है, उस पुण्य से कोटि गुणा पुण्य काशी के तीर्थों में स्नान करने से प्राप्त होता है। काशी से बाहर सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान करने से जो पुण्य पूरे जीवन में प्राप्त होता है वह पुण्य काशी के मणिकर्णिका घाट पर स्नान करने मात्र से प्राप्त होता है।

काशी में प्रथम स्नान, दर्शन, यात्रा प्रथमदिन

मणिकर्णिका घाट में स्नान करके

काशी में यात्रा प्रारम्भ करने के प्रथम दिन मणिकर्णिका के पुष्करजी तीर्थकुण्ड और गंगा जी में स्नान करके ज्ञानवापी तीर्थ में जाकर मार्जन करने पश्चात् आयतन यात्रा विश्वनाथ जी के आस-पास के मन्दिरों का दाहिने वर्य दर्शन करने के पश्चात् दण्डपाणि साक्षी विनायक के दर्शन कर ढुण्डिराज, अन्नपूर्णा काशी विश्वनाथ जी के दर्शन पूजा करें। इस जन्म और जन्मान्तर के पापों के प्रायश्चित्त के लिए यथाशक्ति फल, मिठाई, दूध, वस्त्र आदि दान करें। घर में

जाकर साधु ब्राह्मण को भोजन करावे यथा शक्ति वस्त्र, दक्षिणा दें। उस दिन कीर्तन करें। सायंकाल पुनः स्नान करके धोया हुआ शुद्ध वस्त्र पहिन कर भस्म लगा करके रुद्राक्ष की माला पहिन कर पूजा की सामग्री साथ में लेकर भगवान् का स्मरण करते हुए दर्शन, पूजा करने जाये। कीर्तन करें, उस दिन भगवान् का स्मरण करते हुए शयन करें।

“काशी में नित्य स्नान, दर्शन, यात्रा नित्य यात्रा के नाम से प्रसिद्ध है।” दूसरे दिन प्रातः घर में स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहिना कर पूजा की सामग्री साथ में लेकर गङ्गा जी का स्मरण करते हुए गङ्गा स्नान करने जाना चाहिए। (विश्व में मनुष्यों के लिए यह तीर्थ, नदी, कुण्ड और गङ्गा जी में स्नान एवं मन्दिरों का दर्शन करने का विधान है। वस्त्र तथा शरीर अपवित्र हो तो मन्दिर के अन्तर्गृही के अन्दर नहीं जाना चाहिए, दूर से ही दर्शन करें यदि अन्दर जाकर दूर से दर्शन करने का मार्ग न हो तो मन्दिर के शिखर का दर्शन करके नमस्कार करें।)

न बन्ध्यं दिवसं कुर्याद् विना यात्रां क्वचित्कृती ।

दृश्यो विश्वेश्वरो नित्यं स्नातव्या मणिकर्णिका ॥

(स्कन्दपुराणे काशी खण्डे अ० १०० श्लोक)

अर्थ—हे भवानी ! काशी में रहने वाले पुण्यवान और धर्मात्मा नित्य मणिकर्णिका घाट में (यात्री काशी के किसी भी घाट में जाकर गङ्गा जी में स्नान करे वही फल मिलेगा) स्नान करके पहले विश्वनाथ जी के आस-पास के मन्दिरों का दर्शन करने के

। श्वात् विश्वनाथ जी का दर्शन करें और किसी भी दिन स्नान, दर्शन किए बिना नहीं रहना चाहिए ।

नोट—विश्व में रहने वाले मनुष्यों को सूचित किया जाता है कि अपने घर के पास में तीर्थ, बहने वाली नदी में स्नान या दर्शन करके मठ एवं मन्दिर तथा साधु, महात्मा का और उत्तम ब्राह्मण का दर्शन करके दूर से प्रणाम करें । तत्पश्चात् यथाशक्ति दान करें । और में पूजा-पाठ करें और अपने इष्टदेव की पूजा करें । पूजा के बाद में अन्न, वस्त्र, मिष्ठान्न यथा शक्ति एक मुठी अन्न एक पैसा आदि दान करें तथा सीधा लगाकर मठ, मन्दिर, ब्राह्मण के घर में भेज देना चाहिए ।)

काशी की ऐतिहासिक और धार्मिक यात्राओं का वर्णन

“काशी की पञ्चकोशी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा और पञ्चकोशात्मक योतिलिङ्ग का प्रमाण”—ब्रह्मवैवर्तपुराणे, काशीरहस्य, अध्याय

१० श्लोक १ से

देव देव महादेव वेदविद्याविशारदः ।

ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, छान्दोग्य उपनिषद, वेदान्त दर्शन, स्कन्द पुराण, कूर्म पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, नारद पुराण, लिङ्ग पुराण, उपनन्दी पुराण, उपगणेश पुराण, उपकार्तिकेय पुराण, शिव संहिता, काशी संहिता, विश्वेश्वर संहिता, पाराशर स्मृति, वाराणसी वैभव, काशी का इतिहास, काशी दर्शन, शिव रहस्य, काशी खण्ड, मनुस्मृति, योग दर्शन, भविष्य पुराण, काशी गौरव, महाभारत, वाल्मीकीय रामायण—

पञ्चक्रोशात्मकं लिङ्गं ज्योतिरूपसनातनम् ।

भवानीशङ्कराभ्यां च लक्ष्मीश्रीविराजितम् ॥

(काशीरहस्यम् अ० १०)

अर्थ--पञ्चक्रोशात्मक भगवान् शिव का लिङ्ग शाश्वत तथा ज्योतिस्वरूप है, भवानी तथा शिव जी के साथ लक्ष्मी और विष्णु भगवान् इस पञ्चक्रोशात्मक ज्योतिर्लिङ्ग में विराजमान हैं ।

पञ्चक्रोशात्मकस्यैव लिङ्गस्य परमात्मनः ।

प्रदक्षिणात्रयं कृत्वा जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥

प्रदक्षिणाया माहात्म्यां महापापहरं शुभम् ।

(काशीरहस्यम् अ० ५०)

अर्थ--इस पञ्चक्रोशी यात्रा के अन्तर्गत पञ्चक्रोशात्मक शिव लिङ्ग की जो मनुष्य तीनवार यात्रा करता है, वह मनुष्य आवगमन से मुक्त हो जाता है । पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा का माहात्म्य महापाप को नष्ट करने वाला होता है ।

दक्षिणे चोत्तरे चैव ह्ययने सर्वदा भया ।

क्रियते क्षेत्रप्रदक्षिणां भैरवस्य भयादपि ॥

(सनत्कुमार संहिता)

अर्थ--विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे भवानी भैरव के भय से उत्तरायण और दक्षिणायन दोनों अपनों अयनों में काशी की सर्वदा पञ्चक्रोशी यात्रा मैं करता हूँ ।

प्रदक्षिणा प्रकर्तव्या क्षेत्रस्याऽपापकाङ्क्षिभिः ।

श्रुत्वा मनुष्यो येनाशु निष्पापः पुण्यवान् भवेत् ॥

अर्थ—इस काशी क्षेत्र की प्रदक्षिणा करने से सभी पाप नष्ट होते हैं। इस काशी क्षेत्र का नाम सुनने मात्र से मनुष्य निष्पाप होकर पुण्यवान हो जाता है।

काशी की यात्रा के अनुभव और प्रत्यक्ष फल

काशी की यात्रा करने वाले यात्रियों को जो प्रत्यक्ष चमत्कार देखने को मिले, वे इस प्रकार हैं—जो यात्री रोगी थे वे निरोग हो गये, जो यात्री ग्रहों से पीड़ित थे उनके ग्रह शान्त हो गये और जिन यात्रियों को दुःख, कष्ट था वह दूर हो गया। जिन यात्रियों को काशी में अवास भोजन आदि की व्यवस्था नहीं थी, उन्हें सब व्यवस्था हो गयी। जो निर्धन थे वे धनी हो गये। जो यात्री मुकदमा, नेतागिरी में परास्त होते थे वे सब विजयी हो गये। जिन यात्रियों के घर, पट्टीदारमें कलह था वह शान्त हो गया। जिन यात्रियों के घर में भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी की बाधाएँ थीं उनकी शान्ति हो गई। जो यात्री पाप कर्म में रत थे और पापी थे वे पाप कर्म को छोड़कर सत्कर्म करने लगे। जिन यात्रियों को नौकरी नहीं मिलती थी, विवाह नहीं होता था, नौकरी में पदोन्नति नहीं होती थी उनका सब कुछ हो गया। जिन यात्रियों के पुत्र नहीं थे उनके पुत्र-रूप-रत्न की प्राप्ति हुई। जो दीन-दुःखी थे वे सब धन-धान्य से सम्पन्न हो गये और वे सब पाप कर्म छोड़कर सत्कर्म करने लगे।

काशी में जो नर-नारी प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा करते हैं उनके पिता, प्रपितामह आदि पीछे जहाँ कहीं भी हों, वहीं २१ कुल के पितर सब मुक्त होते हैं और यात्रा करने वाले दर्शनार्थियों के

दस जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं, काशी की संपूर्ण यात्रा प्रयत्न करके करनी-करानी चाहिए।

नोट—पञ्चक्रोशी यात्रा करते समय प्रत्येक पड़ाव में प्रातः ३ बजे उठकर स्नान, दर्शन, पूजा सूक्ष्म रूप से संध्या करके यात्रा में चलना चाहिए। तीन बजे से पहले जो चलते हैं उन यात्रियों की यात्रा खण्डित होती है।

काशी की धार्मिक यात्राओं का वर्णन

“वाराणसी (नगर और बड़ी अन्तर्गृही) यात्रा की प्रदक्षिणा दर्शन यात्रा,” का प्रमाण ब्रह्मवेवर्त पुराणे, काशीरहस्य अध्याय ११ श्लोक।

ऋग्वेद, स्कन्दपुराणे काशी खण्डे अ० ३१ श्लोक १२६ से पद्म-पुराण, कूर्म पुराण, मत्स्य पुराण, ब्रह्म पुराण, वामन पुराण, अग्नि पुराण, बृहदारण्योपनिषद्, नारद पुराण, लिङ्ग पुराण, गरुड पुराण, विष्णु पुराण, वाराह पुराण, शिव रहस्य, वाराणसी रहस्य, वाराणसी संहिता, ज्ञान संहिता, कोटिरुद्र संहिता, भविष्य पुराण, उपधर्म पुराण, उपसौर्य पुराण, नारद पुराण, उपमात्म पुराण, ईशान संहिता, नैषधचरितम् लघुआश्वलायन स्मृति, आयुर्वेद, शैवा-गम, शतपथ ब्राह्मण, त्रिस्थली सेतु, महाभारत, योगवाशिष्ट, मार्कण्डेय पुराण।

एकरात्रं द्विरात्रं वा वसेन्मध्ये त्रिरात्रकम् ।

प्रदक्षिणाया माहात्म्यं महापापहरं शुभम् ॥

अर्थ—काशी में क्षेत्र संन्यास लेकर काशी वास करने वाले व्यक्ति को पूर्व में आघे गंगा तक, उत्तर में वरुणा नदी दक्षिण में

काशी नदी तक पश्चिम में मडुवाडीह तक रहना चाहिए। काशी में संन्यास लेकर काशीवास करने वाले नर-नारियों को वाराणसी दक्षिणा यात्रा अनिवार्य रूप से करनी चाहिए।

प्रायश्चित्तसंन्यासिनां हि क्षेत्राघौघविनाशनम् ।

अर्थ—काशी में काशीवास करने वाले और काशी में क्षेत्र संन्यास कर रहने वाले नर नारियों के मन, वाणी, शरीर से जो पाप कर्म आते हैं उन पापों के प्रायश्चित्त करने के लिये तथा पाप समुदायों को नष्ट करने के लिये काशी की यात्रा करना चाहिए।

जपध्यानविहीनानां ज्ञानविज्ञानवर्जिनाम् ।

तपस्युत्साहहीनानां गतिर्वाराणसी नृणाम् ॥

(कर्मपुराणान्तर्गत वाराणसीमाहात्म्य)

जो मनुष्य न तो जप कर सकते हैं और न परमेश्वर का ध्यान ही करते हैं, ज्ञान और विज्ञान से रहित हैं, तप करने के लिए जिनके हृदय में लेशमात्र भी उत्साह नहीं है, ऐसे मनुष्यों की गति वाराणसी में ही हो सकती है, दूसरी जगह मुक्ति मिलना असम्भव है।

जन्मान्तरसहस्रेषु सञ्चितः पुण्यकर्मभिः ।

प्राप्ता वाराणसी रम्या प्रसादात् परमेश्वरात् ॥

(मत्स्य पुराण)

हजारों जन्मों में मैंने अनेकों पुण्य कर्म किये। वे पुण्य धीरे-धीरे सञ्चित होते गये। उन्हीं पुण्यों के फल से और भगवान की कृपा से तथा अपने इष्टदेव के आशीर्वाद से परम मनोहर वाराणसी मिली।

प्रश्न—फाल्गुन महाशिवरात्रि के दिन काशी में एक दिन की पञ्चक्रोशी यात्रा किसने किया और किसकी अध्यक्षता में किया तथा कैसे किया ?

उत्तर—काशी विश्वनाथ जी का जन्म उत्सव मनाने के लिए फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन सत्ययुग के प्रथम चरण में ब्रह्मा, विष्णु, महेश और देवताओं के गुरु बृहस्पति, इन्द्र, कुवेर, वायु एवं अग्नि, वरुण और सप्तऋषि आये। उत्सव के उपलक्ष्य में ज्ञानवापी में विशाल सभा लगी। उसी सभा में विष्णु भगवान् ने विश्वनाथ जी को नीरोग, अजर, अमर और चिरञ्जीवी रहने का वरदान देते हुए कहा कि कल महाशिवरात्रि का पर्व है। आप लोग एक दिन की पञ्चक्रोशी यात्रा करने चलें, और मैं भी आप लोगों के साथ यात्रा करने चलूंगा। महाशिवरात्रि के दिन विष्णु भगवान् की अध्यक्षता में विश्वनाथ जी के मन्दिर के दर्शन कर ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र एवं देवता ऋषिमुनि और साधु-महात्मा, संन्यासी ब्राह्मणों को साथ में लेकर काशी विश्वनाथ जी मणिकर्णिका घाट पर जाकर मणिकर्णिका पुष्करणी और गंगा जी के संगम में भाजन करके मणिकर्णिका घाट से दक्षिण हर-हर महादेव शम्भो काशीविश्वनाथ-गंगे कीर्तन करते हुए प्रत्येक मन्दिरों का दर्शन पूजन और रास्ते में बैठे हुए दरिद्रनारायण को चावल, पैसा देते हुए शनैः-शनैः पैदल यात्रा प्रारम्भ हुई। प्रत्येक चौराहे पर धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो विश्व का कल्याण हो, हर-हर महादेव की ध्वनि लगाते हुए चले, दर्शन यात्रा करते हुए रामेश्वर में पहुँचे। विष्णु भगवान् ने सभा में पञ्चक्रोशी माहात्म्य, काशी की महिमा,

काशी में निवास करने की विधि और काशीवास का फल क्या है ?
इस विषय पर प्रवचन किया ।

काशी वासियों ने पञ्चक्रोशी यात्रा करने वालों का स्वागत करने के लिए वरुणा गङ्गा, सङ्गम पर विश्राम गृह एवं सभा कक्ष बनाया । काशीवासियों ने पञ्चक्रोशी यात्रा करके आने वालों को सिर झुकाकर प्रणाम किया और हर-हर महादेव की ध्वनि से उनका स्वागत किया । स्वागत के पश्चात् सभा में विष्णु भगवान् बोले --
“आज से जो कोई देवता, मानव एवं देवगण महाशिवरात्रि के दिन की पञ्चक्रोशी यात्रा करेंगे, उनको मृत्युलोक में धन-सम्पत्ति, तेज, बल एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी एवं सभी प्रकार के दुःख, रोग एवं संकट नष्ट होंगे । साथ ही भगवान् विश्वनाथ जी की भक्ति प्राप्त होगी” । विष्णु जी ने पञ्चक्रोशी यात्रा करने वालों को वरदान दिया । सत्ययुग के प्रथम चरण से आज तक काशी की अखण्ड पञ्चक्रोशी यात्रा चल रही है और सदा चलती रहेगी ।

प्रश्न — “काशी की पञ्चक्रोशी यात्रा एक रात्रि से छः रात्रि तक के पड़ावों में विश्राम करने का प्रमाण किस सद्ग्रन्थ में है और प्रथम काशी की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा यात्रा प्रत्येक जगह पर विश्राम करते हुए किसने की ।”

उत्तर — प्रमाण ऋग्वेद में है कि काशी की पञ्चक्रोशी प्रदक्षिणा यात्रा सत्ययुग के प्रथम चरण में काशी विश्वनाथ जी ने देवता, ऋषि, मुनि, साधु, संन्यासी और ब्राह्मणों को साथ लेकर प्रत्येक पड़ाव की विश्राम स्थली में विश्राम करते हुए की ।

एक रात्रि की पञ्चकोशी यात्रा काशी विश्वनाथ जी करने गये। देवमन्दिरों के दर्शन, पूजन करके मणिकर्णिका घाट जाकर मार्जन, तर्पण कर शास्त्र विधि से यात्रा प्रारम्भ की। प्रत्येक मन्दिर में दर्शन एवं कीर्तन करते हुए विश्वनाथ जी रामेश्वर में जाकर देवता, ऋषि, मुनि, साधु एवं ब्राह्मणों को भोजन कराने के पश्चात् कीर्तन करते हुए विश्राम किया। पुनः दूसरे दिन मणिकर्णिका घाट होते हुए विश्वेश्वर जी का दर्शन करके यात्रा पूर्ण की।

दो रात्रि की पञ्चकोशी यात्रा में विश्वनाथ जी ने विश्वेश्वर के दर्शन करके मणिकर्णिका घाट होते हुए शास्त्रीय पद्धति से दर्शन, पूजन कीर्तन करते हुए भीमचण्डी जाकर दर्शन करने के पश्चात् साधु, ब्राह्मण को भोजन कराकर भीमचण्डी में निवास किया। दूसरे दिन रामेश्वर में रहे, तीसरे दिन विश्वेश्वर के दर्शन किये।

तीन रात्रि की पञ्चकोशी यात्रा में विश्वनाथ भगवान् भीमचण्डी में जाकर दर्शन करने के पश्चात् देवता, ऋषि, मुनि एवं साधु, संन्यासी और ब्राह्मणों को भोजन करा करके भीमचण्डी में निवास किया। दूसरे दिन रामेश्वर में रहे और तीसरे दिन कपिल घाट में विश्राम किये।

चार रात्रि की पञ्चकोशी यात्रा करने लिए काशी विश्वनाथ जी विश्वेश्वर के दर्शन करके मणिकर्णिका घाट, अस्सी घाट होते हुए कीर्तन करते हुए हर-हर महादेव सम्भो काशी विश्वनाथ मङ्ग

की ध्वनि लगाते हुए कर्दमेश्वर के दर्शन कर ऋषि, मुनि, साधू एवं संन्यासी, ब्राह्मणों को भोजन कराने के पश्चात् कर्दमेश्वर में विश्राम किये। विष्णु भगवान् ने काशी की यात्रा माहात्म्य और यात्रा करने वाले को प्रत्यक्ष फल का वर्णन करते हुए काशीवास करने की विधि बताई है तथा कहा है कि अनन्य भक्ति और ब्रह्मात्म-साक्षात्कार के साधन, काशी में स्वधर्म का पालन करते हुए काशी में रहने मात्र से धन, सुख, शान्ति और प्रतिष्ठा इस लोक में स्वतः प्राप्त होती है और मृत्यु होने के पश्चात् वह मुक्त हो जाता है। दूसरे दिन भीमचण्डी तीसरे दिन रामेश्वर, चौथे दिन कपिलधारा में निवास करके यात्रा पूर्ण किये। (यह काशी रहस्य के अनुसार है।)

पाँच रात्रि की पञ्चकोशी यात्रा करने के लिए विश्वनाथ जी चले और मणिकर्णिका होते हुए कीर्तन करते हुए कर्दमेश्वर, भीमचण्डी, रामेश्वर शिवपुर, होते हुए कपिलधारा में विश्राम किये।

छः रात्रि की पञ्चकोशी यात्रा में स्नान, दर्शन, पूजन परिक्रमा करते हुए काशी विश्वनाथ जी भीमचण्डी, सोमनाथेश्वर (लगुटिया हनुमान जी), रामेश्वर, शिवपुर, कपिलधारा में विश्राम कर सातवें दिन मणिकर्णिका घाट विश्वेश्वर के दर्शन करके यात्रा की पूर्णाहुति की।

प्रश्न—पञ्चमवेद आयुर्वेद में वर्णन आया है कि वसन्त ऋतु में जुलाव लेने के पश्चात् यात्रा करनी चाहिए।

उत्तर—वसन्त ऋतु प्रारम्भ होते ही दो समय तक खिचड़ी या भात हल्का भोजन करने के पश्चात् दूसरे दिन सायं जलपान करने

के पश्चात् त्रिफला चूर्ण २० ग्राम गर्म पानी में घोलकर पीये । चार-पाँच दस्त होने पश्चात् ठंडा जल पी लेने से दस्त रुक जाती है । यदि किसी कारण से त्रिफला से दस्त नहीं हुई तो दूसरे दिन पुनः सायं १५ ग्राम दे । दूसरे दिन पेट के कीड़े की दवा खाने दे । दस्त साफ होने के पश्चात् खिचड़ी या भात खाने को दें । तीसरे दिन पञ्च-कोशी यात्रा और काशी की यात्रा शास्त्रीय विधि से करने से एक वर्ष तक यात्रा करने वाले नर-नारी नीरोग एवं स्वस्थ रहते हैं ऐसा आयुर्वेद में लिखा है । वसन्त ऋतु में जलवायु बदलने से एक वर्ष तक शरीर नीरोग रहता है । काशी की यात्रा करने वाले धर्मपरायण व्यक्ति क रोग, पाप, दरिद्रता एवं संकट सब नष्ट होते हैं ।

(नोट - यदि उपलब्ध हो तो इच्छा भेदनी नाम की औषधि दो गोली से चार गोली तक खाने से पेट के १० प्रकार के कीड़े मरते हैं और दस्त होता है । दस्त होने के पश्चात् ठण्डा जल पीने से दस्त रुक जाता है । पेट के केचुआ आदि कीड़े मारने की सस्ती और सर्वत्र सुलभ औषधि यह है कि पीतल के बर्तन में लकड़ी की राख (भस्म) १५० ग्राम, २५० ग्राम जल में मिला करके छान करके ढँक कर रख दे, दूसरे दिन प्रातः खाली पेट पहले १०० ग्राम मीठा खाकर धीरे से गिलास में शुद्ध जल पीतल के बर्तन से लेकर पीने दे । पुनः २०० ग्राम जल छोड़ कर ढक करके रखे । दूसरे दिन पुनः उसी प्रकार पीने देने से सब कीड़ों को मार कर शरीर को स्वस्थ और नीरोग बनाता है । कण्डा गोबर, पतवार और कोयला की राख न पड़ने पावे, क्योंकि वह नुकसान करती है ।)

दण्डी स्वामी श्रीधरस्वामी काशी के मणिकर्णिका घाट पर गो मठ में रहते थे । चैत कृष्ण पञ्चमी तिथि के दिन हजारों भक्तों

को साथ में लेकर छः रात्रि की पञ्चकोशी यात्रा करने के लिए शास्त्रीय विधि से जाते थे और चैत्र शुक्ल पञ्चमी तिथि को छः रात्रि छः दिन की पञ्चकोशी यात्रा करने से साधू, सन्यासी, ब्राह्मण और यात्रियों को साथ में लेकर कीर्तन, भजन, मन्त्रजप और कथा श्रवण करते हुए जाते थे ।

श्रीधरस्वामी जी वैशाख कृष्ण द्वितीया तिथि के दिन काशी की छः रात्रि की पञ्चकोशी यात्रा हजारों काशीवासियों को साथ में लेकर शास्त्र विधि से करने जाते थे । भीमचण्डी की बड़ी धर्मशाला में कथा होने जा रही थी । मंगलाचरण से पहले मुक्तिनाथ पाण्डेय जी ने उठ कर खड़े होकर प्रश्न किया ।

प्रश्न—स्वामी जी ! वसन्तऋतु में ही तीन वार पञ्चकोशी यात्रा क्यों करते हैं ?

उत्तर—(स्वामी जी बोले)—आयुर्वेद में लिखा है कि वसन्तऋतु में जलवायु बदलने वाला मनुष्य एक वर्ष तक नीरोग रहता है । इसलिए मैं वसन्तऋतु में विशेष पञ्चकोशी यात्रा करता हूँ ।

प्र०—स्वामीजी काशी की पञ्चकोशी आदि परिक्रमाओं, यात्राओं का वर्णन किस सद्ग्रन्थ में है ।

उत्तर—काशीखण्ड, काशी रहस्य, शिवरहस्य, काशीसंहिता, भवानी संहिता, विश्वेश्वर संहिता, शंकर संहिता, सनत्कुमार संहिता, पार्वती संहिता, अन्नपूर्णा संहिता, सती संहिता और ऋग्वेद, अथर्ववेद, स्कन्दपुराण, पद्मपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, मत्स्यपुराण, नारदपुराण, लिंगपुराण, शिवपुराण, काशीमाहात्म्य, वाराणसी वैभव, काशी का इतिहास, काशी गौरव इत्यादि सद्ग्रन्थों में प्रमाण मिलता

है। काशी की पञ्चक्रोशी इत्यादि यात्रा करने वाले नर-नारी जीवन-मुक्त माने जाते हैं, शरीर से सब कार्य करते हुए भी यात्रा करने वाले व्यक्ति को धर्मशास्त्रों ने जीवनमुक्त कहा है।

श्रीधरस्वामी जी काशी में वास करते हुए प्रतिदिन प्रातः तीन बजे कुटिया में स्नान करके धोया हुआ शुद्ध वस्त्र पहन कर हाथ में जलपात्र लेकर गङ्गा जी में जाकर स्नान करके तर्पण, सन्ध्या करने के पश्चात् गंगाजल साथ में लेकर काशी के तीर्थ, साधु-संन्यासी, मठ-मन्दिरों का दर्शन, पूजन करने जाते थे। दर्शन करके अपनी कुटिया (मठ) में आते थे और वेदान्त उपनिषद् आदि का पाठ कर पुनः गंगा स्नान करके ११ बजे मधुकरी भिक्षा लेने जाते थे और गंगा जी के किनारे बैठकर भोजन करते थे। निरन्तर प्रणव का जप करते रहते थे। सायं चार बजे से पाँच बजे तक प्रवचन उपदेश करते थे। उपदेश के पश्चात् गंगा स्नान करके भजन करते थे। काशी पंचक्रोशी अन्तर्गृह इत्यादि काशी यात्रा करते और कराते इसी प्रकार ११ वर्ष व्यतीत हो गया। एक दिन प्रातः चार बजे गंगा स्नान करके ध्यान करने बैठ रहे थे, उसी समय काशी विश्वनाथ जी स्वयं वृद्ध ब्राह्मण के वेष में लाठी टेकते हुए स्वामी जी के पास आ गये और ओम् नमो नारायण बोलते हुए स्वामी जी को नमस्कार किये। तत्पश्चात् वृद्ध ब्राह्मण स्वामी जी से बोले—“आपके काशीवास और काशी की यात्रा करने से काशीवासी, काशी के देवता आपसे प्रसन्न हो गये हैं, आप श्रीमद्भागवत महापुराण की टीका कीजिये, सरस्वती, गणेश जी आपकी श्रीमद्भागवत की टीका लिखने में सहयोग करेंगे स्वामीजी बोले—“प्रत्यक्ष दर्शन दो, आप कौन हैं।” स्वामी जी के ऐसा कहते

ही उन वृद्ध ब्राह्मण वेषधारी के हाथ में जो लाठी थी वह त्रिशूल हो गया। शंकर भगवान् श्रीधरस्वामी जी को दर्शन देकर तत्काल अन्तर्धान हो गये। श्रीधरस्वामी जी को विश्वनाथ जी का दर्शन होते ही सब विद्या प्राप्त हो गयी और महाशिवरात्रि के दिन श्रीधर स्वामी जी ने श्रीमद्भागवत महापुराण की श्रीधरी टीका केदारेश्वर के मन्दिर के पूर्व फाटक के अन्दर बँधकर और केदारेश्वरका दर्शन ध्यान करके लिखना प्रारम्भ किया था। द्वापर युगसे पाँच हजार वर्ष कलियुग का बीत रहा है। आज तक हजारों विद्वानों ने श्रीमद्भागवत पर टीकाएँ लिखी परन्तु श्रीधरी जैसी टीका विश्व में किसी ने नहीं लिखी। ११ वर्ष तक काशी में रहकर तपस्या और काशी की सम्पूर्ण यात्रा करने का प्रत्यक्ष फल है कि आज विश्व में श्रीधरी टीका ही सर्वश्रेष्ठ है।

वेद और तीनों लोकों से न्यारी काशी अपौरुषेय है जब गंगा जी काशी के दर्शन करने के लिए विन्ध्याचल से चलीं तो तीन सौ फीट नीचे होकर चलने लगी। काशी को गुरु समझ कर अस्सी नदी के पास पहुँचते ही गंगा जी ने काशी को साष्टांग दण्डवत् किया उसी समय निश्चल और स्थिर होकर उत्तरवाहिनी काशी की तट वाहिनी होकर शनैः-शनैः बहने लगीं। काशी में प्रवेश करते ही हजारों फुट नीचे से इस पार और उस पार के घाटों के बीच में विशाल सरोवर की भाँति अस्सी और वरुणा संगम तक धीरे-धीरे चलने लगी जैसे श्रावण, भादों मास में गंगा जी का दर्शन होता है। इन्हीं गंगा जी के तट पर भुक्ति और मुक्ति देनेवाली काशी है। जब तक प्राणी काशी में जीवित रहता है तब तक उस प्राणी के भोग्य

पदार्थ सभी योनि के प्राणियों को विश्वनाथ जी देते हैं। मृत्यु होने के पश्चात् सभी प्राणियों को मुक्ति देते हैं। जो मनुष्य गंगा जी के दर्शन कर स्नान करके सूर्य भगवान् को तीन बार अर्घ्यदान करते हैं, उसी समय खड़े होकर तीन बार तर्पण करते हैं उनके करोड़ों जन्म के पीछे के पितर प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हैं।

आब्रह्मास्तम्बपर्यन्तं जगत्पृथिवीति ब्रुवन् ।

क्षिपेत् पयोऽञ्जलीस्त्रीस्तु कुर्यात् संक्षिप्ततर्पणम् ॥

(सनातनधर्ममार्तण्ड)

भावार्थ—स्नान करने के पश्चात् (गंगा जी में, नदियों में, घर में, जहाँ कहीं भी स्नान किया) उसी जगह तीन बार सूर्य नारायण को अर्घ्य देने के बाद तीन बार तर्पण करें। द्विजाति मन्त्र बोल कर तर्पण करें व अन्य सभी पितरों का नाम लेकर तर्पण करें। इस मन्त्र से “आब्रह्मास्तम्बपर्यन्तं” समस्त विश्व के सब प्राणियों की तृप्ति के लिए तर्पण करना चाहिए।

सन्ध्या, देव, ऋषि पितर तर्पण एवं हवन, पूजा, पाठ और अन्न, वस्त्र, द्रव्य तथा शय्यादान, गोदान, तुलादान, कन्यादान उत्तर वाहिनी गंगा जी के किनारे काशी में जो भी दान किया जाता है, वह कोटि गुणा अधिक होकर दान करने वाले को और उनके पुत्र, पौत्रों को प्राप्त होता है। गंगा के किनारे छप्पन प्रकारके दिव्य भोजन बनाकर साधु, संन्यासी और सिद्ध महात्मा तथा ब्राह्मणों को भोजन कराने वाले व्यक्ति को एक सौ जन्म तक निरोग शरीर मिलता है और वह अच्छे धनी कुल में जन्म लेता है।

(आगे छप रहा है)

काशी के दर्शन करने का विधान इस प्रकार से है—अस्सी नदी गङ्गा संगम अथवा वरुणा संगम से प्रारम्भ करते हैं। गङ्गा जी के पूर्व तट से नौका में बैठकर धीरे-धीरे चलायें। वेद और पुराणों में काशी के मकान, मठ, मन्दिरों का वर्णन है। एक तले से नौ तले तक के मकान और विभिन्न रङ्गों से रंगे हुए हैं ऐसा वर्णन मिलता है। एक बार काशी की तरफ देखिए और गङ्गा जी के पूर्व तट की तरफ देखिए, अपने मन को स्थिर करके काशी का दर्शन करिए। आप की जैसी भावना हृदय में होगी उसी प्रकार से आप को काशी का दर्शन होगा। काशी के घाटों पर गंगा जी में स्नान करने वाले भगवान् के भक्तों का दर्शन होगा और काशी के दर्शन करते ही जन्म जन्मान्तर के पुण्य उदय हो जाते हैं। दर्शन करने वाले के मन बदल जाते हैं। काशी का दर्शन पाते ही दृष्टि बदल जाती है।

(नोट स्वामी विवेकानन्द जी के गुरु जी रामकृष्ण परम हंस जी काशी आये काशी के दर्शन करने के लिए नैया पर बैठे उसी समय स्वामी रामकृष्ण परम हंस जी को घाट, सीढ़ी, मठ, और मन्दिर, मकान सब सोने का दर्शन हुआ उसी समय परम हंसजी ने काशी विश्वनाथ जी का स्तुती करने लगे। यह प्रसंग रामकृष्ण परम हंस जी के जीवन परिचय में लिखा है।

मैं हिमालय से काशी आया मणिकर्णिका घाट पर स्नान-संध्या और तर्पण करके हवन कर रहा था उसी समय एक साधू आकर बोले मैं आपको काशी का दर्शन कराऊँगा चलो, मैं नैया में बैठ कर गंगाजी के बीच धारा में पहुँचते ही पश्चिमा भी मुख हुआ उसी समय काशी के घाट, सीढ़ी, मन्दिर और मकान सब मणि के जैसे चमकता हुआ प्रकाश देखाई पड़ा उसी क्षण मेरा मन, बुद्धि, चित्त अहंकार और दृष्टि बदल गई उसी दिन से मैं काशीवास करने लगा।)

काशी के दर्शन करते ही संकट, कष्ट, विघ्न और गरीबी सब नाश हो जाते हैं। पुण्य का उदय हो जाता है। नास्तिक व्यक्ति भी

आस्तिक हो जाता है और उसी दिन से स्वधर्म का पालन करते हुए दान, यज्ञ, भजन, पूजा-पाठ और सत्कर्म करने लगता है और तत्काल भगवान् का अनन्य भक्त हो जाता है। काशी में आकर जिन्होंने गंगास्नान, मठ-मन्दिर और गंगा जी में नौका पर बैठकर काशी का दर्शन नहीं किया, उसने कुछ भी नहीं किया।

काशी में जैसी शंखाकार, चन्द्राकार, धनुषाकार होकर गंगा जी बहती है, ऐसा दृश्य विश्व के किसी नगर और नदी में नहीं है। धर्मात्मा जन मन से फोटो खींचकर मन एवं हृदय में धारण करते हैं। अन्य लोग और फोटो लेते हैं। काशी माहात्म्य और काशी गौरव इत्यादि सद्ग्रन्थ को पढ़कर प्रत्येक घाट, मठ, मन्दिर के महत्व को जानना चाहिए।

काशी में मोक्ष भूमि में काशी वास करने वाले काशी वासियों का तन, मन, धन और शरीर से सेवा और सहयोग करने वाले व्यक्ति को और विश्व में रहने वाले नर, नारियों को काशी वास कराने के लिए सज्जन व्यक्ति को समझा बुझाकर प्रेरित करके काशी वास कराने वाले के २१ खानदान के पितर और आने वाली पीढ़ी के पितरों को काशी अपने-अपने असत् कर्म से नरक में पड़े हुए पितरों को काशी मुक्ति देती है। जो मनुष्य स्वधर्म का पालन करते हुए और गंगा दर्शन, स्नान, संध्या, देव, ऋषि, पितर तर्पण तथा प्रतिदिन यथा शक्ति दान करते हो और काशी के मठ, मन्दिरों के दर्शन पूजा करने जाते हो दूध, फल आदि साधु संन्यासी और ब्राह्मणों को यथा शक्ति जलपान कराते हैं। मन, वाणी से अतिथियों का सत्कार एवं सेवा करते हैं। ऐसे काशीवासी जब तक जीता रहेगा उनको अन्न, वस्त्र दिव्य भोजन और धन, आवास स्वतः प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति शरीर रहते हुए भी जीवन मुक्त माने जाते हैं। उनके पास श्राप और आशीर्वाद देने की शक्ति स्वतः आती है। तपसी विरक्त, साधु, महात्मा, संन्यासियों का जो सेवा

करता है। सहयोग देता है। आज्ञाकारी होता है। ऐसा भक्त साधु संन्यासी के पुण्य ले जाता है जो व्यक्ति साधु, संन्यासियों का निन्दा करता है। अवाच्य बोलता है। वह साधु, संन्यासियों के द्वारा जो मन, वाणी, शरीर से पाप होते हैं। वह पाप निन्दक ले जाता है। साधु पाप पुण्य से रहित होकर जन्म मृत्यु से मुक्त हो जाता है। काशी माहात्म्य में शंकर भगवान स्वयं कह रहे हैं।

ये काश्यां धर्मं भूपिष्ठा, निवसन्ति मुनीश्वराः।

ते तारयन्ति चात्मानं, शतपूर्वान् शतावरान्॥

प्रश्न—बाहर से काशी में आकर रहने वाले मोक्ष भूमि से बाहर के नर-नारी और समान लेकर काशी के गलियों में क्यों घूमते हैं ?

उत्तर—काशी विश्वनाथ जी को प्रसन्न करने के लिए तीर्थ और मठ, मन्दिर काशी के विरक्त तपसी साधु, महात्मा, तथा त्रिकाल, संध्या, तर्पण, हवन, एवं अग्निहोत्र आदि ब्राह्मण, रुद्राक्ष के माला, पहने हुए त्रिपुण्ड्र ललाट में लगाए हुए दिव्य भेष-भूषा में काशी के गलियों में चलते हैं। उन त्रिकाल दर्शियों के दर्शन करके अपना और अपने कुटुम्ब अगले पीढ़ी को मुक्ति दिलाने के लिए सामान कन्धे में, सीर में, पीठ में, टाली में, बैलगाड़ी में, घोड़ा गाड़ी में लेकर देशी घी दूध, दही, मक्खन, खोवा, मिठाई, फल, सब्जी, खाद्यान, तेल, मसाला, वस्त्र प्रत्येक मठ, मन्दिर मकान में जो भी समान आप से होता है। वे सभी प्रत्येक वस्तु का नाम लेकर ध्वनि से आवाज लगाते हैं। ताजा सामान दवाजि पर आया हुआ देखकर सभी लोग समान खरीदते हैं। काशी के गलियों में घूम-घूम कर और सामानों के नाम लेकर के आवाज लगाते हुए चलते हैं। काशी में एक तल्ले से लेकर मठ, मन्दिर, और मकान, नौ तल्ले तक के मकान बने हुए हैं। अटारी एवं बरामदे के ऊपर के तल्ले से रस्सी बधी हुई टोकरी को नीचे की ओर लटकाते हैं समान बेचने वाला व्यक्ति समान उस टोकरी में भर देता है। फिर उसे ऊपर खींच लेते हैं। समान का रुपया टोकरी में

रख देते हैं। काशी से बाहर रहने वाले नर नारियों का यह धारणा है कि हमारा समान काशीवासियों के काम में जाएगा तो इससे मेरा और मेरे परिवार का भी मुक्ति हो जाएगी इस उद्देश्य से दूध, दही, घी, एवं फल, मिठाई, रुपया, वस्त्र इत्यादि धनी लोग, मठ, मन्दिर, साधु, ब्राह्मण, को बाटने के लिए काशी में सामान लेकर आते हैं।

समान रुपया बाँटकर [दान] अपने और अपने परिवार को धन्य समझते हैं जो छप्पन प्रकार का दिव्य भोजन साधु ब्राह्मण को कराते हैं और कहते हैं।

भगवान् को जो व्यक्ति दान करता है परोपकार करता है। दीन दुखियों को धन, देकर सहयोग करता है। जिसके घर में साधु, ब्राह्मण का सत्कार सम्मान होता है। जिनके घर में अतिथियों की सेवा होता है। उनके घर में भगवान् स्थिर लक्ष्मी को आज्ञा देते हैं कि उस भक्त के घर में जाकर निवास करो कहते हैं।

नोट—काशी संहिता के ५० पृष्ठ में और १०८ श्लोक में शंकर, भगवान् स्वयं कहते हैं, हे पार्वती ! मैं प्रतिदिन काशी की दर्शन करने जाता हूँ, काशी की उत्तर वाहीनी गंगा जी तीर्थ, मठ मन्दिर एवं साधु महात्मा सन्यासी और भगवान् के भक्त, त्यागी, शिव योगी तथा तपसी, विरक्त ज्ञानी और विज्ञानी स्वधर्म का पालन करने वाले नर-नारी एवं स्नान, संध्या तर्पण और भगवान् का पूजा, पाठ यथा शक्ति प्रतिदिन अन्न, वस्त्र, द्रव्य औषधि दान करने वाले उदार और दानी, दीन दुखियों पर दया और तन, मन, धन से सेवा करने वाले गौशाला, धर्मशाला, जलाशय, घाट, तीर्थ, मठ, मन्दिरों का जीर्णोद्धार करने वाले भक्तों के और ललाट में त्रिपुण्ड्र भस्म गले में रुद्राक्ष की माला पहिने हुए भगवान् के अनन्य भक्तों के दर्शन करने के लिए हे देवी मैं काशी में जाकर भेष बदल करके काशी की प्रत्येक गलियों में चलकर दर्शन करता हूँ। हे पार्वती ! काशी प्राणी मात्र को मुक्ति और भुक्ति देती है और मुझे बहुत प्रिय है। काशी के प्रत्येक गलियों में प्रातः तीन

बजे से ही वेद-पाठ, वेदान्त का पाठ, रुद्री पाठ और प्रत्येक मठ, मन्दिरों में पूजा, आरती और भगवान् की स्तुति प्रार्थना प्रारम्भ हो जाती है, हे देवी ! काशी जैसी मृत्युलोक में कोई भी जगह नहीं है क्योंकि काशी महापापियों को भी मुक्ति देती है। इतना ही नहीं काशी में अमर, ऋषि मुनि और सिद्ध-प्रसिद्ध तपसी काशी के मठ-मन्दिर में निवास करते हैं गलियों में स्वतः दर्शन देते हैं। हे पार्वती ! मैं धर्मात्मा साधु ब्राह्मणों के दर्शन करके गंगा जी में स्नान करके अपना उसी प्रकार का शरीर और भेष धारण करके मैं कैलाश आता हूँ।

“काशी महात्म्य में शंकर भगवान् काशीवास का वर्णन करते हुए कहते हैं।” काशी में एक क्षण एक मिनट से लेकर जितने दिन रहे, काशी से बाहर किए हुए पाप क्षीण हो जाते हैं और पुण्य प्रति-क्षण काशी की मोक्ष भूमि के प्रभाव से बढ़ता है। इतना ही नहीं दरिद्रता संकट और विघ्न सब नष्ट होते हैं।

प्रश्न—“गुरु जी जन्म-जन्मांतर तक निरोग और स्वस्थ कैसे रहे, धन, सम्पत्ति घर में स्वतः प्राप्त हो, भाई, बन्धु, पुत्र परिवार सब आज्ञाकारी बने एवं सेवक हो, पड़ोसी रिस्तेदार पट्टीदार सब सम्मान करें और दूध, फल, मिष्ठान्न छप्पन प्रकार के भोजन मिले तथा आज्ञाकारी सेवक दिव्य भोजन सदा कैसे मिलेंगे ?”

उत्तर—(१) स्थूल शरीर को निरोग रखने के लिए अपने प्रकृति के अनुसार सात्विक भोजन करें। (२) अपने को जो प्रिय हो और पथ्य हो वही आहार लें। (३) साधन हैं आपको जितनी भूख हो उस भूख में से ३ ग्रास कम खाए। (४) साधन है, जल थोड़ा-थोड़ा करके अधिक पिए यदि उपलब्ध हो तो भोजन के पश्चात् नमक और जीरा मिलाकर मट्ठा पिए। (५) भोजन के साथ हरी सब्जी भोजन के अन्त में रात्रि को त्रिफला जल के साथ ५ ग्रा० से ७ ग्रा० तक ले उपलब्ध हो तो सोते समय २५० ग्राम दूध पीकर सोये (६) काम करना, चलना हँसना, बोलना और सज्जन का संग कथा श्रवण मनन विधि ध्यान और कीर्तन करना। (७) सबको उनके योग्यता के अनुसार सही

मार्ग पर लगाने के लिए बराबर उपदेश देना और जिसका जो भी कार्य करना हो वही काम सिकाना, सभी के कल्याण के लिए प्रेरणा करना, सभी से प्रेम रखना एवं सभी का कल्याण चाहना । (८) सभी सुखी हो सभी प्राणी निरोग रहे, सभी को धन, संपत्ति, सुख, शान्ति मिले और अन्त में सभी प्राणि मुक्त हो ऐसी भावना सदा रखें, किसी को किसी भी प्रकार का कष्ट न हो, इस प्रकार की भावना बनाने से घर में बैठे हुए सबका कल्याण कर सकता है, एक साधु और एक लगूटी कटी वस्त्र पहना है, आपके पास कुछ भी नहीं है, परन्तु सभी का कल्याण हो ऐसी भावना रखते हैं वही साधु के दर्शन करते ही रोग, संकट, दरिद्रता एवं चिन्ता, विघ्न सब नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि उनके पास शुद्ध भावना है निःश्वार्थ विश्व के प्राणियों का कल्याण चाहता है ईश्वर भक्त के भावना के अनुसार साधु के आशीर्वाद और वचन को पूर्ण कर देते हैं ।

(९) परोपकार और निष्काम सेवा करते हैं जो दिन दुखियों को यथा शक्ति अन्न, वस्त्र औषधि देकर सहयोग करते हैं और रोगी वृद्ध की सेवा करता है, उसके इस जन्म में रोग, दुःख, संकट, शान्त हो जाते हैं और अन्त में उसको मुक्ति मिलती है । क्योंकि रोगी और वृद्ध की आत्मा सेवा करने वाले व्यक्ति को आशीर्वाद देते हैं । सनातन वैदिक हिन्दू धर्म के वेद, पुराण और धर्मशास्त्र में कहा गया है, अपने से बड़े का सम्मान करता है वृद्ध एवं रोगियों की सेवा करता है, यथा शक्ति सहयोग करता है, ऐसा परोपकारी व्यक्ति अनन्त जन्म तक निरोग और धनी होकर जन्म लेता है, उस परोपकारी व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ स्वतः प्राप्त हो जाते हैं ।

आयुर्वेद में धनवन्तरी ब्रह्मऋषि स्वयं शरीर रोगी होने का प्रत्येक प्रमाण वर्णन करते हैं । जो बालक १० घण्टा सोता है वह निरोग और स्वस्थ रहता है । जवान (युवक) आठ घण्टा सोता है उसके शरीर में शक्ति, बल, बुद्धि और विद्या तथा निरोग

शरीर प्राप्त करते हैं। अन्य सभी को ६ घण्टा सोना अनिवार्य है। जो व्यक्ति ६ घण्टा नहीं सोता है उसके शरीर में तमो गुण और और आलस्य दिन भर रहता है, किसी भी कार्य करने में मन नहीं लगता हर समय नींद पूरा न होने से शरीर भारी और अस्वस्थ मालूम पड़ता है भोजन में अरुचि रहती है। नींद कम लेने से प्रत्येक घर-घर में घर के प्रत्येक सदस्यों को कुछ न कुछ रोग आ गया है, रात्रि आठ बजे तक भोजन करके ९ बजे तक सो जाना चाहिए।

विश्व में टेलीविजन (टीवी) नाम का क्षय महारोग एवं महाबल; बुद्धि और धन संपत्ति तथा विद्या को नष्ट करने वाली चण्डालीनी प्रत्येक घर-घर में प्रवेश कर गई है। वहीं प्रत्येक घर में दिव्य भोजन फल दूध; घी दही एवं पञ्चमेवा और पौष्टिक पदार्थ सब खा गई। आधुनिक बिलास्ता में धन समाप्त करते हैं, भोजन सुखा रुखा खाते हैं, शरीर निर्बल हो जाता है। नींद पूरा न होने के कारण दिमाक में भारी पना शरीर में कमजोरी बना रहता है। यह टेली-विजन पहले भी नहीं थी। बाद में नहीं रहेगी।

नोट—आज से पचास वर्ष पहले टेलीविजन नहीं था पहले के सभी मनुष्य घर, झोपड़ी में रहते थे फटे, पुराने धोया हुआ शुद्ध वस्त्र पहनते रहे, स्वधर्म का पालन करते हुए नेमआचार्य में रहते हुए सत्कर्म करते थे। छप्पन प्रकार के दिव्य भोजन बनबा कर भगवान् को अर्पण कर भोजन करते थे। वे सौ वर्ष तक जीते रहे। जबसे टी० बी० रोग और खाद घर-घर में आ गई तभी से मनुष्यों का आयु घट कर ७५ वर्ष का हो गया है।

वर्तमान में गैस से भोजन बनता रहता है वह गैस के चूल्हा से बने हुए भोजन से पेट में गैस आदि रोग उत्पन्न करते हैं। यह गैस भी पहले नहीं था बाद में भी नहीं रहेगा।

नोट—सबसे उत्तम और श्रेष्ठ लकड़ी से बना हुआ भोजन शरीर को निरोग रखता है, युद्ध प्रारम्भ होते ही गैस का सिलेण्डर मिलना

असम्भव होगा आज से ही लकड़ी का एक चूल्हा जलाने का अभ्यास करें।

जो आधुनिक खाद खेत में डाला जाता है वह भी रोग पैदा करता है। गोबर का खाद डालकर अन्न और सब्जी को उत्पन्न करना चाहिये।

जो व्यक्ति रोगी को दवा, तंगे को वस्त्र, भूखे को भोजन एवं प्यासे को जल देता है और सतशास्त्र का कथा सुन कर आत्म तत्त्व को समझ कर श्रवण, मनन निधि ध्यासन करता और सतसंग करता है, वह भी निरोग रहता है और कीर्तन करता है जो व्यक्ति घर में आये हुये अतिथियों का सम्मान एवं मधुर वाणी से सत्कार करके जलपान और मेरे घर से कोई भी अतिथि जलपान किये बिना न जायें, ऐसी भावना करने वाले व्यक्ति के घर में और साधु संन्यासियों को मधूकरी भिक्षा श्रद्धा से देता है उसके घर में स्थिर लक्ष्मी जी निवास वास करती है सुख, शान्ति प्राप्त होता है और शरीर निरोग रहता है।

दरवाजे पर आये हुये भीख मांगने वाले को एक मुट्ठी एक पैसा से यथा शक्ति (अन्न) देते रहना क्योंकि मांगने वाले के भेष में मैंने इनको बहुत सम्पत्ति दिया है देता है या नहीं भगवान स्वतः किसी न किसी भेष में आते हैं। हाथ फैलाकर मांगते हैं यदि नहीं मिला तो धीरे-धीरे दिये हुये सम्पत्ति हर लेते हैं। मांगने वाले आप के घर में आप को सावधान करने आते हैं मैंने दान नहीं दिया इसलिये मैं मिखारी हो गया हूँ यह बात वेद, पुराण एवं धर्मशास्त्र में तथा लोक में भी देखा-सुना गया है दिव्य-व्यञ्ज, पदार्थ बनाकर भगवान को अर्पण करके साधु, ब्राह्मणों को भोजन कराने से यह लोक में और परलोक में धन, सुख-शान्ति और भक्ति प्राप्त करके यहाँ, वहाँ दोनों लोक में शरीर निरोग रहता है और मुक्ति, भुक्ति दोनों प्राप्त होते हैं।

प्रत्येक अमावस्या, द्वादशी, पूर्णिमा और जब जिस दिन व्यतिपात् योग हो उसी दिन प्रातः स्नान, संन्या, पूजा, पाठ यथाशक्ति दान इत्यादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर गोदान, जमीन दान मकान दान शैया तथा तुला दान आदि दान करते हैं। वह व्यक्ति सात जन्म, तक पुत्र, पौत्रों से और धन सम्पत्ति तथा ऐश्वर्य प्राप्त करता है धनी और निरोग रहता है। जो व्यक्ति ऐसे दिन साधु, ब्राह्मण को भोजन कराता है। ऐसे पुण्य तिथि के दिन सीधा लगाकर मठ, मन्दिर, साधु और ब्राह्मणों के घर में भेज देने से किसी भी जन्म में अन्न की कमी नहीं होगी। आप के घर में जो भोजन बनने के लिए अन्न आया है, सामान में से निकाल कर प्रत्येक में से एक मुट्ठी अन्न थोड़ा रख दें, बाद में उसे मठ मन्दिर में भेज देना चाहिए। आप के सामने भोजन परोस कर थाली में रखा है, वह भी सब आप का नहीं है उसमें से एक ग्रांस गौ के लिए, दूसरा ग्रांस देवताओं के गण के लिए निकाल कर अलग रख दें। भगवान् को निवेदित करके अन्न देवता को नमस्कार करके (भोजन करने के पश्चात् एक ग्रांस को शेष बचाकर रखें।) इस विधान से भोजन करने से शरीर निरोग रहता है।

श्री भगवान् ने आप को जो धन, सम्पत्ति दिया है, उस में से दस प्रतिशत जो भी सम्पत्ति हो उसके दशवां भाग निकाल कर दान खाता में रखे उसी से दान खाता खोलें मनुष्यों का यह लोक और परलोक में स्थूल शरीर निरोग तथा करोड़पति के घर में उत्पन्न होता रहता है। जो व्यक्ति प्रातः ३ बजे ब्रह्ममुहूर्त में उठकर अपने इच्छा के अनुसार सत् कार्य करता है, (विद्यार्थी पढ़ता है) अपने जिज्ञासा के अनुसार कार्यों को करते हैं, उनको सफलता मिलती है। साधु महात्मा, संन्यासी तपस्वी, साधक एवं विरक्त सिद्ध, त्रिकालदर्शी और संन्यासी यह सब २॥ बजे उठकर ३ बजे स्नान आदि से निवृत्त होकर अपने इष्ट देव का ध्यान करने के पश्चात्

आप पूजा, पाठ और जप भगवान का स्मरण करते हुये सतकार्यों को करते हैं, क्योंकि यही व्यक्ति तपसी सिद्ध सादक भविष्यमें हो जाते हैं।

नोट—“जो सज्जन कहते हैं मैं और मेरे पुत्र-पौत्र सपरिवार रिष्ट-पुष्ट निरोग रहें १०० वर्ष तक जिए जिनकी ऐसी भावना है वह नर-नारी अपने घर में दूध देने वाली देशो गायें रखे गाय की सेवा करे। बच्चों को गाय दूहते समय तत्काल गरम दूध यथा रुचि पिला दे और दही मथते समय घी तैयार होने वाला हो उसी समय ही बालकों को एक गिलास पीने दे।”

देशी गौ के भोजन के पश्चात् २॥ सौ ग्रा० मट्ठा काला नमक और जीरा मिला कर अभाव में मीठा या नमक मिलाकर सबको पिला दे। देशी-गाय के दूध, दही, मट्ठा और घी सेवन करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है, विद्यार्थी एक बार पाठ पढ़ लेंगे कंठस्थ हो जाता है। एक बार देखेंगे सुनेंगे याद हो जाता है।”

यदि ४ गाय रखने में असमर्थ है वे गृहस्थ दो देसी भैंस और दो देशी गाय रखे। बुढ़ापा और रोग नजदीक घर के पास नहीं आते।

देसी भैंस के दूध, दही, घी सेवन करें परन्तु देशी गाय का दूध अमृत है, देशी गाय का बछड़ा अपने पुत्र के समान माना जाता है क्योंकि वही बैल खेत जोत कर घर, परिवार का पालन-पोषण करता है। (नोट-वर्तमान में खेत जोतने वाले को कई साधन है परन्तु वह सब युद्ध के पश्चात् सब समाप्त हो जायेंगे।

प्रश्न—“गुरुजी अपना पैसा अपने जेब से खर्च करना न पड़े धनी धर्मात्मा समझ कर घर, गावों, जिला राष्ट्र विश्व में प्रतिष्ठा हो और जनता, जनार्दन हमें भक्त ज्ञानी, परोपकारी कहे मरण के पश्चात् भी सब रोए ऐसा साधन क्या है?”

उत्तर—ऋग्वेद में वेद भगवान कहते हैं आपके पास जितने आम-दनी है, उस धन में से १० प्रतिशत रुपया प्रतिदिन, प्रति माह और प्रति वर्ष में जितना आपके पास धन आता है, उस धन में से दस

प्रतिशत प्रतिदिन बक्सा में रखें और बैंक में तथा डाकखाना में धर्म-खाता खोलकर चल खाता में रुपया जमा करते जाए धर्मात्मा खाता के रुपया को भववान का बैंक समझकर दूसरे का धरोघीवि मान करके उस रुपया से अपने परिवार और अपने शरीर के लिए सामान और रुपया खर्च न करें ।

वृद्ध, रोगी जिस जगह मिले रोगी सड़क में गलीमें, रास्तेमें, नदी के किनारे जहाँ जैसी अवस्था में रोगी, वृद्ध मिले उनको दवा भोजन जलपान का व्यवस्था करें । रोगी को अस्पताल में भर्ती कर दें, जो आवश्यक हो पूरा करने वाले को सभी याद करते हैं और प्रशंसा करते हैं और अन्तर्मात्मा से आशीर्वाद देते हैं ।

वह वृद्ध रोगी नर-नारियों को बचपन से आज तक सुख-दुःख का अनुभव है, वृद्धावस्था में सेवा करने वाले को अन्तर्मात्मा से तुम जन्म-जन्मान्तर तक निरोग रहे । धनी बनो सदा सुख-शान्ति और भक्ति प्राप्त हो । आशीर्वाद देते हैं उन वृद्ध रोगी को पाप, पुण्य लाभ हानि मान अपमान का ज्ञान रहता है, बिस्तरा में सोया हुआ मृत्यु सैया में पड़ा हुआ सेवा करने वाले को याद करता है । जीवन में जो पाप कर्म किया है उसका याद करते हैं ।

निष्काम सेवा करते देख कर सब आशीर्वाद देते हैं और कहते हैं धर्मात्मा हैं, दयालू है, परोपकारी है कहते हैं । अपने जेब से एक पैसा लगाना नहीं पड़ता जो दशवां भाग जो धर्मार्थ खाता में रखा है उसी में से निकाल कर वृद्ध रोगी की सेवा करने से पीछे के अपने इक्कीस कुल के और आने वाले सौ कुल के प्रति परोपकार करने वाले व्यक्तिके पितर तर जाते हैं, और आशीर्वाद देते हैं । आपके पास अन्न आदि जो पदार्थ है उसके दशवां भाग परोपकार में लगाना चाहिए ।

यदि आप को एकान्त में बैठकर जप, यज्ञ, पूजा पाठ करने वाले साधक मिले अथवा विरक्त, तपसी, साधु और माहात्मा, तथा संन्या-सियों जो आवश्यकता के अनुसार सहयोग करने वाले व्यक्ति को

साधु, संन्यासी जप करते हुए पूजा पाठ करते हुए, भजन और ध्यान करते हुए सेवा करने वाले को याद करते हैं वे व्यक्ति धर्म-अर्थ काम, मोक्ष चारों पदार्थ पाते हैं। निष्कामसेवा करते हुए देखकर रंक से धनी और राजा उस व्यक्ति को भगवान् बना देता है परोपकार में प्रसन्न होकर जो साधु, सन्त जिसका याद करें। वह तो जीवन मुक्त है।

उसी दान खाता से मन्दिर, धर्मशाला, यज्ञशाला, विवाह आदि यज्ञ, अनुष्ठान के लिए बना दे आप के संकल्प मात्र से सभी के सहयोग से वह मन्दिर का जीर्णोद्धार करके विशाल मन्दिर बन जाता है।

आपके मृत्यु होने के पश्चात् भी लोग आपको याद करेंगे। उसी रुपया से दीन दुःखी जिनके घर में भोजन के बिना लँगन चल रहा है उनको अन्न जल किसी की कन्या का विवाह न हो रहा हो उनको सहयोग करने से धर्मात्मा माने जायेंगे। सभी गाँव के लोग पुण्य आत्म और परोपकारी कहेंगे।

पुराणों और मनुस्मृती और धर्मशास्त्र इत्यादि स्मृतियों में कहा गया है कि प्रत्येक मनुष्यों को अपने आमदनी के २० प्रतिशत् प्राणि-मात्र के कल्याण के लिए सतकार्य में लगाना चाहिए।

ऋग्वेद में वेद भगवान् स्वयं कहते हैं प्रत्येक मनुष्यों को अनिवार्य रूप से प्रतिमाह के अपने-अपने आमदनी के ४ भाग करके एक भाग धर्मार्थ खाता में जमा करें। दूसरा भाग भविष्य में अपने खर्च के लिए गुप्त जमा करें। तीसरा और चौथा भाग गृह लक्ष्मी को दे उतने रुपया से गृहस्थ आश्रम की व्यवस्था करें। यह ऋग्वेद के आज्ञानुसार रखा गया है।

अथर्ववेद में वेद भगवान् स्वयं विष्णु भगवान् से बोले—जिस मनुष्यों के जितने आमदनी है उस लाभ में से आधे ५० प्रतिशत् रुपया परोपकार में लगाना चाहिए। यह प्रसंग अथर्व वेद के अनुमति से लिखा गया है।

जो व्यक्ति ब्रह्म मुहूर्त में उठते हैं, वह निरोग रहते हैं। मेरे गुरु जी के धर्मसंघ में दो सौ विद्यार्थी रहते थे। तीन बजे प्रातः घण्टी लगती थी छात्रों को स्नान करा करके लाइन से पढ़ने बैठाया जाता था। ध्वनि से सब विद्यार्थी पढ़ते थे, वही छात्र आज विश्व के विश्वविद्यालयों में ऊँचे पद पर आसीन हैं। जिनका ब्रह्म मुहूर्त में उठने के पश्चात् नदी, तीर्थ, गंगा स्नान मंदिरों के दर्शन का लक्ष्य रखकर भगवान का नाम लेते हुए स्तुति करते हुए पाठ करते हुए ३ किलोमीटर से ४ किलोमीटर तक प्रतिदिन चलने से मुखमण्डल में तेज कान्ति शरीर में स्वस्थता और निरोग हो जाता है। भगवान की भक्ति प्राप्त हो जाती है। मेरे गुरुवर प्रतिदिन तीन बजे मन्दिरों के दर्शन करने जाते थे। तेज चलते थे, प्रतिदिन ६ किलोमीटर जाते थे। डेढ़ घण्टे में कुटिया में आकर भजन करते थे।

जीवन पर्यन्त रोग और कमजोरी नहीं आया। यदि आप निरोग, तपसी, धनी एवं सुखी बनना चाहते हैं तो ब्रह्ममुहूर्त में उठिए, नेपाल, राजस्थान एवं बंगाल तथा मद्रास से काशीवास करने आये हुए बृद्ध नर-नारी को मैंने देखा प्रातः तीन बजे गंगा स्नान करके काशी के प्रसिद्ध तीर्थ सभी मन्दिरों का दर्शन करते थे। आज उनके पुत्र, पौत्र करोड़पति हो गए हैं और निरोग हैं। मारवाड़ी माताओं के पुत्र, पौत्र, परपौत्र हमारे साथ यात्रा करने वाले के करोड़पति हो गए हैं।

शरीर में कोई भी रोग आते ही वनस्पति जड़ीबूटी औषधि सेवन करें परहेज में रहे कोई भी वनस्पति शरीर को निरोग और पुष्ट बनाता है, मनुष्यमात्र एक बात का ध्यान रखे शत्रु और रोग को छोटा नहीं समझना चाहिए। रोग आते ही जड़ी बूटियों का सेवन करे और भोजन में परहेज करें। किसी से भी शत्रुता होते ही समझौता करना चाहिए।

प्रश्न—स्वामीजी वर्तमान में बृद्ध और रोगी को जलपान तथा भोजन, फल, दूध और दवा समय पर नहीं मिल रहा है।

उत्तर—माता पिता एवं रोगी और वृद्ध के कमरे में जलपान के भोजन का सभी सामग्री रख दें, रोगी अपने अनुकूल भोजन बनवाकर भोजन जलपान करेंगे, दवा, दूध, फल, जल वृद्ध रोगी के पास रख दें किसी भी प्रकार का रोगी और वृद्ध को कष्ट नहीं हो ऐसी भावना करें। जिन नर-नारियों ने तन, मन, धन से माता-पिता का सेवा किया है, उस मनुष्य को एक हजार जन्म तक भगवान् की भक्त होता है। निरोग शरीर और धनी होकर जन्म लेता है।

(नोट—माता-पिता का सबसे भारी कर्जा होता है जो पुत्र माता का सेवा नहीं करते हैं वे नरक में जाते हैं कर्जा और पाप रोगी एवं दरिद्र बनता है। सात जन्म तक महा दरिद्र के घर में जन्म लेते हैं कर्जा पाप से सदा डरना चाहिये)।

प्रश्न—मनुष्यों से पाप हो जाता है और कभी-कभी गाय के गले में रस्सी बंधी हुई मृत्यु हो जाती है और लाठी लेकर भगाने के लिए मारने पर भी तथा धक्का लगने से भी गो मर जाती है। उन गाय मारने का जो पाप है उस पाप का प्रायश्चित्त कैसे होगा।

उत्तर—मनुष्यों से इसी जन्म में जो भी पाप हो जाते हैं उन पापों के प्रायश्चित्त के लिए त्रिकालदर्शी ऋषि मुनियों ने जितने पाप मनुष्य इस जन्म में कर सकता है। उतने ही प्रायश्चित्त महायज्ञ मानव जाति के कल्याण के लिए और वेद पुराणों तथा धर्म शास्त्र में प्रायश्चित्त का विभिन्न प्रकार से वर्णन है। इन्द्र, सेखर प्रायश्चित्त इत्यादि सत् ग्रन्थों में विस्तार से वर्णन है। मनुष्यों के सभी पापों से मुक्त करने वाले महा काव्य “प्रायश्चित्त संहिता नाम के पुस्तक के ५० पृष्ठ में लिखा है। जैसे एक वर्ष का बालक की मृत्यु होने के पश्चात् कुल परम्परा के अनुसार जाति, धर्म और सम्प्रदाय के आज्ञा अनुसार जितने दिन अशौच माना जाता है, उतने ही दिन में शुद्धि करना चाहिए।

अन्य प्रायश्चित्त सत् पुस्तकों के आधार पर दूसरे दिन कपड़ा साफ करें गाय के गोबर से घर आंगना लीपे गोमूत्र घर में छिटा दें और

पान करें। तीसरे दिन प्रातः गोदान करके एक वर्तन में अन्न भरकर दान दे ब्राह्मण १ से यथा शक्ति भोजन कराने से गो हत्या की शुद्धि हो जाती है।

प्रश्न—वर्तमान में पाप कर्म सभी मनुष्य करते जा रहे हैं पापों से डर नहीं रहे हैं, इन पापों का प्रायश्चित्त क्या होगा ?

उत्तर—(१) पाप कर्म करने के पश्चात्ताप करें। (२) हे भगवान् मैंने आवेश में ऐसा कूकर्म किया अपने इष्टदेव से प्रार्थना करें, और क्षमा माँगे। (३) देशी गाय के गोमूत्र से स्नान करें। (४) गोमूत्र घर में छिड़के गाय के गोबर से घर को लीपे यदि पक्का हो तो पोछा लगायें गोदान, तुला दान शैया दान करें, ब्राह्मण को भोजन कराये। (५) उसी दिन से प्रतिदिन यथा शक्ति पूजा, पाठ और परोपकार तथा दान करे कीर्तन, यज्ञ, कथा, समेत पूजा-पाठ जप करने और कराने से पापों का प्रायश्चित्त हो जाता है। जिससे बाल हत्या, स्त्री हत्या, ब्राह्मण तथा मनुष्यों की हत्या हो जाते हैं उनको प्रायश्चित्त इन्द्र सेखर नाम के ग्रन्थ के माध्यम से और विद्वानों के आज्ञा और सहयोग से पापों का प्रायश्चित्त करना चाहिए। क्योंकि पापों का भोग कराने के लिए पाप कर्म के मालिक सत् कर्म करने नहीं देते पापियों का संग कराते हैं। कभी कचहरी, कभी जेल और कभी अस्पताल का दर्शन कराता है पापों का प्रायश्चित्त न करने पर कई जन्मों तक रोग और शत्रु बनकर कष्ट देते हैं। जो अति उग्र पाप है वे तो भोग कर छोड़ते हैं, नरक में जाना पड़ता है।

काशी से बाहर पाप कर्म करके जन्म, जन्मान्तर के पुण्य के प्रभाव से काशी आ गया, काशी के मोक्ष भूमि के सीमा में पहुँचते ही काशी विश्वनाथ जी के (गण) सिपाही उस जन्म जन्मान्तर के सुकृति वाले पापी को काशी में जाने देते हैं उसके पापों को काशी के सीमा के बाहर रोक देते हैं।

उन पापी के पाप काशी के सीमा से बाहर रहकर रोते रहते हैं वे कहते हैं पाप कर्म करके हम लोगों को जन्म दिया आज हम लोगों को

सत् कर्म करके मारने जा रहे हैं कहते हैं धर्मशास्त्र में आया है पाप कर्म करते ही उस पापी के पाप रूप पुत्र उत्पन्न होते हैं वे पाप करने वाले को सुख शान्ति से रहने नहीं देते बल्कि उसको पाप कर्म में ही लगाते हैं। काशी में गंगा किनारे और पिशाच मोचन में श्राद्ध करें वे पाप कर्म करने वाले के घर में सम्पत्ति होने पर भी सत्कर्म नहीं कर पाता (आज भी सुनमे में आया है जो व्यक्ति दूसरे के धन, सामान) मकान जमीन कब्जा करने वाले के पास अपार धन है पर वे दान, यज्ञ, दीन दुखियों का सेवा नहीं कर सकते हैं उसके पाप उसको शुभ कर्म करने नहीं देते पापी काशी में आते ही गंगा स्नान, मठ, मन्दिर सिद्ध, प्रसिद्ध साधु दर्शन करके यथा शक्ति दान कर कीर्तन, कथा श्रवण और काशी के पञ्चकोशी इत्यादि काशी की यात्रा करने से पाप क्षीण होते हैं।

जिनके दर्शन करने मात्र से मनुष्यों के स्थूल पाप नष्ट होते हैं, पुण्य का उदय होता है दर्शन करने वाले नर नारियों के जन्म-जन्मान्तरों के सुकृत (पुण्य) उत्पन्न होते हैं। तीर्थों एवं मन्दिरों मठ का दर्शन करते ही मन्दिरों मूर्तियों साधुओं और अपने इष्ट देव भगवान के प्रति स्नेह, प्रेम, निष्ठा तथा श्रद्धा भक्ति स्वतः हृदय में उत्पन्न हो जाते हैं। उस दिन से साधु मठ, मन्दिर तीर्थ तथा सत्संग कथा, यज्ञ सम्मेलन और कीर्तन में मन आकर्षित होकर धार्मिक कार्य में अपने अपने स्वधर्म का पालन करते हैं, धार्मिक कार्य में भाग लेते हैं बृद्ध और रोगियों दीन-दुःखियों का तन मन, धन से सेवा करते हैं और यथा शक्ति दान देते हैं ऐसे नर-नारियों को धर्म, अर्थ, काम मोक्ष यह चारों पार्थ न चाहने पर भी उन व्यक्तियों के घर में स्वतः आता है।

साधु महात्मा और सन्यासी यह सब विरक्त तपसी साधक और सिद्ध प्रसिद्ध होते हैं वे यह लोक में धन सुख, शान्ति प्राप्त करने का साधन बताते हैं, परलोक में जन्म मृत्यु रूप चक्कर से छूटने और भगवान से मिलने का रास्ता बताते हैं।

‘मसम्राट् अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मनिष्ठ स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती (श्री करपात्री) जी महाराज के ग्रन्थ

वेदार्थ पारिजात, रामायण मीमांसा, मार्क्सवाद और रामराज्य, विचार पीयूष भक्तिसुधा, भागवत सुधा, श्री राधा सुधा, वेद का स्वरूप और प्रामाण्य, गोपी गीत और भ्रमर गीत, अहमर्थ और परमार्थसार, संकीर्तन मीमांसा और वर्णाश्रम धर्म, संघर्ष और शान्ति, पूंजोवाद, समाजवाद और रामराज्य, क्या संभोग से समाधि, राहुलजी की भ्रान्ति, तिथ्यादि निर्णय कुम्भ 'नर्णयश्च, वेदान्त प्रश्नोत्तरी, प्रवचन पीयूष, सर्व सिद्धान्त समन्वय अभिनव-शंकर स्वामी करपात्री, मार्क्स और ईश्वर, रास और प्रयोजन, जाति राष्ट्र और संस्कृति, बदलती दुनियाँ, शंका समाधान, विदेश यात्रा और शास्त्रीय-पक्ष, श्री करपात्री संस्मरण, अभिनव करपात्री, करपात्री एक अध्ययन, श्री विद्या रत्नाकर, श्री विद्या वरिवास्य, भक्ति रसार्णव, वेदस्वरूप विमर्श. वेद प्रामाण्य मीमांसा, वेदान्त रस-सार और विभीषण शरणागति, रामायण महाभारत काल मीमांसा, गोता जयन्ती और भोष्मोत्क्रान्ति, राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ और हिन्दू धर्म “दशनामापराध” आदर्श विचार ।

१. सनातन संस्कृत विद्यालय एवं राजनीति में अधिकार
२. गोता के दुकुम नामा

पुस्तक प्राप्ति का स्थान :

स्वामी सदानन्द सरस्वती

करपात्रीधाम, केदारघाट, वाराणसी

॥ शिवजी की स्तुति ॥

सदाशिवं नमाम्यहं सदाशिवं भजाम्यहम् ।
 सदाशिवं जपाम्यहं सदाशिवार्चयाम्यहम् ॥
 सदाशिवं मृडहरं दधाम्यहं महर्निशम् ।
 सदाशिवं मुचिन्तनं सदाशिवम् सुवन्दनम् ॥
 सदाशिवं त्रिशूलिन् सदाशिवं भजाम्यहम् ।
 सदाशिवैव शान्तिं शान्तिं श्रेयदम् ॥
 सदाशिवं गणेशं सदाशिवं शिवतुल्यफलप्रदम् ।
 नमामि तं सदाशिवं सदाशिवम् ॥

शिव जी की स्तुति करने वाले भक्त शंकर प्रसन्न होते हैं,
 और शिव करने वाले को भक्तों को मोक्ष प्रदान करते हैं ।

॥ संकष्टनाशनस्तोत्रम् ॥

नारद उवाच । प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
 भक्त्या व्यासं स्मरेन्नित्यामायुःकामार्थसिद्धये ॥१॥ प्रथमं वक्रतुण्डं
 च एकदन्तं द्वितीयकम् । तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ॥२॥
 लंबोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च । सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्णं
 तथाष्टमम् ॥३॥ नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् । एकादशं
 गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ॥४॥ द्वादशानां नामानि त्रिसंध्यं यः
 पठन्नरः । न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो ॥५॥ विद्यार्थी
 लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् । पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी
 लभते गतिम् ॥६॥ जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मसिः फलं लभेत् ।
 संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्रशयः ॥७॥ अष्टम्यो ब्राह्मणेभ्यश्च
 लिखित्वा यः समर्पयेत् । तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः
 ॥८॥ इति श्रीनारदपुराणे कष्टनाशनं नाम गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(श्री गणेश जी की स्तुति करने वाले भक्त के विघ्न दूर हो जाते हैं,
 और किसी भी शुभ कार्य में घर से बाहर जाते समय स्तोत्र का पाठ
 करके हुये साथ में गणेश जी को चढ़ा हुआ दूध और खोवा के पेड़ा-
 लड्डू आदि लेकर पाठ करते हुए जाने से कार्य सिद्ध होता है ।)